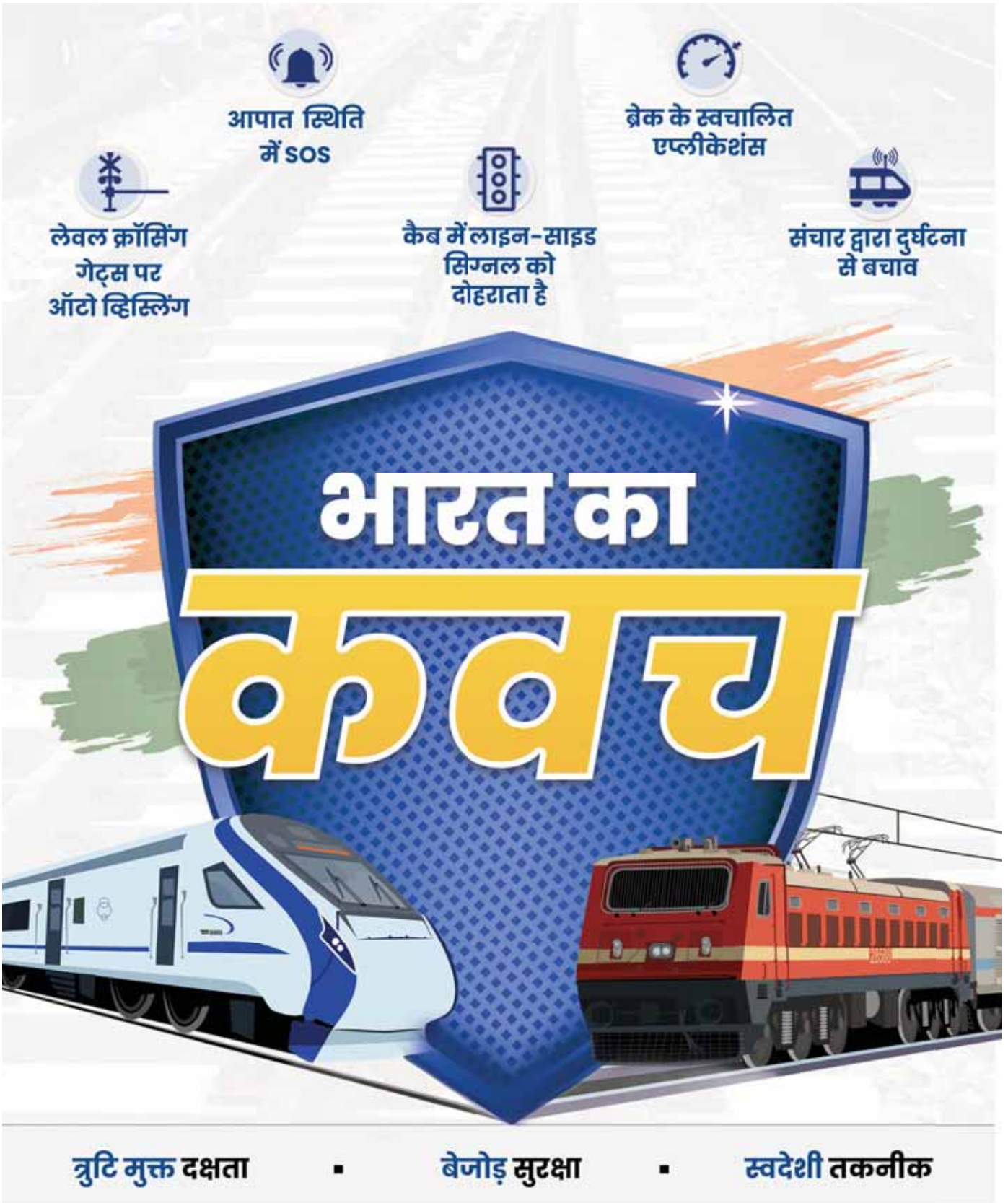
भारतीय रेल

अप्रैल 2022

मूल्य ₹20



प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुंच बनाएं

विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में)

नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी/आइजीएसटी प्राप्य होगी

विवरण	विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹)	सामान्य अंक (मासिक दरें)	
		सामान्य दरें (₹)	अनुबंधित दरें (₹)
बैक कवर	13,300	11,400	10,450
सेकेण्ड कवर	12,350	10,450	9,500
थर्ड कवर	11,400	9,500	8,550
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट के बाद में)	9,500	8,550	7,600
पूरा पृष्ठ	8,550	7,600	6,650
आधा पृष्ठ	6,650	5,130	4,180
सेंटर स्प्रेड	17,000	15,000	13,300
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे) (स्पेशल पोजीशन)	18,500	16,500	14,700

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार

28 X 20.5 सेमी

छपाई क्षेत्र

23 X 16.5 सेमी

भुगतान का माध्यम

'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली' के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001 में जमा की जा सकती है

विज्ञापन सामग्री

ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

पत्रिका का प्रसार

समग्र देश में

संपर्क करें :

प्रशांत कुमार पट्टनायक, व्यापार प्रबंधक

310, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,

टेलिफोन : 9717647367, 011-233822531, 23303665, 23304456

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

आरंभ : 1960 | वर्ष : 62 | अंक : 9 | राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित पत्रिका | अप्रैल 2022 | मूल्य : ₹20

संपादक मंडल

श्री विनय कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

श्री नरेश सालेचा
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

श्री आर.एन. सिंह
सचिव, रेलवे बोर्ड

श्री गौरव कृष्ण बंसल
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक
योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय
संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
टेलीफोन: 011-47845378, 47845089
bmpr310rb@gmail.com

संपादन सहयोग
रणमत सिंह

आवरण
कवच प्रणाली का इलस्ट्रेशन

फॉलो करें
Twitter : @bhartiyarailrb
Instagram : bhartiyarailpatrika

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

वार्षिक सदस्यता शुल्क
(ऑफलाइन)
सर्वसाधारण - ₹250
रेलकर्मियों के लिए - ₹200
विदेश में
सी-मेल द्वारा - ₹1,250
एयर-मेल द्वारा - ₹2,500
एक प्रति - ₹20
वार्षिक विशेषांक - ₹70

© भारतीय रेल

6 रेल मंत्री की उपस्थिति में
'कवच' कार्य प्रणाली का सफल परीक्षण

7 सिलचर-जिरिबाम पैसेंजर ट्रेन की वांगईचुंगपाऊ तक विस्तारित सेवा पुनर्बहाल
मणिपुर के मुख्यमंत्री और रेल मंत्री ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

9 रेल राज्यमंत्री द्वारा
मनमाड से मुदखेड़ तक विद्युतीकरण कार्यों का उद्घाटन

11 गुवाहाटी एवं नाहरलगून स्टेशनों पर खोले गए
हथकरघा एवं वस्त्र केंद्र

12 रेल राज्यमंत्री ने रेलवे के
बुनियादी ढांचे से संबंधित परियोजनाओं की समीक्षा की

13 रेल राज्यमंत्री ने दक्षिण रेलवे के अधिकारियों के साथ
उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की

14 सांसद द्वारा रायपुर मंडल के भाटापारा में
नवनिर्मित रोड अंडर ब्रिज का लोकार्पण

15 अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड
ने किया प्रयागराज का दौरा

16 संरक्षित रेल परिवहन, सत्यनिष्ठा से कार्य निष्पादन
भारतीय रेल की प्राथमिकता -अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड

17 सदस्य, रेलवे बोर्ड का दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का दौरा

17 सदस्य, रेलवे बोर्ड का रेल पहिया कारखाना का दौरा

18 सदस्य, रेलवे बोर्ड ने पूर्व रेलवे में खेल सुविधाओं का निरीक्षण किया

18 भारतीय रेल का पहला गतिशक्ति कार्गो टर्मिनल
पूर्वी रेलवे के आसनसोल मंडल में शुरू किया गया

19 संसद में भारतीय रेल

29 कवच, भारत की तकनीकी शक्ति का एक प्रमाण
गौरव कृष्ण बंसल

32 वित्त वर्ष 2021-22 की कुछ उपलब्धियां

35 रेलों के अंचल से

48 भारतीय रेल में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

52 खेल जगत्

54 माल ढुलाई कारोबार में डिजिटल पहल
श्री अतुल कुमार

58 इलेक्ट्रिक वाहन - भविष्य का वाहन
श्री जी.वी. वेंकटेशन

61 रेशम की डोर
श्री सुश्री उर्मिला शुक्ल

64 बृज रस से विभोर कर देने वाले रसिका पागल
श्री सुरेन्द्र अग्निहोत्री

69 फिल्म 'इत्तेफ़ाक़' के बनने का इत्तेफ़ाक़
श्री रूप कृष्ण आहूजा

सम्पादकीय



विज़न, विश्वास, काबिलियत तथा तकनीक से बना है स्वदेशी **कवच**

एक पल के लिए कल्पना करें कि दो रेल इंजन स्पीड से एक ही ट्रैक पर आमने-सामने आ रहे हों, उन्हें रोकने के लिए नई प्रणाली का परीक्षण किया जा रहा हो, दो इंजनों में से एक पर आपको बैठने के लिए कहा जाए तो शायद आप हिम्मत नहीं जुटा पाएंगे। लेकिन हमारे रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव हाल ही में 'कवच' के परीक्षण के समय ऐसे ही एक इंजन में स्वयं सवार थे। यह पूछने पर कि इतने जोखिम वाले परीक्षण के लिए वह इंजन में खुद सवार होने की हिम्मत कैसे जुटा पाए, रेल मंत्री ने कहा कि उन्हें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विज़न और अपने इंजीनियरों की काबिलियत पर पूरा भरोसा है। रेलमंत्री के इस विश्वास ने रेलकर्मियों के उत्साह को बढ़ाया है।

'कवच' अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन द्वारा भारतीय उद्योग के सहयोग से विकसित एक स्वदेशी एटीपी प्रणाली है, जिसे ट्रेनों के संचालन में सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया है। 'कवच' का परीक्षण 4 मार्च, 2022 को दक्षिण मध्य रेल के सिकंदराबाद मंडल में लिंगमपल्ली-विकाराबाद खंड पर गुल्लागुड़ा-चिटगिड्डा रेलवे स्टेशनों के बीच किया गया। रेल मंत्री स्वयं गुल्लागुडा से चिटगिड्डा की ओर जा रहे इंजन पर सवार थे, जबकि चिटगिड्डा से गुल्लागुडा जा रहे इंजन पर रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री वी. के. त्रिपाठी सवार थे। कुछ ही मिनटों में ये दोनों इंजन आमने-सामने आ गए और टक्कर जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के 'कवच' प्रणाली ने स्वचालित ब्रेकिंग सिस्टम का इस्तेमाल शुरू किया और इंजनों को 380 मीटर की दूरी पर रोक दिया। इंजन में मौजूद रेलमंत्री ने उपस्थित कर्मचारियों की पीठ थपथपाकर उनका उत्साह बढ़ाया।

'कवच' प्रणाली का मुख्यत: कार्य ट्रेनों को खतरे के यानि रेड सिग्नल पार करने और आमने-सामने की टक्कर से सुरक्षा प्रदान करने के लिए है। माना जा रहा है कि 'कवच' दस हजार वर्षों में एक त्रुटि की संभावना के साथ सबसे सस्ती, सम्पूर्ण सुरक्षा स्तर-4 (एसआईएल-4) प्रमाणित प्रौद्योगिकियों में से एक है।

आपकी अपनी भारतीय रेल विगत 169 वर्षों से राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने यात्रियों को विश्वस्तरीय सेवा प्रदान करने के लिए प्रयासरत् है। स्वच्छता, स्टेशन सौंदर्यीकरण, सुरक्षा तथा संरक्षा जैसे मुद्दों पर हुए कार्यों के परिणाम आपके सामने हैं। 'कवच' भी उसी का एक हिस्सा है।

भारतीय रेल में महिला रेलकर्मियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अब रेल के लगभग सभी कार्यों में महिला रेलकर्मी पूरी निष्ठा से अपनी जिम्मेदारियों को संभाल रही हैं। 'विश्व महिला दिवस' के अवसर पर भारतीय रेल ने अपनी महिला रेलकर्मियों तथा महिला रेलयात्रियों के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया था, जो महिलाओं के लिए काफी उत्साहवर्धक रहा।

हाल ही में युक्रेन में फंसे हजारों भारतीय नागरिकों, जिसमें अधिकांश विद्यार्थी शामिल थे, को 'ऑपरेशन गंगा' द्वारा स्वदेश वापस लाया गया। भारत आते ही इन नागरिकों का अन्य केन्द्रीय मंत्रियों के साथ-साथ रेलमंत्री तथा रेल राज्यमंत्री द्वारा स्वागत किया गया। साथ ही, रेलवे ने वापस आ रहे लोगों को ट्रेन की आरक्षित टिकट उपलब्ध करवाने के लिए एयरपोर्ट पर ही टिकट काउंटर स्थापित किए थे।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ। आपके सुझाव ही हमारे मार्गदर्शक हैं।



रेल मंत्री की उपस्थिति में 'कवच' कार्य प्रणाली का सफल परीक्षण



कवच प्रणाली के सफल परीक्षण के समय रेल इंजन में मौजूद रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

केन्द्रीय रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दक्षिण मध्य रेलवे के सिकंदराबाद मंडल में लिंगमपल्ली-विकाराबाद खंड पर गुल्लागुडा-चिटगिड्डा रेलवे स्टेशनों के बीच 'कवच' कार्य प्रणाली के परीक्षण का निरीक्षण किया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री विनोद कुमार त्रिपाठी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। रेल मंत्री की उपस्थिति में, 'कवच' का व्यापक परीक्षण किया गया। मंत्री उस स्वचालित इंजन पर सवार थे जो गुल्लागुडा से चिटगिड्डा की ओर गया। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री वी.के. त्रिपाठी उस स्वचालित इंजन पर सवार थे जो चिटगिड्डा से गुल्लागुडा जा रहा था। परीक्षण के दौरान दोनों इंजन आमने-सामने आ गए और टक्कर की स्थिति उत्पन्न की गई। 'कवच' प्रणाली ने स्वचालित ब्रेकिंग सिस्टम का इस्तेमाल शुरू किया और दोनों इंजनों को 380 मीटर की दूरी पर रोक दिया। साथ ही, लाल सिग्नल को पार करने का परीक्षण किया गया; हालाँकि इंजन ने लाल सिग्नल को पार नहीं किया क्योंकि 'कवच' के लिए स्वचालित तरीके से ब्रेक लगाना आवश्यक हो गया था। गेट सिग्नल के पास आने पर स्वचालित सीटी की आवाज तेज और स्पष्ट थी। चालक दल ने परीक्षण के दौरान ध्वनि और ब्रेकिंग सिस्टम को नहीं छुआ था। जब इंजन को लूप लाइन पर चलाया गया था तब 30 किमी प्रति घंटे की गति सीमा का परीक्षण किया गया। 'कवच' ने इंजन की 60 किमी प्रति घंटे की गति को स्वचालित रूप से 30 किमी प्रति घंटे तक कम कर लूप लाइन में प्रवेश किया।

'कवच' की विशेषताएं

- खतरे में सिग्नल पार करने से रोकना (एसपीएडी)
- ड्राइवर मशीन इंटरफेस (डीएमआई) / लोको पायलट ऑपरेशन कम इंडिकेशन पैनल (एलपीओसीआईपी) में सिग्नल की स्थिति दिखाने के साथ ट्रेन की आवाजाही का निरंतर अपडेट
- ओवर स्पीडिंग की रोकथाम के लिए स्वचालित ब्रेक लगाना
- समपार फाटकों के पास पहुंचते समय ऑटो सीटी का बजना
- काम कर रही 'कवच' प्रणाली से लैस दो इंजनों के बीच टकराव की रोकथाम
- आपातकालीन स्थितियों के दौरान एसओएस संदेश
- नेटवर्क मॉनिटर सिस्टम के माध्यम से ट्रेन की आवाजाही की केंद्रीकृत लाइव निगरानी

कवच

'कवच' भारतीय उद्योग के सहयोग से अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन (आरडीएसओ) द्वारा एक स्वदेशी रूप से विकसित एटीपी प्रणाली है और भारतीय रेल में ट्रेन संचालन में सुरक्षा के लिए

भारतीय रेल पर 'कवच' तैनाती की रणनीति

रेलवे यातायात का 96 प्रतिशत भारतीय रेल के उच्च घनत्व नेटवर्क और अत्यधिक प्रयुक्त नेटवर्क मार्गों पर होता है। इसे सुरक्षित रूप से ले जाने के लिए, रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित प्राथमिकता के अनुसार कवच कार्यों को एक केन्द्रित तरीके से किया जा रहा है।

- **पहली प्राथमिकता :** ऑटोमैटिक ब्लॉक सिग्नलिंग और सेंट्रलाइज्ड ट्रैफिक कंट्रोल के साथ भीड़-भाड़ वाले मार्गों और नई दिल्ली-मुंबई और नई दिल्ली-हावड़ा सेक्शन पर 160 किमी प्रति घंटे की रफ्तार। चूंकि जैसे-जैसे ट्रेनें एक-दूसरे के करीब आती हैं, ऐसे सेक्शन में ड्राइवरों की ओर से मानवीय त्रुटियों की संभावना अधिक होती है, जिसके परिणामस्वरूप दुर्घटनाएं होती हैं।
- **दूसरी प्राथमिकता :** स्वचालित ब्लॉक सिग्नलिंग और केंद्रीकृत यातायात नियंत्रण के साथ अत्यधिक प्रयुक्त नेटवर्क पर।
- **तीसरी प्राथमिकता :** स्वचालित ब्लॉक सिग्नलिंग के साथ भीड़-भाड़ वाले अन्य मार्गों पर।
- **चौथी प्राथमिकता :** अन्य सभी मार्ग।

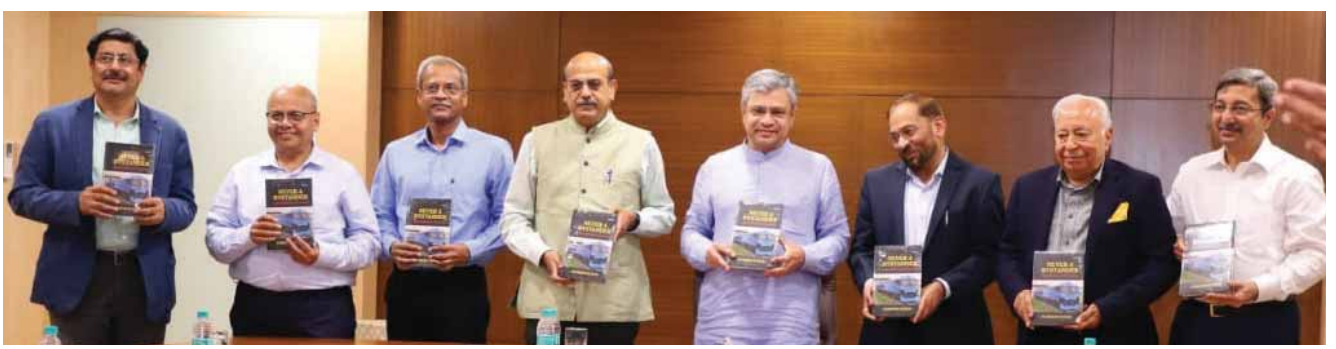
'आत्मनिर्भर भारत' के एक हिस्से के रूप में, 2022-23 में सुरक्षा और क्षमता वृद्धि के लिए 2,000 किलोमीटर नेटवर्क को 'कवच' के तहत लाया जाएगा। लगभग 34,000 किलोमीटर नेटवर्क को 'कवच' के तहत लाया जाएगा।

दक्षिण मध्य रेलवे ने इसका परीक्षण किया है। यह सम्पूर्ण सुरक्षा स्तर-4 मानकों की एक आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली है।

'कवच' ट्रेनों को खतरे (लाल) पर सिग्नल पार करने और टक्कर रोकने के लिए है। यदि चालक गति सीमा के अनुसार ट्रेन को नियंत्रित करने में विफल रहता है तो यह ट्रेन ब्रेकिंग सिस्टम को स्वचालित रूप से सक्रिय करता है। इसके अलावा, यह ऐसे दो इंजनों के बीच टक्कर को रोकता है जिनमें 'कवच' प्रणाली काम कर रही है। 'कवच' 10,000 वर्षों में त्रुटि की संभावना के साथ सबसे सस्ती, सम्पूर्ण सुरक्षा स्तर 4 (एसआईएल-4) प्रमाणित प्रौद्योगिकियों में से एक है। साथ ही, यह रेलवे के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकी के निर्यात के रास्ते खोलती है।

***'कवच प्रणाली'* पर आधारित आवरण कथा पढ़ें - पृष्ठ 29**

रेल मंत्री ने किया नेवर ए बाइस्टैण्डर : इंडियन रेलवेज़ इन ट्रांज़िशन पुस्तक का विमोचन



'नेवर ए बाइस्टैण्डर: इंडियन रेलवेज़ इन ट्रांज़िशन' पुस्तक का विमोचन करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री विनय कुमार त्रिपाठी, अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण एवं पुस्तक के लेखक श्री सुधीर कुमार

केन्द्रीय रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने पूर्व अतिरिक्त सदस्य ट्रांसफॉर्मेशन, नियोजन एवं रेल विद्युतीकरण श्री सुधीर कुमार द्वारा लिखित 'नेवर ए बाइस्टैण्डर: इंडियन रेलवेज़ इन ट्रांज़िशन' पुस्तक का विमोचन किया।

यह पुस्तक परिवर्तन और रूपांतरण, जोकि पाठकों को भारतीय रेल की अविश्वसनीय दुनिया के बारे में एक आंतरिक दृष्टिकोण प्रदान करती है, की वास्तविक कहानियों का संग्रह है। सरकारी संगठन में सफल परिवर्तन लाना कठिन है। इसे सफल कैसे किया जाए, वह इस पुस्तक को पढ़कर समझा जा सकता है।

अटल सत्यनिष्ठा, सेवा अभिविन्यास, सीखने की चपलता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का सहज उपयोग लेखक के रूपांतरणकारी एजेंडे के स्तंभ रहे हैं। उन्होंने लगातार गलत धारणाओं को चुनौती दी है। वह प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से क्षेत्र के लोगों के साथ जुड़े रहे हैं और एक सफल बदलाव के लिए स्वयं को समर्पित किया है। यह पुस्तक इन प्रयासों को कथात्मक प्रारूप में प्रस्तुत करती है।

सिलचर-जिरिबाम पैसेंजर ट्रेन की वांगईचुंगपाऊ तक विस्तारित सेवा पुनर्बहाल

मणिपुर के मुख्यमंत्री और रेल मंत्री ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना



पैसेंजर ट्रेन की विस्तारित पुनर्बहाल सेवाओं को वीडियो लिंक के माध्यम से हरी झंडी दिखाते हुए मणिपुर के मुख्यमंत्री श्री नोंगथोम्बम बीरेन सिंह और रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

मणिपुर के लोगों को बेहतर रेल सम्पर्क प्रदान करने के लिए 5 जनवरी, 2022 को मणिपुर के मुख्यमंत्री श्री नोंगथोम्बम बीरेन सिंह और केंद्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा मणिपुर के वांगईचुंगपाऊ तक विस्तारित सिलचर-जिरिबाम पैसेंजर ट्रेन की पुनर्बहाल सेवाओं को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन इम्फाल से वीडियो लिंक के माध्यम से रिमोट द्वारा सम्पन्न किया गया।

इससे पहले उसी दिन रेल मंत्री श्री वैष्णव ने मणिपुर के मुख्यमंत्री श्री नोंगथोम्बम बीरेन सिंह के साथ रेल द्वारा राज्य की राजधानी इम्फाल को भारत के अन्य हिस्से के साथ जोड़ने वाली निर्माणाधीन रेलवे की नई लाइन परियोजना का हवाई निरीक्षण किया। जनवरी, 2022 तक काईमाई रोड रेलवे स्टेशन तक तथा मार्च, 2022 तक वांगईचुंगपाऊ-खोंगसांग अनुभाग में मालगाड़ी चलाए जाने हेतु इंजन चलाने का लक्ष्य है।

वांगईचुंगपाऊ तक पैसेंजर ट्रेन सेवा के विस्तारित सेवा से मणिपुर के लोगों की बहुप्रतीक्षित मांग पूरी होगी। 06 जनवरी, 2022 से इस ट्रेन सेवा के फेरों को भी द्वि-साप्ताहिक से बढ़ा कर प्रतिदिन कर दिया गया है। सिलचर (निकटवर्ती बड़ा शहर) से बेहतर सम्पर्क होने के कारण उन्नत चिकित्सा, शैक्षणिक सुविधाओं के साथ-साथ हवाई सम्पर्क उनकी जरूरतों को पूरा करने में मददगार साबित होगा। इस पहाड़ी राज्य के लोग देश के सभी प्रमुख शहरों के लिए ट्रेन से सीधी यात्रा कर सकेंगे। मणिपुर के लोगों के लिए यात्रा की अवधि में 10-12 घंटे की कमी हो जाएगी। इस सेवा से मणिपुर के लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में विकास होने की उम्मीद है।

4 जनवरी, 2022 को रेल मंत्री ने गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर जारी पुनर्विकास कार्यों का सर्वेक्षण तथा यात्री सुविधाओं का निरीक्षण किया। संवाददाताओं से बातचीत करते हुए रेल मंत्री ने जानकारी दी कि सम्पूर्ण पूर्वोत्तर को जोड़ने संबंधी प्रधानमंत्री के विजन को पूरा करने के लिए भारतीय रेल दिन-रात कार्य कर रही है। गुवाहाटी तक रेलवे ट्रैक का विद्युतीकरण कार्य सम्पन्न हो चुका है तथा विद्युतीकरण के लिए आगे का कार्य भी प्रगति पर है। मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मिजोरम जैसे पूर्वोत्तर के राज्यों में और अधिक पैसेंजर, इंटरसिटी तथा जनशताब्दी जैसी ट्रेनें चलाने के लिए विस्तारित अध्ययन किया जा रहा है। पूर्वोत्तर की सुंदरता को उजागर करने के लिए वैकल्पिक मार्गों के जरिए रणनीतिक लाइनों की स्थापना के लिए अध्ययन किया जा रहा है। इस वर्ष पूर्वोत्तर में निर्माणाधीन रेल परियोजना के लिए 7 हजार करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है, इसलिए कोष की कोई कमी नहीं होगी। प्रधानमंत्री के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' की अवधारण को ध्यान में रखते हुए संबंधित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए रेलवे कार्य कर रही है। मंत्री ने कहा कि यह राज्य सरकारों के साथ सभी भागीदारों का एक संयुक्त प्रयास है।

इम्फाल-मोरेह नई रेल लाइन परियोजना का फाइनल लोकेशन सर्वे स्वीकृत

रेल मंत्रालय ने भारत और म्यांमार को जोड़ने वाली एक नई ब्रॉडगेज लाइन के निर्माण के लिए लगभग 111 किमी के इम्फाल–मोरेह खंड के फाइनल लोकेशन सर्वे के लिए मंजूरी दे दी है। केंद्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 5 जनवरी, 2022 को अपने इम्फाल दौरे पर रेल परियोजनाओं का हवाई निरीक्षण किया और मोरेह तक नई लाइन के लिए सर्वेक्षण के निर्देश दिए।

परियोजना संपूर्ण हो जाने पर यह नई रेल लाइन रणनीतिक महत्त्व की होगी और प्रस्तावित ट्रांस–एशियन रेलवे का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनेगी, जो रेल नेटवर्क पर भारत को दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ेगी।



नई रेल लाइन परियोजना का संयुक्त हवाई निरीक्षण करते हुए मणिपुर के मुख्यमंत्री के साथ रेल मंत्री

रेल पर्यटन व साहित्य को साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा विगत 60 सालों से भी अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं



भारतीय रेल
(हिन्दी)

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

विज़िट करें

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home



Indian Railways
(English)

शर्तें एवं दरें लागू

रेल राज्यमंत्री द्वारा
मनमाड से मुदखेड़ तक विद्युतीकरण कार्यों का उद्घाटन



जालना रेलवे स्टेशन पर माननीय अतिथियों के साथ रेल राज्यमंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे



मास्ट इरेक्शन ट्रेन को हरी झंडी दिखाते हुए रेल राज्यमंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे

केंद्रीय रेल, कोयला और खान राज्यमंत्री श्री रावसाहेब पाटिल दानवे ने 12 मार्च, 2022 को डॉ. भागवत कराड, केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री और अन्य जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जालना रेलवे स्टेशन पर आयोजित एक समारोह में मनमाड से मुदखेड़ तक रेलवे विद्युतीकरण कार्यों का उद्घाटन किया और ट्रैक्शन सब-स्टेशन की आधारशिला रखी। इस अवसर पर श्री ए.के जैन, अपर महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, श्री उपिंदर सिंह, मंडल रेल प्रबंधक, नांदेड़ और अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

श्री दानवे ने कहा कि भारतीय रेल मौजूदा ब्रॉड गेज मार्गों के साथ अपनी सभी रेलवे लाइनों को विद्युतीकृत करने के लिए मिशन मोड पर है। एस.सी.आर पर मनमाड-मुदखेड़ खंड मराठवाड़ा क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण रेल लिंक है। 484 करोड़ रुपये की लागत से शुरू की गई 357 किमी लंबी यह परियोजना बुनियादी ढांचे की सुविधाओं को और बढ़ाने के साथ ही सभी दिशाओं से क्षेत्र को निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करने पर जोर देगी। उन्होंने आगे कहा कि, रेलवे लाइनों के विद्युतीकरण से कार्बन उत्सर्जन और ईंधन की लागत में कमी आएगी और पर्यावरण की रक्षा होगी। इसके अलावा उन्होंने बताया कि समर्पित फ्रेट कॉरिडोर को पूरा करने और भारतीय रेल नेटवर्क में रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। महाराष्ट्र में रेल अवसंरचना कार्यों हेतु बजट आवंटन 1,100 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 11,000 करोड़ रुपये कर दिया गया है। मनमाड से परभणी तक दोहरीकरण कार्य चरणबद्ध तरीके से किया जाएगा। रेल राज्यमंत्री ने यह भी कहा कि, मुंबई-नागपुर, मुंबई-पुणे-हैदराबाद सेक्शनों में हाई-स्पीड ट्रेनों की शुरुआत के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य तेजी से प्रगति पर है। इसके अलावा, 400 वंदे भारत रेलगाड़ियां चरणबद्ध तरीके से शुरू की जाएंगी और महाराष्ट्र क्षेत्र को भी बड़ी संख्या में वंदे भारत रेलगाड़ियां मिलेंगी।

इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. कराड ने कहा कि, मनमाड से मुदखेड़ तक विद्युतीकरण का उद्घाटन मराठवाड़ा क्षेत्र में

परियोजना के लाभ

- यह निर्बाध रेल कनेक्टिविटी को सक्षम बनाती है।
- कर्षण के बदलाव से बचाती है, जिससे रास्ते में अवरोध कम हो जाता है।
- यह परियोजना पर्यावरण के अनुकूल है क्योंकि यह कार्बन उत्सर्जन को कम करती है।
- ईंधन लागत में कमी और इसलिए लागत प्रभावी परियोजना।
- डिटेंशन में कमी के कारण ट्रेनों की औसत गति में सुधार होता है, जिससे समयपालन में सुधार होता है।
- यह अधिक संख्या में ट्रेनों की शुरुआत का मार्ग प्रशस्त करती है।
- यह परियोजना संचालन क्षमता को बढ़ाती है।

विद्युतीकरण परियोजना

परियोजना पर लागत आई



484 करोड़ रु.

लंबाई



357 किमी

रेल बुनियादी ढांचे के विकास में एक ऐतिहासिक क्षण है। किसी भी राष्ट्र के विकास को रोडवेज और रेलवे में बुनियादी ढांचे के विकास के संदर्भ में मापा जाता है। इस दिशा में प्रधानमंत्री के 'गति शक्ति' विजन के अनुसार, राष्ट्रीय राजमार्गों और रेल अवसंरचनाओं के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। तद्नुसार, भारतीय रेल अवसंरचना, विद्युतीकरण कार्यों, कनेक्टिविटी और यात्रियों के लिए बेहतर सुविधाओं के मामले में प्रगति कर रही है।

मनमाड-मुदखेड़ विद्युतीकरण परियोजना लाइन की प्रमुख विशेषताएं

- इस खंड के लिए मनमाड-मुदखेड़-धोने खंड के एक हिस्से के रूप में वर्ष 2017-18 में 746 किमी की लंबाई के लिए विद्युतीकरण की अनुमानित लागत 864 करोड़ रु. आंकी गई।
- पूरी दूरी में से मनमाड-मुदखेड़ के बीच का खंड मोटे तौर पर मराठवाड़ा क्षेत्र में पड़ता है, जो दक्षिण मध्य रेलवे द्वारा संचालित महाराष्ट्र राज्य का हिस्सा है।
- मनमाड-मुदखेड़ विद्युतीकरण की लागत लगभग 484 करोड़ रुपये है और यह खंड 357 किलोमीटर लंबा है।
- इस विद्युतीकरण परियोजना के एक हिस्से के रूप में इस रेल नेटवर्क के विभिन्न स्टेशनों पर 6 ओएचई डिपो और टॉवर कार शेड के साथ 6 ट्रैक्शन सब-स्टेशनों का निर्माण किया जाएगा। इसके अलावा, इन स्थानों पर कर्मचारियों के लिए ओवर हेड उपकरण (ओएचई) के उचित रखरखाव को सुनिश्चित करने के लिए रेलवे क्वार्टरों का निर्माण किया जा रहा है। यहां 24 सेक्शनिंग और सब-सेक्शनिंग पैरेललिंग पोस्ट बनाने की भी योजना है।

विस्टाडोम कोच वाली दो ट्रेनों को दो मुख्यमंत्रियों और रेल राज्यमंत्री ने दिखाई हरी झंडी





गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर गुवाहाटी-नाहरलगुन के बीच विस्टाडोम ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखाते हुए असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा एवं विश्व शर्मा, केंद्रीय रेल राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश (बाएं) एवं नाहरलगुन रेलवे स्टेशन पर अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू (दाएं)

रेल संपर्क के माध्यम से पूर्वोत्तर क्षेत्र में व्यापार और पर्यटन में बदलाव और पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए दो और विस्टाडोम ट्रेन सेवाओं को 19 दिसंबर, 2021 को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। गुवाहाटी-नाहरलगुन और नाहरलगुन-तिनसुकिया के बीच विस्टाडोम ट्रेन सेवाओं को गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा, अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू ने नाहरलगुन स्टेशन पर और श्रीमती दर्शना जरदोश, केंद्रीय रेल और कपड़ा राज्य मंत्री ने गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर हरी झंडी दिखाई। दोनों स्थानों को वीडियो



लिंक के माध्यम से जोड़ा गया था। गुवाहाटी में श्री चंद्र मोहन पटवारी, परिवहन, उद्योग और वाणिज्य मंत्री, असम सरकार; श्री बिमल बोरा, खेल और युवा कल्याण मंत्री, सांस्कृतिक मामले, बिजली और पर्यटन, असम सरकार; श्रीमती क्वीन ओजा, सांसद (लोकसभा) और श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक, पू.सी. रेल उपस्थित थे। नाहरलगुन स्टेशन पर सांसद (राज्य सभा) श्री नबम रेबिया एवं विधायक श्री टेसी कासो भी उपस्थित थे। इसके अलावा, पर्यटकों की मांग को पूरा करने के लिए गुवाहाटी और न्यू हाफलांग के बीच मौजूदा विस्टाडोम सेवा को बदरपुर तक विस्तारित किया गया है। ट्रेन संख्या 15888/15887 गुवाहाटी-न्यू हाफलांग-गुवाहाटी की मौजूदा सेवाओं को 22 दिसम्बर, 2021 से बदरपुर तक बढ़ाया गया है।

गुवाहाटी एवं नाहरलगून स्टेशनों पर खोले गए हथकरघा एवं वस्त्र केंद्र



गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर हथकरघा एवं वस्त्र केंद्र का उद्घाटन करते हुए असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा तथा रेल राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश



नाहरलगून रेलवे स्टेशन पर हथकरघा एवं वस्त्र केंद्र का उद्घाटन करते हुए अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू (दाएं)

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा तथा केंद्रीय रेल एवं वस्त्र राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने 19 दिसम्बर, 2021 को गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर हथकरघा एवं वस्त्र केंद्र (असम सरकार के हथकरघा एवं वस्त्र विभाग का एक आउटलेट) का उद्घाटन किया। उसी दिन अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू ने भी नाहरलगून रेलवे स्टेशन पर एक हथकरघा एवं वस्त्र केंद्र का उद्घाटन किया।



पू. सी. रेल मुख्यालय, मालीगाँव में एनसीडीएसी का उद्घाटन करती हुईं रेल राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश। साथ में, सांसद श्रीमती क्वीन ओजा

पू.सी. रेल मुख्यालय, मालीगाँव में रेल एवं वस्त्र राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश के साथ सांसद (लोकसभा) श्रीमती क्वीन ओजा ने नेटवर्क नियंत्रण एवं तथ्य विश्लेषण केंद्र (एनसीडीएसी) का उद्घाटन किया। इस मौके पर पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता भी उपस्थित थे। सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित क्षेत्र में विकसित तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए पू.सी. रेल मुख्यालय, मालीगाँव में एनसीडीएसी विकसित किया गया है। रेलवे के सभी विभागों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी संबंधित समाधान के लिए कॉमन हब के रूप में एनसीडीएसी विकसित की जाएगी। रेल संबंधी तथ्य विश्लेषण में आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, नेटवर्किंग इत्यादि के प्रयोग के लिए उपाय किए जा रहे हैं।

रेल राज्यमंत्री ने आईसीएफ का दौरा किया

केंद्रीय रेल राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने 02 मार्च, 2022 को सवारी डिब्बा कारखाना, चेन्नै का दौरा किया। सवारी डिब्बा कारखाना के महाप्रबंधक श्री अतुल कुमार अग्रवाल ने उनका हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर श्रीमती जरदोश ने श्रीलंका रेलवे को निर्यात करने हेतु मेनलाइन कोचों की 15वीं रेक को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।



श्रीलंका रेलवे को निर्यात करने हेतु मेनलाइन कोचों की 15वीं रेक को झंडी दिखाकर रवाना करती हुईं केंद्रीय रेल राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश

रेल राज्यमंत्री ने वंदे भारत एक्सप्रेस कोचों के उत्पादन से जुड़े सवारी डिब्बा कारखाने के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा अन्य कामगारों से बातचीत की। इससे पहले श्रीमती जरदोश ने सडिका के फर्निशिंग मंडल में वंदे भारत तथा अन्य कोचों के उत्पादन के लिए की गई चरणवार व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया।

मीडिया के साथ बातचीत करते समय उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दिशा-निर्देशों में भारत को आत्मनिर्भर बनाने हेतु हमने वंदे भारत के 400 रेकों के उत्पादन का दृढ़ संकल्प लिया है तथा इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हम निरंतर प्रयास और परिश्रम कर रहे हैं। फिलहाल नई दिल्ली-वाराणसी और नई दिल्ली-कटरा के बीच दो वंदे भारत ट्रेनें सफलतापूर्वक चलाई जा रही हैं। हमें श्रीलंका रेलवे से 160 मेनलाइन कोचों का विनिर्माण करने का आदेश प्राप्त हुआ था। इन 160 कोचों में से 140 कोचों का निर्यात पहले ही किया जा चुका है और शेष कोचों का निर्यात इस उत्पादन वर्ष (2021-22) में ही पूरा कर देने की योजना बनाई गई है।

रेल राज्यमंत्री ने रेलवे के बुनियादी ढांचे से संबंधित परियोजनाओं की समीक्षा की



केंद्रीय रेल एवं कपड़ा राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने 28 फरवरी, 2022 को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस मुंबई में मध्य रेल और पश्चिम रेलवे पर दोहरीकरण, विद्युतीकरण आदि जैसी रेलवे बुनियादी ढांचे से संबंधित परियोजनाओं और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर और नेशनल हाई स्पीड रेलवे जैसी चल रही परियोजनाओं की समीक्षा की। इस अवसर पर श्री अनिल कुमार लाहोटी, महाप्रबंधक, मध्य और पश्चिम रेलवे, वरिष्ठ अधिकारी और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कॉर्पोरेशन लिमिटेड, नेशनल हाई-स्पीड रेलवे कॉरपोरेशन लिमिटेड और कई अन्य रेलवे पीएसयू के अधिकारी उपस्थित थे।

रेल राज्यमंत्री ने दक्षिण रेलवे के अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की

श्रीमती दर्शना जरदोश, केंद्रीय रेल और कपड़ा राज्य मंत्री ने 2 मार्च, 2022 को दक्षिण रेलवे का दौरा किया और श्री ए.के. अग्रवाल, महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे और आईसीएफ के साथ एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। बैठक में श्री बी.जी. माल्या, अपर महाप्रबंधक, प्रमुख विभागाध्यक्षों और अंचल के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। श्री ए.के. अग्रवाल, महाप्रबंधक ने मंत्री को विभिन्न ढांचागत, सुरक्षा और यात्री सुविधा कार्यों की स्थिति के बारे में जानकारी दी। मंत्री ने चल रहे क्षमता वृद्धि संबंधी कार्यों के बारे में विस्तार से चर्चा की और दक्षिण रेलवे के अधिकार क्षेत्र में रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं में सुधार के लिए सक्रिय उपायों का सुझाव दिया। मंत्री ने रेलवे स्टेशनों पर निर्भया योजना और



महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे के साथ समीक्षा बैठक करती हुईं रेल राज्यमंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश

वीडियो निगरानी प्रणाली (वीएसएस) के तहत सीसीटीवी कैमरे लगाने की प्रगति की भी समीक्षा की। श्रीमती दर्शना जरदोश ने यह भी सुझाव दिया कि क्षेत्र को प्रमुख कपड़ा शहरों से कपड़ा उत्पादों के रेल परिवहन के रास्ते तलाशने चाहिए।

मिजोरम के मुख्यमंत्री संग महाप्रबंधक, पू.सी. रेल की बैठक



आइजोल में मिजोरम के मुख्यमंत्री श्री जोरमथंगा संग बैठक करते हुए पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता

मिजोरम के मुख्यमंत्री श्री जोरामथंगा से पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता ने 9 दिसंबर, 2021 को आइजोल में भेंट की। मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारी और लामडिंग मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री जे.एस. लकरा भी उनके साथ थे। महाप्रबंधक ने आश्वासन दिया कि पू.सी. रेल राज्य सरकार की मांग के अनुसार और जब भी आवश्यकता होगी, रो-रो सेवा चलाने के लिए तैयार है। पू. सी. रेल ने भांगा से भैरबी स्टेशन के बीच रो-रो रेक चलाए जाने के आयामों की जांच की है और पीओएल, एलपीजी जैसी वस्तुओं को मिजोरम तक ले जाने के लिए व्यावहारिक पाया गया है। क्षेत्र में यह सेवा तेजी से विकास लाने में मदद करेगी। चर्चा के संदर्भ में महाप्रबंधक ने मुख्यमंत्री को रेलवे की किसान रेल योजना की सेवाओं की जानकारी दी। आवश्यकता के अनुसार भूमि के आदान-प्रदान के आधार पर भी राज्य सरकार को भूमि हस्तांतरित की जा सकती है।

महाप्रबंधक, पू.सी. रेल श्री अंशुल गुप्ता ने आइजोल में मिजोरम सरकार की मुख्य सचिव डॉ. रेणु शर्मा से मुलाकात की। महाप्रबंधक ने भैरबी-सैरंग नई रेलवे लाइन परियोजना के तहत भारतीय रेल द्वारा निर्मित किए जा रहे ब्रिज नंबर 89, 115 और 196 का भी निरीक्षण किया।

इससे पहले 8 दिसंबर, 2021 को महाप्रबंधक ने भैरबी-साईरंग नई रेल लाइन परियोजना के कार्यस्थलों का निरीक्षण किया, जो मिजोरम राज्य की राजधानी को जोड़ेगी।

सांसद द्वारा रायपुर मंडल के भाटापारा में नवनिर्मित रोड अंडर ब्रिज का लोकार्पण

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल के निपानिया–भाटापारा सेक्शन के समपार फाटक क्रमांक 383 बलौदा बाजार फाटक, भाटापारा रोड अंडर ब्रिज का लोकार्पण 28 फरवरी, 2022 को सांसद श्री सुनील कुमार सोनी द्वारा विधायक शिवरतन शर्मा की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री आशीष मिश्रा सहित मंडल के अधिकारी व भाटापारा के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। यह अंडर ब्रिज रायपुर बिलासपुर राष्ट्रीय राजमार्ग को भाटापारा होते हुए बलौदा बाजार से जोड़ता है। इस रोड अंडर ब्रिज से लोगों को आवागमन में सुविधा मिलेगी।



विधायक शिवरतन शर्मा की उपस्थिति में भाटापारा रोड अंडर ब्रिज का लोकार्पण करते हुए सांसद श्री सुनील कुमार सोनी

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने नवनिर्मित प्रेक्षागृह का निरीक्षण किया



पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय, गोरखपुर में नवनिर्मित प्रेक्षागृह का महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे श्री अनुपम शर्मा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ निरीक्षण करते हुए अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड, श्री विनय कुमार त्रिपाठी

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड, श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे श्री अनुपम शर्मा, अपर महाप्रबंधक श्री अमित कुमार अग्रवाल, प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री सतीश कुमार पाण्डेय, प्रमुख विभागाध्यक्षों, तीनों मंडलों के मंडल रेल प्रबन्धकों एवं वरिष्ठ अधिकारियों के साथ पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय, गोरखपुर में नवनिर्मित प्रेक्षागृह का 05 मार्च, 2022 को निरीक्षण किया। श्री त्रिपाठी ने कहा कि इस अत्याधुनिक प्रेक्षागृह में बेहतर ध्वनी व्यवस्था के लिए उच्च तकनीक का अकॉस्टिक सिस्टम लगाया गया है, स्टेज पर आधुनिक लाइटिंग्स भी लगाई गई हैं। इसमें टेक्निकल सेमिनार, बैठकें, समारोह आदि आयोजित किए जा सकेंगे। ज्ञातव्य है कि पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक रहने के दौरान श्री विनय कुमार त्रिपाठी के निर्देशन में प्रेक्षागृह निर्माण कार्य में तेजी आई थी।

भारतीय रेल
पत्रिका की सदस्यता एवं प्राप्ति हेतु
संपर्क करें 011–47845381
सोमवार से शुक्रवार (सुबह 10 से 1 एवं दोपहर 2 से 5 बजे तक) editorbhartiyarailrb@gmail.com bmpr310rb@gmail.com

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने किया प्रयागराज का दौरा

श्री त्रिपाठी ने प्रयागराज जं. पर निरीक्षण एवं उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में समीक्षा बैठक की

अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीआरबी एवं सीईओ), रेलवे बोर्ड श्री विनय कुमार त्रिपाठी 26 फरवरी, 2022 उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में समीक्षा बैठक की। श्री त्रिपाठी ने प्रयागराज पहुंचने से पहले वंदे भारत एक्सप्रेस से नई दिल्ली–प्रयागराज सेक्शन का फुटप्लेट निरीक्षण किया। फुटप्लेट निरीक्षण के दौरान श्री त्रिपाठी के साथ मंडल रेल प्रबंधक, प्रयागराज श्री मोहित चंद्रा और मुख्य बिजली वितरण इंजीनियर श्री संजीव कुमार उपस्थित रहे, जहां उन्होंने 2x25 केवी ट्रैक्शन लाइन के काम की प्रगति की जानकारी ली। श्री त्रिपाठी ने सेक्शन में चल रहे कार्यों का भी जायजा लिया।

प्रयागराज जं. पहुंचकर श्री त्रिपाठी ने प्रयागराज स्टेशन पुनर्विकास योजना एवं यार्ड रीमॉडलिंग योजना की समीक्षा की। श्री प्रमोद कुमार, महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे और श्री शरद मेहता, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) ने अध्यक्ष को प्रस्तावित स्टेशन पुनर्विकास और यार्ड रीमॉडलिंग योजनाओं की प्रगति से अवगत कराया।

इसके बाद श्री त्रिपाठी ने स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर–1 पर स्थित क्रू और गार्ड लॉबी का निरीक्षण किया। श्री त्रिपाठी ने कहा कि प्रतिदिन 5 मिलियन टन लदान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कुशल ट्रेन संचालन एक महत्त्वपूर्ण कारक है और इस प्रकार रनिंग स्टाफ और उनके कार्य कौशल का ज्ञान महत्त्वपूर्ण मानक है। साथ ही, उन्होंने कहा कि किसी भी तरह की सुरक्षा भंग होने पर जीरो टॉलरेंस अपनाया जाएगा। ट्रेन संचालन में सुरक्षा सभी अधिकारियों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। श्री त्रिपाठी ने प्रयागराज लॉबी में 'एलेक्सा सॉफ्टवेयर' का भी अनावरण किया। यह लोको पायलटों और गार्डों के लिए एक कंप्यूटर आधारित परामर्श प्रणाली है।



प्रयागराज लॉबी में 'एलेक्सा सॉफ्टवेयर' का अनावरण करते हुए अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड श्री विनय कुमार त्रिपाठी

श्री त्रिपाठी ने महाप्रबंधक, श्री प्रमोद कुमार, प्रमुख विभागाध्यक्षों और उत्तर मध्य रेलवे के तीनों मंडलों (आगरा, प्रयागराज और झांसी) के मंडल रेल प्रबंधकों के साथ समीक्षा बैठक की। संरक्षा संबंधी पहलुओं पर चर्चा करते हुए श्री त्रिपाठी ने हाल ही में विद्युतीकृत खंडों में कार्यरत कर्मचारियों के प्रशिक्षण पर बल दिया। उन्होंने आगे निर्देश दिए कि सभी डीजल इंजन के लोको पायलटों को एसी इंजनों की कार्यप्रणाली से भी परिचित कराया जाए।

एसेट फेलियर के संबंध में बात करते हुए श्री त्रिपाठी ने सबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि किसी भी फेलियर के मूल कारण की तह में जाना चाहिए और उसका यथोचित समाधान करना चाहिए। इसी क्रम में, श्री त्रिपाठी ने 'मिशन रफ्तार' की प्रगति के विषय में चर्चा की, जो हावड़ा–दिल्ली और मुंबई–दिल्ली मार्गों को 160 किमी प्रति घंटे या उससे अधिक की गति से चलने वाली ट्रेनों के लिए अपग्रेड करने से संबंधित है। श्री त्रिपाठी ने कहा कि प्रतिदिन 5 मिलियन टन लोडिंग के विजन को साकार करने के लिए, उत्तर मध्य रेलवे को ट्रेनों की गतिशीलता को बढ़ाकर एक प्रमुख भूमिका निभानी होगी।



प्रयागराज जं. का निरीक्षण करते हुए अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड श्री विनय कुमार त्रिपाठी

संरक्षित रेल परिवहन, सत्यनिष्ठा से कार्य निष्पादन
भारतीय रेल की प्राथमिकता—अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड, श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे श्री अनुपम शर्मा, अपर महाप्रबंधक श्री अमित कुमार अग्रवाल, प्रमुख विभागाध्यक्षों, तीनों मंडलों के मंडल रेल प्रबन्धकों एवं वरिष्ठ अधिकारियों के साथ 05 मार्च, 2022 को संरक्षा समीक्षा बैठक की।

बैठक को सम्बोधित करते हुए श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय रेल बदलाव के दौर से गुजर रही है, हम सभी को अपनी कार्य शैली में बदलाव लाने की आवश्यकता है, जिससे भारतीय रेल को सर्वोत्कृष्ट संस्था बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि भारतीय रेल के पास बहुत ही मजबूत तंत्र तथा काफी संसाधन व सक्षम रेलकर्मी भी उपलब्ध हैं। रेलवे को अधिक संरक्षित और तीव्रगामी बनाने की आवश्यकता



है। कोविड के कारण गत दो वर्षों में कार्य की गति थोड़ी धीमी हो गई थी, अब कार्यों को दोगुनी तेजी से किया जाए।

श्री त्रिपाठी ने कहा कि संरक्षा संबंधी विफलताओं का विश्लेषण कर कारणों को ढूंढ़ कर उन्हें ठीक करने की आवश्यकता है। संरक्षा अभियान आगे भी जारी रखें। अभियान के दौरान पाई गईं कमियों को पूरी ईमानदारी से ठीक किया जाए। अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने 06 मार्च, 2022 को रेल राजस्व में वृद्धि हेतु किए जा रहे कार्यों की समीक्षा बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिन गाड़ियों में यात्रियों का दबाव ज्यादा है, उनमें आवश्यकतानुसार अतिरिक्त कोच लगाए जाएं। पार्सल यातायात को बढ़ावा देने के लिए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने 'डोर टू डोर' डिलीवरी हेतु योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करने का निर्देश दिया। उन्होंने रेल राजस्व में वृद्धि के लिए बैठक में आए सुझावों के जमीनी कार्यान्वयन पर बल दिया।

इसके उपरान्त अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने महाप्रबंधक के साथ बहुविषयक पद्धति प्रशिक्षण केन्द्र, गोरखपुर का निरीक्षण किया।

क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति की
पूर्वोत्तर रेलवे की बैठक संपन्न





पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री अनुपम शर्मा की अध्यक्षता में क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति (जेड.आर.यू.सी.सी.) की 109वीं बैठक गोरखपुर में 05 जनवरी, 2022 को सम्पन्न हुई। बैठक में सांसद, श्रीमती कविता सिंह, सांसद, श्री जनार्दन सिंह सिग्रीवाल, सांसद प्रतिनिधि, क्षेत्रीय उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति के सदस्य, अपर महाप्रबंधक श्री अमित कुमार अग्रवाल, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री डी.के. सिंह, प्रमुख विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में सांसद श्री जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने कहा कि कोविड-19 के काल में रेलवे ने विभिन्न स्थानों पर खाद्यान्न, दवा एवं ऑक्सीजन की आपूर्ति के सराहनीय कार्य किए। सांसद श्रीमती कविता सिंह ने विभिन्न स्टेशनों पर जन सुविधाएं उपलब्ध कराने, साफ-सफाई किए जाने तथा विकास कार्यों को समय से पूरा करने का सुझाव दिया। बैठक में जेड.आर.यू.सी.सी. के सदस्यों ने अपने क्षेत्रों में यात्री सुविधाओं के उन्नयन, छोटे स्टेशनों पर जन सुविधाएं एवं प्रतीक्षालय की व्यवस्था, गाड़ियों के ठहराव, विस्तार, गाड़ियां चलाने आदि का सुझाव दिया।

सदस्य, रेलवे बोर्ड का दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का दौरा

श्री एस. के. मोहंती, सदस्य (परिचालन एवं व्यवसाय विकास), रेलवे बोर्ड का दो दिवसीय दौरे पर 24 फरवरी, 2022 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे आगमन हुआ। उन्होंने रायपुर रेल मंडल के लाखौली–रायपुर दोहरीकरण परियोजना का निरीक्षण किया। इसके पश्चात् वह लाखौली–बिलासपुर रेलखंड का विंडो निरीक्षण करते हुए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे मुख्यालय बिलासपुर पहुंचे। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, मुख्यालय, बिलासपुर में श्री मोहंती ने श्री आलोक कुमार, महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्षों के साथ दक्षिण पूर्व मध्य



रेलवे में चल रही विभिन्न परियोजनाओं, माल ढुलाई, यात्री परिवहन एवं यात्री सुविधाओं की समीक्षा बैठक की। श्री मोहंती ने 25 फरवरी, 2022 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के कोरबा यार्ड, कुसमुंडा, गेवरा, जूनाडीह एवं दीपका साईडिंग का निरीक्षण किया।

सदस्य, रेलवे बोर्ड का रेल पहिया कारखाना का दौरा

श्री संजीव मित्तल, सदस्य इंफ्रास्ट्रक्चर और सदस्य ट्रैक्शन व रोलिंग स्टॉक, रेलवे बोर्ड ने 11 फरवरी, 2022 को रेल पहिया कारखाना (रेपका) का दौरा किया। उन्होंने रेपका में चल रही परियोजनाओं, जिनमें अतिरिक्त धुरा फोर्जिंग और मशीनिंग लाइनें प्रमुख हैं, की प्रगति की समीक्षा की और कारखाने का निरीक्षण किया। भारतीय रेल के मिशन 'हंग्री फॉर कार्गो' से पहियों और धुरों की मांग बढ़ेगी। इन परियोजनाओं के पूरा होने से रेपका में धुरा निर्माण की क्षमता में वृद्धि होगी जिससे धुरों के आयात पर होने वाले खर्च में कमी आएगी और 'आत्मनिर्भर भारत' के आदर्श वाक्य में योगदान मिलेगा। उन्होंने श्री अजय



कुमार दुबे, महाप्रबंधक, रेपका और रेपका के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से परियोजनाओं के पूरा होने और उत्पादन योजना के संबंध में विस्तृत चर्चा की।



आपको यह **अंक कैसा लगा**
हमें जरूर बताएं

ई–मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें ▶ **संपादक,** भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन, नई दिल्ली–110 001

सदस्य, रेलवे बोर्ड ने
पूर्व रेलवे में खेल सुविधाओं का निरीक्षण किया

श्री संजीव मित्तल, सदस्य (इन्फ्रा)/रेलवे बोर्ड और अध्यक्ष, रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड (आरएसपीबी) ने 22 मार्च को पूर्व रेलवे में उपलब्ध खेल सुविधाओं का निरीक्षण किया। श्री मित्तल ने कचरापाड़ा में खेल सुविधा का भी दौरा किया और कहा कि यहां राष्ट्रीय मानकों की बराबरी करने के लिए जिमनेजियम के विकास के अलावा सिंथेटिक ट्रैक, फुटबॉल मैदान, आवास और भोजन की व्यवस्था के प्रावधान जैसी सुविधाओं की भी आवश्यकता है।



निरीक्षण के दौरान श्री पी.सी. लोचब, सचिव, आरएसपीबी, ईआरएसए के अध्यक्ष श्री ए.के. दूबे और सचिव श्री पी. बालसुंदरम के साथ श्री संजीव मित्तल, सदस्य (इंफ्रा.) व अध्यक्ष, आरएसपीबी

सदस्य (इंफ्रा) ने बेहला में एक्वेटिक्स के लिए सुविधाओं के निरीक्षण के मूल में इलेक्ट्रॉनिक टच पैड, छानने की प्रणाली का उन्नयन, वाष्प स्नान का कमरा, वाष्प और शुरुआती तैराकों के लिए छोटे पूल के साथ इसे एक इनडोर पूल में परिवर्तित करने का विचार था। श्री मित्तल ने इस भवन के चारों ओर तीरंदाजी, जिम्नास्टिक, पॉवर लिफ्टिंग, भारोत्तोलन आदि के लिए खाली भूमि के विकास पर भी चर्चा की। चर्चा में उल्लेख किया गया कि ईआरएसए कोलकाता में विभिन्न सुविधाओं की योजना बनाने के लिए आर्किटेक्ट्स को नियुक्त करेगा और फिर योजना को साकार करने के लिए वह प्रस्ताव देगा। श्री संजीव मित्तल ने पूर्वी रेलवे के अधिकारियों के साथ इसे सबसे बड़ा आवास और भोजन सुविधा बनाने और हॉकी ग्राउंड के साथ ही शूटिंग रेंज के विकास की योजना पर चर्चा की।

भारतीय रेल का पहला गतिशक्ति कार्गो टर्मिनल
पूर्वी रेलवे के आसनसोल मंडल में शुरू किया गया

इससे **रेलवे की आय** में हर महीने लगभग **11 करोड़ रुपये** की बढ़ोतरी होगी

'गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल' (जीसीटी) के संबंध में प्रधानमंत्री के विजन 'गति शक्ति' और रेल मंत्रालय की नीति के अनुरूप भारतीय रेल के आसनसोल मंडल ने थापर नगर में मैथन पॉवर लिमिटेड की निजी साइडिंग को सफलतापूर्वक शुरू कर दिया है। दिसंबर 2021 में जीसीटी नीति के सामने आने के बाद से यह भारतीय रेल में इस तरह का पहला जीसीटी है।

मैथन विद्युत परियोजना वर्ष 2009 में शुरू की गई थी और 2011 में यहां विद्युत का उत्पादन शुरू किया गया था। अब तक इस विद्युत परियोजना के लिए कोयले की जरूरत सड़क के रास्ते पूरी की जा रही



थी, लेकिन अब हर महीने 120 इनवार्ड (आने वाला) कोयला रैक से इसकी जरूरत पूरी की जाएगी। वहीं, फ्लाई ऐश के 2 से 4 आउटवार्ड (जाने वाला) रेकों को साइडिंग से भेजे जाने का अनुमान है। इससे रेलवे की कमाई में हर महीने लगभग 11 करोड़ रुपये की बढ़ोत्तरी होगी। यह स्थान औद्योगिक व खनन क्षेत्र के आसपास है और साइडिंग की भविष्य की संभावनाओं को लेकर उम्मीद है। जीसीटी के शुरू होने के अवसर पर रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री वी.के. त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय रेल प्रधानमंत्री के 'गति शक्ति' के सपने को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है। रेल के जरिए परिवहन अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है, क्योंकि यह सबसे अधिक ऊर्जा कुशल और परिवहन का सबसे सस्ता माध्यम है। इस टर्मिनल के साथ इस तरह के और भी टर्मिनलों के शुरू होने से देश की अर्थव्यवस्था पर इसका बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

संसद में भारतीय रेल

संसद सत्र के दौरान माननीय सांसदों द्वारा भारतीय रेल के संबंध में पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने निम्नलिखित जानकारियाँ दीं

(प्रस्तुत हैं संकलित अंश)

रेल के डिब्बे बनाने के लिए एल्युमीनियम का उपयोग

एल्युमीनियम बॉडी सवारी डिब्बों को लगाने के संबंध में भारतीय रेल ने निम्नलिखित उपाय किए हैं:-

- मॉडर्न कोच फैक्टरी(एमसीएफ)/ रायबरेली ने मेसर्स डाउनसिस, साउथ कोरिया के साथ एल्युमीनियम बॉडी के सवारी डिब्बों के डिजाइन, विकास, विनिर्माण और परीक्षण के लिए टीओटी (प्रौद्योगिकी का स्थानांतरण) संविदा हस्ताक्षरित की है।
- भारतीय रेल की बेहतर उर्जा कुशलता और यात्री सवारी अनुभव वाले 400 न्यू जेनरेशन वंदे भारत ट्रेन सेटों की खरीद की योजना है। जहां तक संभव होगा, इन न्यू जेनरेशन उर्जा कुशलता वाले वंदे भारत ट्रेन सेटों में एल्युमीनियम बॉडी सवारी डिब्बों के उपयोग पर भी विचार किया जाएगा।
- मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल (एमएएचएसआर) के लिए खरीदे जाने वाले चल स्टॉक में एल्युमीनियम बॉडी सवारी डिब्बे होंगे।

रेल डिब्बों की नई प्रौद्योगिकी

भारतीय रेल पर नई कोच प्रौद्योगिकी का विकास/अधिग्रहण सतत् प्रक्रिया है और इसके लिए आवश्यकता और उपलब्ध चल स्टॉक प्रौद्योगिकी के मूल्यांकन के अनुसार निर्णय लिया जाता है। एलएचबी प्रौद्योगिकी के अधिग्रहण के बाद, इस संबंध में निम्नलिखित कार्रवाई की गई है :

- भारतीय रेल ने स्वदेशी रूप से प्रौद्योगिकी विकसित की है और वंदे भारत गाड़ियों (ट्रेन-18) का विनिर्माण किया है।
- बेहतर सस्पेंशन प्रौद्योगिकी और ऊर्जा दक्षता वाली 44 वंदे भारत गाड़ियों के निर्माण के लिए भारतीय रेल ने पहले ही आईजीबीटी आधारित 3-चरण प्रणोदन, नियंत्रण और अन्य उपकरणों (बोगी असेंबलियों सहित) के डिजाइन, विकास, विनिर्माण, आपूर्ति, एकीकरण, परीक्षण और कमीशनिंग के लिए ठेके दिए हैं। इसके अलावा, 58 अतिरिक्त वंदे भारत गाड़ियों के प्रणोदन के प्रापण की प्रक्रिया जारी है।
- भारतीय रेल ने बेहतर ऊर्जा दक्षता और यात्री सवारी अनुभव वाली 400 नई जेनरेशन की ऊर्जा कुशल वंदे भारत गाड़ियों का अधिग्रहण/ विनिर्माण करने की भी योजना बनाई है। इसके लिए विशिष्टियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।
- मॉडर्न कोच फैक्ट्री (एमसीएफ)/ रायबरेली ने एल्युमीनियम बॉडी सवारी डिब्बों के डिजाइन, विकास, विनिर्माण और परीक्षण के लिए मै. डावन्सिस, दक्षिण कोरिया के साथ एक टीओटी (ट्रांसफर ऑफ टेक्नोलॉजी) संविदा पर हस्ताक्षर किए हैं।

वर्तमान में, लगभग 750 जोड़ी मेल/ एक्सप्रेस गाड़ियों को आईसीएफ रेक के साथ संचालित किया जा रहा है। स्वच्छ भारत अभियान के एक भाग के रूप में, भारतीय रेल ने अपने सभी मेनलाइन यात्री कोचिंग स्टॉक पर जैव-शौचालय लगाने का काम पूरा कर लिया है ताकि रेलपथ पर सवारी डिब्बों से कोई मानव अपशिष्ट न गिरे।

इसके अलावा, वैक्यूम फ्लशिंग सिस्टम के साथ जैव-शौचालय को भी विकसित किया गया है और इसे सवारी डिब्बों में फिट/रेट्रोफिट किया जा रहा है। भारतीय रेल पर लगभग 1,450 सवारी डिब्बों में वैक्यूम फ्लशिंग सिस्टम के साथ जैव-शौचालय लगाए गए हैं।



कौशल विकास मंत्रालय के साथ सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर



कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय को विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में युवाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण केंद्र शुरू करने के लिए रेलवे की अवसंरचना की अतिरिक्त क्षमता उपलब्ध कराने के लिए 14.07.2015 को रेल मंत्रालय और कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। समझौता ज्ञापन के अनुसार, रेल मंत्रालय की भूमिका कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय को कौशल प्रशिक्षण केंद्र शुरू करने के लिए रेलवे की अवसंरचना की अतिरिक्त क्षमता उपलब्ध कराने की थी, न कि कौशल विकास कार्यक्रमों के आयोजन के लिए तकनीकी जनशक्ति प्रदान करने की।

भारतीय रेल कौशल विकास में योगदान देगी, जिसमें कुछ छोटे स्टेशनों, प्रशिक्षण केंद्रों, स्कूलों, संस्थानों में साझा करने योग्य अवसंरचना उपलब्ध कराना शामिल है, जो परिचालनिक रूप से आवश्यक नहीं हैं और जिन्हें कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय और इसके प्रतिनिधियों को उपलब्ध कराया जा सकता है। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय मुख्य रूप से प्रशिक्षण महानिदेशालय और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के माध्यम से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करेगा, जिसे भारत सरकार द्वारा बड़ी संख्या में गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक संस्थानों के सृजन को उत्प्रेरित करके कौशल विकास को बढ़ावा देने और वित्तपोषण प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया है।

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय द्वारा पहचान किए जाने के बाद रेल मंत्रालय, सहमति के अनुसार निर्धारित अवधि के लिए उक्त अवसंरचना को उपलब्ध कराने के लिए बिना लागत आधार पर पट्टे पर देने का निर्णय करेगा। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय, प्रशिक्षण महानिदेशालय और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के माध्यम से उन उम्मीदवारों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम विकसित करेगा, जिन्हें विज्ञापन/प्रचार जैसे विभिन्न माध्यमों से पहचाना जाएगा और अंत में कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के अधिकृत प्रतिनिधियों द्वारा चुना जाएगा।

रेल लाइनों के निकट पशुओं की सुरक्षा हेतु कदम

- रेल पटरियों पर पशुओं की मौत में कमी करने के लिए क्षेत्रीय रेल द्वारा कई निवारक उपाय किए गए हैं, जिनमें निम्नलिखित शमिल हैं:
- रेलपथ के किनारे कूड़े की सफाई और जंगली पौधों को हटाना।
- मवेशियों/पशुओं के कुचले जाने वाले संभावित स्थान पर नियमित आधार पर सीटी बजाने के संबंध में रेलगाड़ी क्रू को संवेदनशील बनाना।
- मवेशियों/पशुओं द्वारा रेलपथ पार करने और बड़े शहरों के चिन्हित पहुंच मार्गों पर घेराबंदी/चारदीवारी का निर्माण।
- गांव में संरक्षा सेमिनार/प्रचार के माध्यम से मवेशियों को रेलपथ के समीप आने से रोकने के संबंध में आवश्यक उपाय करने के लिए ग्रामीणों की काउंसलिंग करना।
- रेल पटरियों के समीप पशुओं के अनावश्यक जमावड़े से बचने के लिए रेल पटरियों के किनारे खाद्य अपशिष्ट को डालने से बचना।

16 क्षेत्रीय रेलों पर पिछले पांच वर्षों में रेल पटरियों पर पशुओं की मौत की संख्या के संबंध में वांछित सूचना अलग-अलग स्थानों पर है और बहुत व्यापक है और इसे समेकित करने के लिए पर्याप्त समय अपेक्षित है। वन क्षेत्रों से गुजरने वाली रेल लाइनों के संबंध में कई कदम उठाए गए हैं, जिनमें निम्नलिखित शमिल हैं:

- चिन्हित सुभेद्य स्थानों पर गति प्रतिबंध लगाना।
- हाथी और अन्य पशुओं की उपस्थिति के बारे में गाड़ी चालकों को सचेत करने के लिए उचित स्थानों पर चेतावनी संकेतक बोर्ड लगाना।
- अलग-अलग स्थानों पर घेराबंदी करना।
- उन स्थानों जहां हाथियों के पार करने की संभावना अधिक होती है, पर नवप्रवर्तनकारी हनी बी साउंड प्रणाली स्थापित करना।
- क्षेत्र के वन पदाधिकारियों के परामर्श से चिन्हित स्थानों पर जंगली पशुओं के आवागमन के लिए अंडरपास तथा रैंप का निर्माण।
- स्टेशन मास्टर और लोको पायलट को सचेत करके समय पर कार्रवाई के लिए रेलवे और वन विभाग



द्वारा नियुक्त हाथी ट्रैकर्स के साथ संपर्क के लिए रेलवे नियंत्रण कार्यालयों में वन विभाग के कर्मचारी तैनात किए जाते हैं।

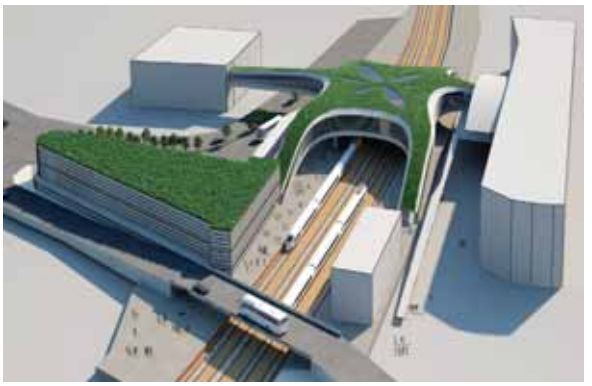
रेलवे स्टेशनों का सौंदर्यीकरण और आधुनिकीकरण

भारतीय रेलों पर स्टेशनों के उन्नयन/सौंदर्यीकरण/आधुनिकीकरण के लिए इस मंत्रालय द्वारा विभिन्न योजनाएं यथा 'मॉडल', 'मॉर्डन' और 'आदर्श' स्टेशन योजना तैयार की गई हैं।

'मॉडल' स्टेशन योजना 1999 से 2008 तक प्रचलन में थी। आरंभ में इस योजना के अंतर्गत भारतीय रेल के प्रति मंडल एक स्टेशन का चुनाव किया गया था। वर्ष 2006 में, वार्षिक यात्री आमदनी के आधार पर इस योजना के अंतर्गत सभी 'ए' और 'बी' कोटि के स्टेशनों को शामिल करने के लिए मानदंडों में संशोधन किया गया था। इस योजना के अंतर्गत उन्नयन के लिए 594 स्टेशनों का चुनाव किया गया था। इनमें से 590 स्टेशनों को विकसित कर दिया गया है। जहां तक शेष 4 स्टेशनों का संबंध है, सम्बलपुर रोड स्टेशन और अलनावर स्टेशन को इस योजना से हटा दिया गया है, जबकि उल्टाडांगा और मालबाजार स्टेशन बंद कर दिए गए हैं। 'मॉडल' स्टेशन योजना के अंतर्गत विकसित स्टेशनों के नाम परिशिष्ट-I के रूप में संलग्न है।

'मॉडर्न' स्टेशन योजना 2006-07 से 2007-08 तक प्रचलन में थी। इस योजना के अंतर्गत उन्नयन के लिए 637 स्टेशनों का चुनाव किया गया था जिन्हें पहले ही विकसित कर दिया गया है। 'मॉडर्न' स्टेशन योजना के अंतर्गत विकसित स्टेशनों के नाम परिशिष्ट-II पर दिए गए हैं।

इस समय स्टेशनों पर बेहतर यात्री सुख-सुविधाएं मुहैया करवाने की निर्धारित आवश्यकता के आधार पर 'आदर्श' स्टेशन योजना के अंतर्गत रेलवे स्टेशनों को अपग्रेड/ आधुनिकीकृत किया जाता है। 'आदर्श' स्टेशन योजना के अंतर्गत विकास हेतु 1,253 स्टेशनों की पहचान की गई है, जिनमें से अभी तक 1,213 स्टेशनों को विकसित किया गया है और शेष स्टेशनों को आदर्श स्टेशन योजना के अंतर्गत वित्त वर्ष 2022-23 तक विकसित करने का लक्ष्य है। 'आदर्श' स्टेशन योजना के अंतर्गत विकसित किए जाने वाले चिन्हित स्टेशनों के नाम परिशिष्ट-III पर दिए गए हैं।



बैयप्पनहल्ली (बेंगलुरु) रेलवे स्टेशन

विभिन्न यात्री सुविधाओं, जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ, स्टेशन भवन के अग्रभाग में सुधार, विश्रामकक्ष, प्रतीक्षाकक्ष (स्नान की सुविधाओं के साथ), महिलाओं के लिए अलग प्रतीक्षाकक्ष, परिचालन क्षेत्र का भू-निर्माण, निर्धारित पार्किंग, संकेतक, पे एंड यूज शौचालय, उपरिगामी पुल, स्टेशन के प्रवेश द्वार पर रैंप आदि शामिल की हैं, इन्हें इन रेलवे स्टेशनों पर स्टेशन की संबंधित कोटि के अनुसार आवश्यकता, यात्री यातायात की मात्रा तथा पारस्परिक प्राथमिकता, निधियों की उपलब्धता के आधार पर व्यवस्था की गई है।

हाल ही में रेलवे स्टेशन के प्रमुख उन्नयन की एक नई अम्ब्रेला वर्क योजना शुरू की गई है। इस योजना में परिकल्पित सुविधाओं में स्टेशन भवन का पुनर्निर्माण/सुधार/संवर्धन, स्टेशन परिसरों के लिए भीड़-भाड़ मुक्त प्रवेश/निकास, यात्रियों के आगमन/प्रस्थान का पृथक्करण, भीड़-भाड़ के बिना पर्याप्त कॉनकोर्स, जहां कहीं भी व्यवहार्य हो, शहर के दोनों छोरों का एकीकरण, उपयोगकर्ता अनुकूल संकेतक, अच्छी तरह से प्रकाशित परिचलन क्षेत्र और ड्रॉप-ऑफ, पिक-अप और पार्किंग आदि के लिए पर्याप्त व्यवस्था और आवश्यकता और व्यवहार्यता के अनुसार अन्य सुविधाओं के साथ-साथ दिव्यांगजनों की सभी सुविधाएं शमिल हैं। अब तक, इस योजना के तहत बिजवासन स्टेशन के प्रमुख उन्नयन का कार्य स्वीकृत किया जा चुका है।

इसके अलावा, भारतीय रेल पर स्टेशनों का उन्नयन/सौंदर्यीकरण/आधुनिकीकरण/सॉफ्ट उन्नयन निरंतर चलने वाली सतत प्रक्रिया है और इस संबंध में पारस्परिक प्राथमिकता और धनराशि की उपलब्धता के अध्यधीन आवश्यकता के अनुसार निर्माण कार्य शुरू किए जाते हैं। बहरहाल, इन कार्यों को स्वीकृत और निष्पादित करते समय स्टेशनों के उन्नयन/आधुनिकीकरण के लिए निम्न कोटि के स्टेशनों की अपेक्षा उच्च कोटि के स्टेशनों को प्राथमिकता दी जाती है।

'मॉडल' स्टेशन योजना के अंतर्गत चिन्हित और विकसित स्टेशनों की राज्यवार सूची निम्नानुसार है :

असम (15) : डिब्रूगढ़ (पूसीरे), गोसाईगांव (पूसीरे), गुवाहाटी (पूसीरे), जोरहाट टाउन (पूसीरे), कामाख्या (पूसीरे), कोकराझार (पूसीरे), लमडिंग (पूसीरे), न्यू बोंगाईगांव (पूसीरे), न्यू तिनसुकिया (पूसीरे), रंगिया जंक्शन (पूसीरे), सिलचर (पूसीरे), श्रीरामपुर (पूसीरे), तेजपुर (पूसीरे), बोंगाईगाँव (पूसीरे) और तिनसुकिया (पूसीरे)

आंध्र प्रदेश (57) : धर्मावरम जंक्शन (दमरे), गुंतकल (दमरे), गुंटूर (दमरे), हैदराबाद (दमरे), काचेगुड़ा (दमरे), काकीनाडा टाउन (दमरे), नेल्लोर (दमरे), राजामुंदरी (दमरे), सिकंदराबाद (दमरे), तिरुपति (दमरे), विजयवाड़ा (दमरे), पलासा (पूतरे), विशाखापत्तनम (पूतरे), वारंगल (दमरे), विजयनगरम (पूतरे),

श्रीकाकुलम (पूतरे), अनकापल्ली (दमरे), अनंतपुर (दमरे), भीमावरम टाउन (दमरे), कुड्डापाह (दमरे), एलुरु (दमरे), गोदावरी (दमरे), काजीपेट (दमरे), खम्मम (दमरे), ओन्गोले (दमरे), समालकोट (दमरे), तेनाली (दमरे), अदोनी (दमरे), चिराला (दमरे), कुरनूल टाउन (दमरे), मछलीपट्टनम (दमरे), मंचीरियल (दमरे), पलाकोलु (दमरे), रामागुंडम (दमरे), ताडेपल्लीगुडम (दमरे), तंदूर (दमरे), तनुकु (दमरे), तुनी (दमरे), भीमावरम (दमरे), धोने (दमरे), दोर्नाकल (दमरे), गूटी (दमरे), गुडिवाडा (दमरे), गुडूर (दमरे), नादिकुडी (दमरे), निदादावोलु (दमरे), पकाला (दमरे), रेनीगुंटा (दमरे), विकाराबाद (दमरे), अन्नवरम (दमरे)), बसर (दमरे), भद्राचलम रोड (दमरे), मंत्रालयम रोड (दमरे), नलगोंडा (दमरे), श्रीकालाहस्ती (दमरे), नंदयाल (दमरे) और निजामाबाद (दमरे)।

बिहार (55) : अक्षयवट राय नगर (पूमरे), आरा (पूमरे), अररिया कोर्ट (पूसीरे), बरौनी (पूमरे), बेगू सराय (पूमरे), बेतिया (पूमरे), भागलपुर (पूरे), बक्सर (पूमरे), छपरा (पूर्वो.रे), डेहरी-ऑन-सोन (पूमरे), दानापुर (पूमरे), दरभंगा (पूमरे), गया (पूमरे), हाजीपुर जंक्शन (पूमरे), जमालपुर जंक्शन (पूरे), जनकपुर रोड (पूमरे) कटिहार (पूसीरे), खगड़िया (पूमरे), किशनगंज (पूसीरे), मोकामा (पूमरे), मोतिहारी (पूमरे), मुजफ्फरपुर (पूमरे), नालंदा (पूमरे), नयागांव (पूमरे), नरकटियागंज जं. (पूमरे), नवादा (पूमरे), पटना जं.(पूमरे), पूर्णिया जंक्शन (पूसीरे), सागौली जंक्शन (पूमरे), सासाराम (पूमरे), समस्तीपुर (पूमरे), शेखपुरा (पूमरे), सीतामढ़ी (पूमरे), सीवान जंक्शन (पूर्वो. रे), सोनपुर (पूमरे), सुल्तानगंज (पूरे), पटना साहिब (ईसीआर), बख्तियारपुर (पूमरे), बिहार शरीफ (पूमरे), जमुई (पूमरे), झाझा (पूमरे), किउल (पूमरे), लक्खीसराय (पूमरे), राजेंद्र नगर (टी) (पूमरे), राजगीर (पूमरे), अनुग्रह नारायण रोड (पूमरे), रक्सौल (पूमरे), सहरसा (पूमरे), मधुबनी (पूमरे), बरह (पूमरे), भभुआ रोड (पूमरे), दलसिंहसराय (पूमरे), फुलवारी शरीफ (पूमरे), बरियारपुर (पूरे) और मननपुर (पूमरे)

चंडीगढ़ (1) : चंडीगढ़ (उरे)

छत्तीसगढ़ (8) : बिलासपुर (दपूमरे), दुर्ग (दपूमरे), रायपुर (दपूमरे), रायगढ़ (दपूमरे), चंपा (दपूमरे), भाटापारा (दपूमरे), तिल्दा (दपूमरे) और राजनांदगांव (दपूमरे)

दिल्ली (9) : दिल्ली (उरे), दिल्ली कैंट (उरे), दिल्ली सराय रोहिल्ला (उरे), ह.निजामुद्दीन (उरे), नांगलोई (उरे), नई दिल्ली (उरे), दिल्ली शाहदरा (उरे), सब्जी मंडी (उरे) और शकूरबस्ती (उरे)।

गुजरात (29) : अहमदाबाद (परे), आणंद जंक्शन (परे), भरूच (परे), भावनगर (परे), द्वारका (परे), गांधीधाम जंक्शन (परे), गांधीग्राम (परे), नवसारी (परे), ओखा (परे) राजकोट (परे), सूरत (परे), वडोदरा (परे), वलसाड (परे), वापी (परे), अंकलेश्वर (परे), नडियाद (परे), न्यू भुज (परे), पालनपुर (परे), जामनगर (परे), बिलिमोरा (परे), उधना (परे), मणिनगर (परे), महेसाणा (परे), दाहोद (परे), हापा (परे), सुरेन्द्रनगर (परे), जूनागढ़ (परे), पोरबंदर (परे) और वेरावल (परे)।

गोवा (2) : मडगाँव (केआरसीएल), वास्को-डि-गामा (दपरे)

हिमाचल प्रदेश (1) : शिमला (उरे)

हरियाणा (18) : अंबाला कैंट (उरे), फरीदाबाद (उरे), हिसार (उपरे), कालका (उरे), पानीपत जंक्शन (उरे), रेवाड़ी (उपरे), रोहतक (उरे), बल्लभगढ़ (उरे), करनाल (उरे), सोनीपत (उरे), जगाधरी (उरे), कुरुक्षेत्र (उरे), पलवल (उरे), चंडी मंदिर (उरे), भिवानी (उपरे), सिरसा (उपरे), भोड़वाल माजरी (उरे) और कोसली (उपरे)

जम्मू और कश्मीर (2) : जम्मू तवी (उरे), कठुआ (उरे)

झारखंड (16) : बैद्यनाथधाम (पूरे), बोकारो स्टील सिटी (दपूरे), चक्रधरपुर (दपूरे), डाल्टनगंज (पूमरे), धनबाद (पूमरे), हटिया (दपूरे), जसीडीह (पूरे), कोडरमा (पूमरे), मधुपुर (पूरे), पारसनाथ (पूमरे), रांची (दपूरे), टाटानगर (दपूरे), साहिबगंज (पूरे), बरहरवा (पूरे), बरकाकाना (पूमरे) और गढ़वा रोड (पूमरे)

कर्नाटक (26) : बेंगलुरु कैंट (दपरे), बीजापुर (दपरे), गुलबर्गा (सीआर), होस्पेट जंक्शन (दपरे), हुबली जंक्शन (दपरे), मैंगलोर (दरे), मैसूर (दपरे), रायचूर (दमरे), शिमोगा (दपरे), तोरणगल्लू (दपरे), कंकनाडी (दरे), बीदर (दमरे), यादगीर (दमरे), बेलगाम (दपरे), बेल्लारी जं. (दपरे), यशवंतपुर जं. (दपरे), अलनवर (दपरे), बेंगलुरु सिटी (दपरे), बंगारपेट जं. (दपरे), दावणगेरे (दपरे), धारवाड़ (दपरे), गदग (दपरे), हसन (दपरे), कृष्णराजपुरम (दपरे), लोंडा जंक्शन (दपरे) और तुमकुर (दपरे)

केरल (19) : एलवे (दरे), कालीकट (दरे), कैनानोर (दरे), चेंगन्नौर (दरे), एर्णाकुलम जंक्शन (दरे), कयामकुलम (दरे), कोट्टायम (दरे), पालघाट जंक्शन (दरे), क्विलॉन (दरे), त्रिचूर (दरे), त्रिवेंद्रम सेंट्रल (दरे), वर्कला (दरे), शेरानुर (दरे), टेलिचेरी (दरे), तिरुवल्ला (दरे), एर्णाकुलम टाउन (दरे), बडागरा (दरे), तिरूर (दरे) और एलेप्पी (दरे)

मध्य प्रदेश (34) : बामनिया (परे), भोपाल (पमरे), बबीना (उमरे), दमोह (पमरे), ग्वालियर (उमरे), गुना (पमरे), हबीबगंज (पमरे), होशंगाबाद (पमरे), इंदौर (परे), जबलपुर (पमरे), कटनी जंक्शन (पमरे), पिपरिया (पमरे), रतलाम (परे), सतना (पमरे), उज्जैन (परे), खंडवा (मरे), बुरहानपुर (मरे), बैतूल (मरे), सिंगरौली (पूमरे), मुरैना (उमरे), शहडोल (दपूमरे), महू (परे), देवास (परे), मंदसौर (परे), नागदा (परे), नीमच (परे), मदनमहल (पमरे), सागौर (पमरे), मैहर (पमरे), रीवा (पमरे), इटारसी (पमरे), बीना (पमरे), विदिशा (पमरे) और छिंदवाड़ा (दपूमरे)।

महाराष्ट्र (45) : अकोला जंक्शन (मरे), बांद्रा टर्मिनस (परे), भुसावल (मरे), चंद्रपुर (मरे), छत्रपति शाहू महाराज टर्मिनस (कोल्हापुर) (मरे), दादर (मरे), दादर (परे), धारगाँव (परे), जलगाँव (मरे), कल्याण (मरे), कुर्ला (लोकमान्य तिलक टर्मिनस) (मरे), मलकापुर (मरे), मुंबई सीएसटी (मरे), मुंबई सेंट्रल (परे), नागपुर (मरे), नांदेड़ (दमरे), नासिक रोड (मरे), पुणे (मरे), सोलापुर (मरे), ठाणे

(मरे), वर्धा (मरे), लोनावाला (मरे), मनमाड (मरे), अमरावती (मरे), मेराज (मरे), अहमदनगर (मरे), माथेरान (मरे), बडनेरा (मरे), चालीसगाँव (मरे), देवलाली (मरे), शेगाँव (मरे), बल्लारशाह (मरे), कराड़ (मरे), सांगली (मरे), सतारा (मरे), दौंड (मरे), औरंगाबाद (दमरे) जालना (दमरे), परभणी (दमरे), मुदखेड़ (दमरे), पूर्णा (दमरे), नागरसोल (दमरे), परलीवाजनाथ (दमरे), गोंदिया (दपूमरे) और नंदुरबार (परे)।

नागालैंड (1) : दीमापुर (पूसीरे)

ओडिशा (23) : बदखंडीता (पूतरे), बालासोर (दपूरे), ब्रह्मपुर (पूतरे), भद्रक (पूतरे), भुवनेश्वर (पूतरे), ब्यारी (पूतरे), कटक (पूतरे), ढेंकनाल (पूतरे), गोलंथरा (पूतरे), जाजपुर, क्योंझर (पूतरे), झारसुगुड़ा (दपूरे), कपिलस रोड (पूतरे), खुर्दा रोड (पूतरे), पुरी (पूतरे), रहमा (पूतरे), रायगडा (पूतरे), राउरकेला (दपूरे), संबलपुर (पूतरे), सुरला रोड (पूतरे), टिटलागढ़ (पूतरे), बालुगाँव (पूतरे), संबलपुर रोड (पूतरे) और केसिंगा (पूतरे)

पुडुचेरी (1) : पुडुचेरी (दरे)

पंजाब (18) : अमृतसर (उरे), आनंदपुर साहिब (उरे), ब्यास (उरे), भटिंडा (उरे), धूरी जंक्शन (उरे), फिरोजपुर (उरे), जालंधर सिटी (उरे), लुधियाना (उरे), पठानकोट (उरे), पटियाला (उरे), चक्की बैंक (उरे), जालंधर कैंट (उरे), फगवाड़ा (उरे), सरहिंद जंक्शन (उरे), गुरदासपुर (उरे), होशियारपुर (उरे), राजपुरा (उरे) और अबोहर (उरे)

राजस्थान (27) : आबू रोड (उपरे), अजमेर (उपरे), बीकानेर (उपरे), चित्तौड़गढ़ (परे), जयपुर (उपरे), जोधपुर (उपरे), कोटा (पमरे), निम्बाहेड़ा (परे), सवाई माधोपुर (पमरे), श्री गंगानगर (उरे), उदयपुर (उपरे), अलवर (उपरे), फालना (उपरे), रानी (उपरे), मारवाड़ जंक्शन (उपरे), ब्यावर (उपरे), भीलवाड़ा (उपरे), पाली मारवाड़ (उपरे), जैसलमेर (उपरे), नागौर (उपरे), मकराना (उपरे), सूरतगढ़ (उपरे), हनुमानगढ़ (उपरे), भरतपुर (पमरे), गंगापुर सिटी (पमरे), राणा प्रतापनगर (उपरे), किशनगढ़ (उपरे)

तमिलनाडु (27) : अरक्कोणम जंक्शन (दरे), चेंगलपट्टू (दरे), चेन्नई सेंट्रल (दरे), चेन्नई बीच (दरे), चेन्नई एग्मोर (दरे), कोयंबटूर (दरे), इरोड जंक्शन (दरे), कन्याकुमारी (दरे), काटपाडी (दरे), मदुरै (दरे), मामबलम (दरे), रामेश्वरम (दरे), सलेम जंक्शन (दरे), तिरुचिरापल्ली (दरे), तिरुनेलवेली (दरे), तिरुतनी (दरे), तूतीकोरिन (दरे), जोलारपेट्टई (दरे), डिंडीगुल (दरे), तिरुप्पुर (दरे), तंजावुर (दरे), नागरकोइल (दरे), अंबुर (दरे), कोविलपट्टी (दरे), विरुधुनगर (दरे), विल्लुपुरम जंक्शन (दरे) और हसूर (दपरे)

त्रिपुरा (1) : धर्मानगर (पूसीरे)

उत्तर प्रदेश (82) : आगरा कैंट (उमरे), आगरा फोर्ट (उमरे), अलीगढ़ (उमरे), इलाहाबाद (उमरे), अयोध्या (उरे), बादशाह नगर (पूर्वो.रे), बलिया (पूर्वो. रे), बरेली (उरे), बस्ती (पूर्वो.रे), बड़ौत (उरे), बागपत रोड (उरे), देवरिया सदर (पूर्वो.रे), इटावा (उमरे), फैजाबाद (उरे), गढ़मुक्तेश्वर (उरे), गाजियाबाद (उरे), गोंडा जंक्शन (पूर्वो.रे), गोरखपुर (पूर्वो.रे), इज्जतनगर जंक्शन (पूर्वो.रे), झांसी (उमरे), कानपुर सेंट्रल (उमरे), कटरा (पूर्वो.रे), लखनऊ (उरे), लखनऊ (पूर्वो. रे), मऊ जंक्शन (पूर्वो.रे), मथुरा जंक्शन (उमरे), मेरठ सिटी (उरे), मंडुआडीह (पूर्वो. रे), मुगलसराय (पूमरे), मुरादाबाद (उरे), पीलीभीत (पूर्वो.रे), प्रयाग (उरे), रायबरेली जंक्शन (उरे), रावतपुर (पूर्वो.रे), सहारनपुर (उरे), टूंडला (उमरे), वाराणसी (उरे), रेणुकोट (पूमरे), चोपन (पूमरे), मेरठ कैंट (उरे), जौनपुर (उरे), प्रतापगढ़ (उरे), सुल्तानपुर (उरे), भदोही (उरे), अकबरपुर (उरे), शहजहांपुर (उरे), मुजफ्फरनगर (उरे), बाराबंकी (उरे), शहगंज (उरे), उन्नाव (उरे), जंघई (उरे), नजीबाबाद (उरे), रामपुर (उरे), हरदोई (उरे), हापुड़ (उरे), चंदौसी (उरे), मिर्जापुर (उमरे), बांदा (उमरे), राजा की मंडी (उमरे), फतेहपुर (उमरे), फिरोजाबाद (उमरे), नैनी (उमरे), चित्रकूट धाम कर्वी (उमरे), ललितपुर (उमरे), ओरई (उमरे), लखनऊ सिटी (पूर्वो.रे), इलाहाबाद सिटी (पूर्वो.रे), आजमगढ़ (पूर्वो.रे), बहराइच (पूर्वो.रे), बरहनी (पूर्वो.रे), बेल्थरा रोड (पूर्वो.रे), भटनी जंक्शन (पूर्वो.रे), फर्रूखाबाद (पूर्वो.रे), गाजीपुर सिटी (पूर्वो. रे), कासगंज (पूर्वो.रे), खलीलाबाद (पूर्वो. रे), लखीमपुर (पूर्वो.रे), सलेमपुर (पूर्वो. रे), सीतापुर (पूर्वो.रे), वाराणसी सिटी (पूर्वो. रे), देवबंद (उरे) और कायमगंज (पूर्वो.रे)

उत्तराखंड (7) : देहरादून (उरे), हरिद्वार (उरे), काठगोदाम (पूर्वो.रे), रुड़की (उरे), ऋषिकेश (उरे), काशीपुर (पूर्वो.रे) और लालकुआं (पूर्वो.रे)

पश्चिम बंगाल (70) : अलीपुरद्वार जंक्शन (पूसीरे), आद्रा (दपूरे), अलुबरी रोड (पूसीरे), अंडाल जंक्शन (पूरे), आसनसोल (पूरे), बागनान (दपूरे), बैण्डेल (पूरे), वर्धमान (पूरे), बारासात (पूरे), बशीरहाट (पूरे), विष्णुपुर (दपूरे), बोलपुर (पूरे), बजबज (पूरे), बरुईपुर जंक्शन (पूरे), बिधाननगर रोड (पूरे), बनगांव (पूरे), कैनिंग (पूरे) कोंताई रोड (दपूरे), कूचबिहार (पूसीरे), न्यू कूचबिहार (पूसीरे), डालकोलहा (पूसीरे), ढाकुरिया (पूरे), दमदम (पूरे), डानकुनी (पूरे), दुर्गापुर (पूरे), गरिया (पूरे), गर्बेटा (दपूरे), घुटियारी शरीफ (पूरे), घुम (पूसीरे), हरिश्चंद्रपुर (पूसीरे), हावड़ा (पूरे), जलपाईगुड़ी (पूसीरे), झारग्राम (दपूरे), खड़गपुर (दपूरे), कृष्णनगर रोड (पूरे), कुल्टी (पूरे), कोलाघाट (दपूरे), लबपुर (पूरे), माल बाजार (पूसीरे), मध्यग्राम (पूरे), मालदा टाउन (पूरे), मेचेदा (दपूरे), मिदनापुर (दपू), मुर्शिदाबाद (पूरे), न्यू अलीपुरद्वार (पूसीरे), न्यू जलपाईगुड़ी (पूसीरे), न्यू फरक्का (पूरे), नवद्वीप धाम (पूरे), न्यू माल जंक्शन (पूसीरे), रानीगंज (पूरे), राणाघाट जंक्शन (पूरे), रायगंज (पूसीरे), सिलीगुड़ी टाउन (पूसीरे), संतरागाछी जंक्शन (दपूरे), सियालदह (पूरे), सोनारपुर (पूरे), सैंथिया (पूरे), तमलुक (दपूरे), टॉलीगंज (पूरे), तारकेश्वर (पूरे), उल्टाडांगा जंक्शन (पूरे), उलुबेरिया (दपूरे), बैरकपुर (पूरे), नैहाटी (पूरे), रिशड़ा (पूरे), श्रीरामपुर (पूरे), रामपुरहाट (पूरे), श्योराफुली (पूरे), चंदननगर (पूरे) और पुरुलिया (दपूरे)

'मॉडर्न' स्टेशन योजना के अंर्तगत विकसित स्टेशनों के राज्य-वार नाम निम्नानुसार हैं :

असम : अभयपुरी असम, बारपेटा रोड, डिब्रूगढ़ टाउन, दीफू, दुलियाजन, फकीराग्राम जंक्शन, फुरकटिंग जंक्शन, गोलपाड़ा टाउन, गोसाईगांवहाट, गुवाहाटी, हैबरगांव, होजई, जोरहाट टाउन, कामाख्या जंक्शन, कोकराझार, लुमडिंग, मारगेरिटा, मरियानी जंक्श्न, न्यू बोंगाईगाँव, न्यू तिनसुकिया जंक्शन, पाठशाला, रंगपारा नार्थ, रंगिया जंक्शन, सिलचर, सिमलुगुड़ी जंक्शन, सोरभोग, श्रीरामपुर असम, तिहु।

आंध्र प्रदेश : अनकापल्ली, अनंतपुर, भीमावरम टाउन, बोब्बिली, छीपुरुपल्ली, कुडापाहा, दुव्वाडा, एलुरु, गडवाल, गिद्दलुर, गूटी, गुंटकल, गुंटूर, काकीनाडा टाउन, कुरनूल टाउन, नादिकुडी, नंदयाल, नरसरावोपेट, नेल्लोर, ओंगोल, पकाला, पार्वतीपुरम, पुत्तुर, राजमुंदरी, रेनीगुंटा, रेपल्ले, समालकोट, सत्तनापल्ली, सिम्हाचलम, श्रीकाकुलम रोड (अमुदालवल्सा), सुल्लुरपेट, तेनाली, तिरुपति, विजयवाड़ा, विशाखापत्तनम, विजयनगरम

चंडीगढ़ : चंडीगढ़

बिहार : अनुग्रह नारायण रोड, आरा जंक्शन, अररिया कोर्ट, बरौनी जंक्शन, बरह, बरियारपुर, बेगूसराय, बेतिया, भभुआ रोड, भागलपुर, भगवानपुर, बक्सर, छपरा जंक्शन, दलसिंहसराय, दानापुर, दरभंगा जंक्शन, दौरम, मधेपुरा, डेहरी-ऑन-सोन, गया जंक्शन, हाजीपुर जंक्शन, जमालपुर, जमुई, जोगबनी, कहल गाँव, कटिहार, खगड़िया जंक्शन, किउल जंक्शन, लक्की सराय, मानसी जंक्शन, मोकामा, मोतिहारी, मुजफ्फरपुर जंक्शन, नरकटियागंज जंक्शन, नौगछिया, पटना जंक्शन, पूर्णिया जंक्शन, रफीगंज, राजेंद्र नगर (ट), रक्सौल जंक्शन, सगौली जंक्शन, सहरसा जंक्शन, समस्तीपुर जंक्शन, सासाराम जंक्शन, सीतामढ़ी, सीवान जंक्शन।

छत्तीसगढ़ : अंबिकापुर, बेल्हा, भाटापारा, बिलासपुर, बीपीएचबी, चंपा, दल्लीराजहरा, डोंगरगढ़, दुर्ग, कोरबा, महासमुंद, नैला, निपनिया, पेंड्रा रोड, रायगढ़, रायपुर, रायपुर, राजनंदगांव, तिल्दा

दिल्ली : दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन, नई दिल्ली

गुजरात : अहमदाबाद, आनंद, अंकलेश्वर, भक्तिनगर, भरूच, भौचाऊ, भावनगर टर्मिनस, बोटाड, दाहोद, ढोला जंक्शन, ध्रांगधरा, द्वारका, गांधीधाम, गांधीग्राम, गोधरा, गोंडल, हापा, जामनगर, जूनागढ़, कलोल, केशोद, खंबलिया, किम, कोसांबा, मणिनगर, मियमगम कर्जन, नडियाद, नवसारी, नया भुज, पालनपुर, पोरबंदर, राजकोट, साबरमती (बीजी), सूरत, सुरेंद्रनगर, थान, वडोदरा, वलसाड, वापी, वेरावल, वीरमगाम, वांकानेर

गोवा : वास्को-डि-गामा

हिमाचल प्रदेश : शिमला

हरियाणा : अंबाला कैंट, भिवानी, फरीदाबाद, गुरुग्राम, हिसार, होडल, जगाधरी, कालका, कुरुक्षेत्र, पानीपत, रेवाड़ी, रोहतक, सिरसा

जम्मू एवं कश्मीर : जम्मू तवी

झारखंड : बैद्यनाथधाम, बानो, बड़हरवा, बरकाकाना जंक्शन, बोकारो स्टील सिटी, चाईबासा, चक्रधरपुर, चंद्र पुरा जंक्शन, डाल्टनगंज, धनबाद जंक्शन, गढ़वा टाउन, घाटशिला, गिरिडीह, गोमोह जंक्शन, हैदरनगर, हटिया, हजारीबाग रोड, जपला, जसीडीह, कोडरमा, कुमारधुबी, लोहरदगा, मधुपुर, मनोहरपुर, मुरी, पाकुड़, पारसनाथ, रामगढ़ टाउन, रांची जंक्शन, साहिबगंज, सिनी, टाटानगर

कर्नाटक : अरसीकेरे जंक्शन, बैंगलुरु कैंट, बैंगलोर सिटी, बेलगाँव, बेल्लारी, बीदर, बीजापुर, बीरूर जंक्शन, दावणगेरे, धारवाड़, गदग, घाटप्रभा, गुलबर्गा, हरिहर, हसन जंक्शन, हवेरी, होसपेट, हुबली जंक्शन, लोंडा, मांडया, मैंगलोर सेंट्रल, मैसूर जंक्शन, रायचूर, रानीबेन्नूर, शिमोगा टाउन, तिपतुर, तुमकुर, वाडी, व्हाइटफील्ड, यादगीर, येलहंका जंक्शन, यशवंतपुर।

केरल : चेंगन्नूर, एर्णाकुलम जंक्शन, एर्णाकुलम टाउन, कन्नूर, कोल्लम (क्विलोन जंक्शन), कोट्टायम, कोझीकोड, पलक्कड़ जंक्शन, शेरणनूर जंक्शन, थलासेरी, थ्रीसुर (त्रिचूर), तिरुवनंतपुरम सेंट्रल

मध्य प्रदेश : अमला, अनूपपुर, अशोक नगर, बबीना, बालाघाट, भिलाई नगर, भोपाल, बीना, दामोह, गंज बसोडा, गुना, ग्वालियर, हबीबगंज, हरदा, होशंगाबाद, इंदौर, इटारसी, जबलपुर, कटनी, खंडवा, मैहर, मंडी बमोरा, मेघनगर, महू, नीमच, नर्सिंगपुर, पिपरिया, रामटेक, रतलाम, रीवा, सतना, सौगोर, शहडोल, शमगढ़, शुजालपुर, सिहोरा रोड, उज्जैन, उमरिया, विक्रमपुर आलोट

महाराष्ट्र : अहमदनगर, अकोला, अकुर्दी, अमगाँव, अंधेरी, औरंगाबाद, बडनेरा, बल्लारशाह, बांद्रा, बांद्रा टर्मिनस, भंडारा रोड, भांडुप, भुसावल, बोरीवली, भायखला, चालीसगाँव, चंदा फोर्ट, चंद्रपुर, चिंचवाड़, सीएसटी मुंबई, दादर, दादर (सीआर), दौंड, धर्माबाद, डोंबिवली, घाटकोपर, गोंदिया, हजूर साहिब नांदेड़, इतवारी, जलगाँव, जालना, कल्याण, कंजुरमर्ग, कोल्हापुर, कुर्दुवाडी, कुर्ला, कुर्ला लोकमान्य तिलक (ट), लोनावाला, मनमाड, मिरज, मुदखेड, मुलुंड, मुंबई सेंट्रल (मेन), नागपुर, नासिक रोड, नेरल, परभणी, परली वैजनाथ, पर्तुर, पिंपरी, पुणे, पूर्णा, सैंडहर्स्ट रोड, सांगली, सतारा, सेलू, शेगाँव, शिवाजीनगर, सायन, सोलापुर, ठाणे, तुमसर रोड, विद्याविहार, विक्रोली, विक्रोली, वर्धा

नागालैंड : दीमापुर

मिजोरम : भैराबी

ओडिशा : बलांगीर, बालासोर, बालुगांव, बारबिल, बरगढ़ रोड, भद्रक, भुवनेश्वर, ब्रह्मपुर, कटक, जाजपुर-क्योंझर रोड, जलेश्वर, झारसुगुड़ा, कांताबांजी, केसिंगा, खारीर रोड, खुर्दा रोड, कोरापुट, मुनिगुड़ा, पुरी, राजगंजपुर, रायगढ़ा, राऊकेला, संबलपुर, तालचेर, टिटलागढ़ जंक्शन

पुदुचेरी : पुदुचेरी

पंजाब : अमृतसर, बठिंडा जंक्शन, ब्यास, चक्की बैंक, धुरी जंक्शन, फिरोजपुर कैंट, जालंधर कैंट, जालंधर सिटी, लुधियाना, पटियाला, फगवाड़ा, सरहिंद जंक्शन

राजस्थान : आबू रोड, अजमेर जंक्शन, अलवर, बलोतरा, बांदीकुई, बाड़मेर, बयाना जंक्शन, ब्यावर, भरतपुर जंक्शन, भवानीमंडी, भीलवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़ जंक्शन, डकनिया तलाव, दौसा, डेगाना जंक्शन, धौलपुर, फालना, गांधीनगर,

जयपुर, गंगापुर सिटी, हनुमानगढ़, हिंडौन सिटी, जयपुर, जैसलमेर, जवाई बांध, जोधपुर, खेरली, किशनगढ़, लालगढ़, मकराना, मंडी डबवाली, मारवाड़ जंक्शन, मेड़ता रोड जंक्शन, मुरैना, नागौर, पाली मारवाड़, फुलेरा, रायका बाग जं., रानी, सवाई माधोपुर, सीकर, सिरोही रोड, श्रीगंगा नगर, सूरतगढ़, उदयपुर सिटी अंबूर, चेंगलपट्टू, चेन्नई बीच

तमिलनाडु : चेन्नई एग्मोर, कोयम्बटूर जंक्शन, धर्मपुरी, डिंडीगुल जंक्शन, इरोड जंक्शन, जोलारपेट्टई, कन्याकुमारी, कराईकुडी जंक्शन, कटपाड़ी, कुंभकोणम, मदुरै जंक्शन, मइलादुथुरई जंक्शन, नागापट्टनम, नागरकोईल जं., पलानी, रामनाथपुरम, रामेश्वरम, सलेम जंक्शन, श्रीरंगम, तांबरम, तंजावुर जंक्शन, तिरुवरुर, तिरुचिरापल्ली जंक्शन, तिरुनेलवेली जंक्शन, तिरुप्पुर, तिरुट्टनी, तूतीकोरिन, विरुद्धनगर जंक्शन, वृद्धाचलम जंक्शन

तेलंगाना : आदिलाबाद, बसर, भद्राचलम रोड, हैदराबाद, जादचेरला, काचेगुडा, कामारेड्डी, काजीपेट, खम्मम, महबूबनगर, मिरायालागुडा, नलगोंडा, निजामाबाद, रामागुंडम, सिकंदराबाद, विकाराबाद, वारंगल

त्रिपुरा : धर्मानगर

उत्तर प्रदेश : अछनेरा, आगरा कैंट, आगरा फोर्ट, अलीगढ़, इलाहाबाद, अमेठी, अयोध्या, आजमगढ़, बादशाह नगर, बहराइच, बलिया, बांदा, बरेली, बरेली सिटी, बस्ती, बेल्थरा रोड, चंदौली मझवार, चित्रकूटधाम करवी, देवरिया सदर, दिलदारनगर जं., इटावा, फैजाबाद, फर्रूखाबाद जंक्शन, फतेहपुर, फिरोजाबाद, गाजियाबाद, गाजीपुर सिटी, गोंडा जंक्शन, गोरखपुर जंक्शन, हापुड़, हरदोई, ईदगाह, जौनपुर, झांसी, कानपुर, खलीलाबाद, खुर्जा, कोसी कलां, लखीमपुर, ललितपुर, लखनऊ, लखनऊ सिटी, लखनऊ जंक्शन, महोबा, मंडुआडीह, मथुरा कैंट, मथुरा जंक्शन, मऊ जंक्शन, मेरठ सिटी, मिर्जापुर, मुरादाबाद, मुगल सराय जंक्शन, नैनी, ओराई, प्रयाग, रायबरेली जं., राजा की मंडी, रामपुर, रेणुकूट, सहारनपुर जंक्शन, सलेमपुर जंक्शन, शाहजहांपुर, सीतापुर, सुल्तानपुर, उन्नाव, वाराणसी, विंध्याचल

उत्तराखंड : देहरादून, हल्द्वानी, हरिद्वार, काशीपुर जंक्शन, काठगोदाम, लालकुआं, रामनगर, ऋषिकेश, रुड़की, रुद्रपुर सिटी

पश्चिम बंगाल : अलीपुरद्वार जंक्शन, अंडाल, आसनसोल, बांदेल, बांकुरा, बाराभूम, बारासत, बर्धमान, बैरकपुर, बरूईपुर, बिधाननगर, बिष्णुपुर, बोलपुर, बर्नपुर, चंद्रकोना रोड, चुचुरा (चिनसुराह), कूच बिहार, दालकोलहा, दार्जलिंग, दिघा, दमदम, दुर्गापुर, गर्बेटा, हावड़ा, जलपाईगुड़ी, जंगीपुर रोड, झालिदा, कल्याणी, खड़गपुर, किशनगंज, कोटशिला, कृष्णानगर सिटी, मालदा टाउन, मेछेदा, मिदनापुर, मुराडीह, नवाद्वीपधाम, नैहाटी, न्यू अलीपुरद्वार, न्यू कूच बिहार, न्यू फरक्का, न्यू जलपाईगुड़ी, न्यू माल जंक्शन, पनागढ़, पंसकुरा, पुरुलिया, रायगंज, रामपुरहाट, राणाघाट, संतरागाछी, सियालदह, शालीमार, श्रीरामपुर, सुइसा, तारकेश्वर

'आदर्श' स्टेशन योजना के तहत विकसित किए जाने के लिए चिन्हित स्टेशनों के राज्य-वार नाम निम्नानुसार हैं :

आंध्र प्रदेश (44) : अदोनी, अनंतपुर, बापटला, बोब्बिली, चित्तूर, दुव्वाडा, द्वारापुडी, गुडूर, गुंतकल, गुंटूर, हिंदुपुर, काकीनाडा टाउन, कुरनूल टाउन, माचेरला, मछलीपट्टनम, नंदयाल, नरसरावपेट, नौपाड़ा, नेल्लोर, पलासा, पार्वतीपुरम, पिडुगुराल्ला, रेनीगुंटा, सतनापल्ली, श्रीकाकुलम रोड (अमुदलवलसा), श्री सत्य साई प्रशांति निलयम, विनुकोंडा, विशाखापत्तनम (विजाग), विजयनगरम, चिपुरुपल्ले, इच्छापुरम, सिंहचलम, मरकापुर रोड, पेंडुरती, मंत्रालयम रोड, कुप्पम, डोनाकोंडा, न्यू गुंटूर, नल्लापाडु, राजमुंदरी, रेपल्ले, सोमपेटा, ओंगोल, अराकू।

असम (28) : बदरपुर, बारपेटा रोड, बसुगांव, बिजनी, फकीराग्राम जं., गोरेश्वर, गोसाईगांवहाट, होजई, जखलाबंधा, जोरहाट टाउन, करीमगंज जं., कोकराझार, न्यू बोंगाईगांव, रंगपारा नॉर्थ, रंगिया, रोवता बागान, सलाकाटी, सिलचर, श्रीरामपुर असम, तंगला, तिहु, टिपकाई, उदलगुरी, बोंगाईगांव, जगी रोड, फुरकटिंग और टाटीबहार, नारंगी।

बिहार (59) : अभयपुर, अनुग्रह नारायण रोड, आरा, अररिया, अररिया कोर्ट, बैरगनिया, बाजपट्टी, बरौनी जंक्शन, बरसोई जंक्शन, बेगूसराय, भागलपुर, बिहारशरीफ, छपरा जंक्शन, डुमरा, डुमरांव, फोर्ब्सगंज, गढ़पुरा, घोघा, घोड़ा सहान, हसनपुर रोड, हिसुआ, जमालपुर, जनकपुर रोड, जहानाबाद, जिरादई, जोगबनी, कहलगांव, खरिक, किशनगंज, मधुबनी, महेशखुट, मानसी जं., नारायणपुर, नौगछिया, नवादा, पटना साहिब जं., रफीगंज, सहपुर पटोरी, सलाउना, शेखपुरा, शिवनारायणपुर, सासाराम जं., सिमराहा, सिमरी बख्तियारपुर, सीतामढ़ी, सुल्तानगंज, सुपौल, तेहटा, ठाकुरगंज, थानाबीहपुर, वारसालीगंज. चकिया, मखदुमपुर, बक्सर, जमुई, नरकटियागंज, हरिनगर और बाघा, धरहरा

छत्तीसगढ़ (17) : अंबिकापुर, बलपुर, भिलाई पावर हाउस, चंपा, चिरीमिरी, डोंगरगढ़, कोरबा, महासमुंद, मनेंद्रगढ़, रायगढ़, रायपुर, राजनांदगांव, दुर्ग, जगदलपुर, तिल्दा, किरोड़ीमल नगर और उसलापुर

दिल्ली (04) : दिल्ली किशनगंज, सब्जी मंडी। बिजवासन और शाहाबाद मोहम्मदपुर।

गोवा (02) : वास्को-डी-गामा और सैनवोर्डेम कर्कोरेम

गुजरात (32) : अंबली रोड, बेचाराजी, भक्तिनगर, भंवड़, भटारिया, दाहोद, गांधीधाम, गांधीग्राम, हिम्मतनगर, जामनगर, काडी, खंबलिया, किम, कोसांबा, लालपुरजाम, मणिनगर, नवसारी, न्यू भुज, ओखा, पालनपुर, साबरमती, सिद्धपुर, उधना, ऊना, उंजा, वडनगर, विजापुर, विसनगर, व्यारा, गांधीनगर कैपिटल, साबरमती बीजी और पाटन

हरियाणा (16)

अंबाला कैंट जं., बहादुरगढ़, भिवानी, गुड़गांव, कलानौर, करनाल, कोसली, कुरुक्षेत्र, पलवल, पानीपत, रोहतक, सिरसा, सोनीपत, रेवाड़ी, फरीदाबाद और महेंद्रगढ़,

हिमाचल प्रदेश (02) : ज्वालाजी (ज्वालामुखी रोड) और ऊना हिमाचल

जम्मू और कश्मीर (05) : हीरानगर, कठुआ, उधमपुर और श्री माता वैष्णो देवी कटरा, जाट

झारखंड (30) : बोकारो, चक्रधरपुर, चाकुलिया, चंद्रपुरा, चित्तराजन, डाल्टनगंज, देवघर, धनबाद, दुमका, गढ़वा रोड जं., गोमोह जं., जगदीशपुर, जसीडीह, लोहरदगा, मधुपुर, पाकुड़, पारसनाथ, फुसरो, रांची, साहिबगंज, सिल्ली, टाटानगर, तोरी, लातेहार, बरवाडीह, बोकारो थर्मल, कतरसगढ़, गिरिडीह, गुमिया और गोला रोड

कर्नाटक (44) : अलमट्टी, बादामी, बीदर, बेल्लारी, चामराजनगर, गडग, गुलबर्गा, हावेरी, लोंडा, वाडी, बागलकोट, चिकबल्लापुर, चिंतामणि, देवनहल्ली, डोडबल्लापुर, गौरीबिदनूर, गोकक रोड, हुबली, कबाकपुत्तूर, कोलार, कोप्पल, नंजनगुड टाउन, सांब्रे, सिदलागट्टा, श्रीनिवासपुरा, येलहंका जं., होल नरसीपुर, बेलगाम, कुडाची, उग्र खुर्द, नेरलकट्टे, बंतावाला, सुब्रमण्य रोड, बीजापुर, मैंगलोर जं., दारोजी, मल्लापुर, गुडगेरी, रायचूर, दावणगेरे और हरिहर, तुमकुर, कलास और धारवाड़

केरल (77) : अलाप्पुझा (अलेप्पी), अलुवा, अंबालापुझा, कलाडी के लिए अंगमाली, औवनेस्वरम, बडागारा, चलकुडी, चंगनाचेरी, चारवथुर, चेंगन्नूर, चेरथला (शेरतलई), चिंगवनम, धनुवाचपुरम, एताकोट, एट्टुमानूर, फिरोके, गुरुवायरु, हरिपद, इरिनजलकुडा, जगन्नाथ टेंपल गेट, कान्हांगद, कांजीरामित्तम, कन्नपुरम, कन्नूर, करुणागपल्ली, करुवट्टा, कासरगोड, कायनकुलम जं, कजकुट्टम, कोचुवेली, कोल्लम (क्विलोन), कोटिकुलम, कोट्टारकरा, कोझीकोड, कुरुप्पंतारा, मंजेश्वरम, मवेलिकारा, निलाम्बुर रोड, निलेश्वर, ओचिरा, कोट्टायम, मरारिकलम, मुलांतुरुट्टि, पप्पिनिसेरी, पय्यानुर, परप्पनगडी, परवूर, पट्टीक्कडु, पयंगडी, पिरावम रोड, पुनालुर, क्विलंडी, सस्थानकोट्टा, थलास्सेरी (टेलीचेरी), तिरूर, तिरुवल्ला, तिरुविझा, त्रिचुर (त्रिसूर), त्रिपुनित्तुरा, वैकम रोड, वलपट्टनम, वयलार, वेल्लरक्कड़, एर्नाकुलम टाउन, चिरायिंकिल, कन्नूर दक्षिण, कुंबला, त्रिकरपुर, बेकल फोर्ट, कुंदरा, मुलंगुन्नाथु-कावु, वल्लथोल नगर, ओट्टापलम, तिरुवनंतपुरम सेंट्रल, अंगदीपुरम, केनियापुरम

मध्य प्रदेश (44) : अनूपपुर, अशोक नगर, बीना, बायोरा राजगढ़, बिड़ला नगर, बुरहानपुर, छिंदवाड़ा, डबरा, दामोह, गडरवारा, घटेरा, ग्वालियर, इंदौर, इटारसी, जबलपुर, जुन्नोरदाओ (जमाई), करेली, कटनी मुरवारा, खजुराहो, खंडवा, मदन महल, मैहर, मकरोनिया, मेघनगर, परसिया, पथरिया, पिपरिया, रतलाम, रूठिया, सतना, सौगोर, शहडोल, शिवपुरी, सिंगरौली, उज्जैन, उमरिया, रीवा, बांदकपुर, हाउबाग और भेराघाट, टीतमगढ़, बालाघाट, मदसौर और सिहोरा रोड

महाराष्ट्र (108) : अहमदनगर, अजनी, अमलनेर, अंबरनाथ, अंधेरी, बांद्रा, बेलापुर, भांडुप, भायंदर, बोरीवली, चर्नी रोड, चेंबूर, चिंचवाड़, चर्चगेट, करी रोड, दादर (सीआर), दादर (डब्ल्यूआर), दहानू रोड, दहिसर, देवलाली, धुले, दिवा, डॉक यार्ड, डोंबिवली, गंगाखेड़, घाटकोपर, गोरेगांव, हिन्गोली, इतवारी, जलगाँव, जालना, जयसिंहपुर, कलमेश्वर, कैम्पटी, कांदिवली, कराड, कर्जत, कसारा, कटोल, खड़की, खोपोली, किंग्स सर्कल, कोल्हापुर, कोपरगाँव, कुर्ला, लातूर, लोअर परेल, मलाड, मलकापुर, मरीन लाइंस, माटुंगा, मीरा रोड, मिराज, मुलताई, मुलुंड, मुंबई सेंट्रल (लोकल), नागरसोल, नाहूर, नायगांव, नंदुरा, नंदुरबार, नारखेड़, नासिक रोड, निंभोरा, पांढुरना, पनवेल, परभणी, परली वैजनाथ, पोकर्णी नरसिम्हा, पुंताम्बा, पूर्णा, रामटेक, सांगली, सानपाड़ा, सांताक्रूज, सफल, सावड़ा, सेवरी, शिर्डी, शिवाजीनगर, सोलापुर, तिलकनगर, तुरभे, उदगीर, उल्हासनगर, उमरेर, वनगांव, वरनगांव, वाशी, विराद, विश्रामबाग, वर्धा, धरनगांव, मनमाड, अमरावती, औरंगाबाद, ओढ़ा, गोंदिया, भंडारा रोड, दौंड, बारामती, नीरा, माजरी, खपरी, सतारा और राहुरी, वाशिम और धर्माबाद

नागालैंड (01) : दीमापुर

ओडिशा (46) : अंगुल, बलांगीर, बालासोर, बालूगांव, बांसपानी, बरगढ़ रोड, बारीपदा, बेलपहाड़, भद्रक, ढेंकनाल, डोइकल्लू, जाजपुर-क्योंझर रोड, जाखोपुरा, जलेश्वर, झारसुगुड़ा, कंताबंजी, केसिंगा, खरियार रोड, खुर्दा रोड, कोरापुट, लांजीगढ़ रोड, लपंगा, मेरामंडली, मुनिगुडा, पारादीप, रघुनाथपुर, रैरंगपुर, रायगड़ा, रेंगाली, राउरकेला, सोरो, तालचेर, टिटलागढ़ जं. राज अठगढ़, धनमंडल, ब्रह्मपुर, छत्रपुर, संबलपुर, बस्ता, बरपाली, खलीकोट और गंजम, सालेगांव, लोसिंघा, देवगांव रोड और दमनजोड़ी

पुडुचेरी (02) : माहे और पुडुचेरी

पंजाब (32) : अबोहर, आनंदपुर साहिब, बरेटा, बरनाला, बठिंडा, डेरा बाबा नानक, धुरी जं., फाजिल्का, फरीदकोट, गिद्दड़बाहा, गुरदासपुर, होशियारपुर, खन्ना, लहरगागा, मलेर कोटला, मानसा, मौर, मोगा, मुक्तसर, फगवाड़ा, राजपुरा, संगरूर, सुनाम, तपा, तरणतारन, ढंडारी कलां, बठिंडा कैंट, जालंधर कैंट, पठानकोट, मोहाली, बटाला और टांडा उर्मर

राजस्थान (40) : आबू रोड, अलवर, अनूपगढ़, बालोतरा, बाड़मेर, चित्तौड़गढ़ जं., छोटी खाटू, चूरू, दौसा, धौलपुर, जयपुर, जैसलमेर, जालोर, जोधपुर, खैरथल, कोलायत, लाडनूं, लालगढ़, लुनकरणसर, नोहर, नोखा, राजगढ़, रायसिंह नगर, रतनगढ़, रिंगस, सादुलपुर, सरदार शहर, सवाई माधोपुर, श्री डूंगरगढ़, सुजानगढ़, तहसील भद्रा, गोगामेरी, श्री कर्णपुर, दुर्गापुरा, डाकनिया तलाव और श्री विजयनगर, मावली जं., ब्यावर, मारवाड़ जं. और नीमका थाना

तेलंगाना (27) : आदिलाबाद, आलेर, भोंगिर, घनपुर, जम्मीकुंटा, जंगों, कामारेड्डी, करीमनगर, काजीपेट, खम्मम, लिंगमपल्ली, महबूबनगर, मलकजगिरी, नलगोंडा, निजामाबाद, रघुनाथपल्ली, रामगुंडम, शंकरपल्ली, तंदूर, विकाराबाद, वारंगल, जहीराबाद (मेदक), बसर, मौला अली, नागलपल्ली, केसमुद्रम और गडवाल।

तमिलनाडु (49) : अरक्कोनम, अरियालुर, अवडी, चेन्नई बीच, चेन्नई चेटपेट, चेन्नई पार्क, क्रोमपेट, कोयंबटूर जंक्शन, होसुर, कन्याकुमारी, कोरुक्कुपेट, कुदलनगर, कुंभकोणम, मनावुर, मयिलादुतुरई, नागपट्टिनम, नागोर, पंबन, पिलामुडु, पेरंबूर कैरिज वर्क्स, पुडुकोट्टई, राजपलायम, रोयापुरम, सलेम, शंकरनकोइल, सेनजी पनमबक्कम, श्रीरंगम, श्रीविल्लिपुत्तूर, सेंट थॉमस माउंट, तांबरम, टेनी, तेनकासी जंक्शन, तिरुवेरुम्बुर, तिरुचिरापल्ली जं., तिरुनिनरावुर, तिरुप्पुर, तिरुवलांगडु, तिरुवल्लुर, तिरुवरुर, तूतीकोरिन, विरुदुनगर, वृद्धदुचलम जं., कदयनल्लूर, कांचीपुरम, थिरुप्परनकुंद्रम, तिरुमंगलम, इरुगुर काटपाडी, वेल्लोर छावनी।

त्रिपुरा (01) : पचारथल।

उत्तर प्रदेश (152) : आचार्य नरेंद्रदेव नगर, अछनेरा, अलीगढ़, अमेठी, अमरोहा, अतर्रा, अयोध्या, आजमगढ़, बभनन, बहराइच, बाला मऊ, बलिया, बलरामपुर, बांदा, बानी, बाराबंकी, बड़ागांव, बरहनी, बस्ती, भदैयां, भरत कुंड, भरवारी, भूतेश्वर, बिजनौर, बिलासपुर रोड, बिलहौर, बिलहर घाट, बुढवल, चंदौली मझवार, चंदौसी, चांदपुर सियाउ, चित्रकूट धाम कर्वी, चोला, चौरी-चौरा, दपसौरा, दारागंज, दरियाबाद, देवरिया सदर, दिलदारनगर, जौनपुर, फर्रुखाबाद, फतेहपुर, फतेहपुर, सेकरी, फिरोजाबाद, गौरा, गौरी गंज, गाजियाबाद, गाजीपुर सिटी, गोंडा जं., हैदरगढ़, हापुड़, हरदोई, जैस, जखनिया, जौनपुर सिटी, झूंसी, कालपी, खलीलाबाद, कुलपहाड़, खुर्जा जं., किरौली, कुंडा हरनाम गंज, लालगंज, लाल गोपालगंज, ललितपुर, मगहर, मानिकपुर, मऊ जं., मेरठ कैंट, मेरठ सिटी, मिर्जापुर, मोठ, पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., मुंडेरवा, मुसाफिर खाना, मुजफ्फर नगर, नैमिषारण्य, नैनी, नौगढ़, नौतनवा, उरई, पडरौना, परतापुर, पत्रंगा, फूलपुर, पीलीभीत जं., पोखरायण, प्रतापगढ़, प्रयाग, प्रयाग घाट, रुदौली, रूरा, सादत, सकोटी टांडा, सलेमपुर जं., संडीला, शाहगंज, शामली, शेहरथगढ़, शिकोहाबाद, सिराथू, सीतापुर, सीतापुर छावनी, सोहावल, सुल्तानपुर, टूंडला, ऊंचाहार, वृंदाबन रोड, मंडुआडीह, वाराणसी शहर, बरहज बाजार, नगीना, नजीबाबाद, सोहरा, हाथरस, लखीमपुर, कर्नल गंज, फैजाबाद, उन्नाव, भदोही, विंध्याचल, आंवला, चनेहटी, लंभुआ, कोइरीपुर, डभौरा, गोसाईं गंज, बड़ौत, बागपत रोड, खेकरा, उस्काबाजार, गोरखपुर, फाफुंड, फतेहगढ़, फतेहगढ़, महमूदाबाद, अवध, रसूलपुर, मोदीनगर, बेलथरा रोड, भटनी जं., भदोही, मनीराम, पिपराइच, सुरैमनपुर, करीमुद्दीनपुर, चितबारगांव, गौर, फाफामऊ, रामचौरा (हाल्ट), बम्हरौली, इटावा, गोवर्धन और गोमती नगर।

उत्तराखंड (08) : डोईवाला, काठगोदाम, कोटद्वार, रामनगर, ऋषिकेश, रुड़की और हर्रावाला, रायवाला

पश्चिम बंगाल (383) : आदिसप्तग्राम, आद्रा, अग्रपारा, अहमदपुर, अकरा, अलीपुरद्वार, अलीपुरद्वार कोर्ट, अलीपुरद्वार जंक्शन, अलुआबारी रोड, अंबलग्राम, अंबारी फलकता, अंबिकाकलना (कलना), अमता, अनारा, अंडाल, अंदुल, अरंघटा, आसनसोल, अशोकनगर रोड, अजीमगंज सिटी, अजीमगंज जं., बड़कुल्ला, बागबाजार, बाघाजतिन, बगडोगरा, बगनान, बगुला, बहादुरपुर, बहारू, बहिरगाछी, बहिरपुया, बैद्यबती, बखराबाद, बालागढ़, बलरामबती, बालगोना, बलिचक, बल्लालपुर, बल्ली, बालीगंज जं., बल्लीघाट, बालुरघाट, बामनगाछी, बामनग्राम हॉल्ट, बामनहाट, बनरहाट, बंदेल, बनेश्वर, बांका पासी, बंकिमनगर, बांकुर, बानपुर, बांसबरिया, बंस्ताला, बाराभूम, बराकर, बड़ानगर, बारासात जं., बर्धमान, बरगछिया, बैरकपुर, बरुईपारा, बरुईपुर जं., बशीरहाट, बासुदेवपुर बासुलडांगा, बतासी, बथनाकृत्तिबा, बौरिया, बीबीडी बैग, बेगमपुर, बेलाकोबा, बेलानगर, बेलडांगा, बेलेरहाट, बेलघरिया, बेलियाघाटा रोड, बेलियाटोर, बेलूर, बेलूर मठ, बरहामपुर कोर्ट, बेतबेरिया घोला, बेथुआडाहेरी, भद्रेश्वर, भवरगोला, भसीला, भाटर, भेडिया (औसग्राम), भीमगढ़, बिधाननगर, विद्याधरपुर, बिमान बंदर, बीरा, बिरती, बीरनगर, बिरशिबपुर, बिष्णुपुर, बिसोरेपारा कोडलिया, बोइनची, बोलपुर, बनगांव, ब्रेस-ब्रिज, बृंदाबनपुर, बजबज, बुनियादपुर, बर्नपुर, बुरोबाजार, कैनिंग, चकदाहा, चंपाग्राम, चांपा पुकुर, चंपाहाटी, चंचाई, चंदननगर, चंदनपुर, चांदपारा, चंद्रकोना रोड।, चंगराबंधा, चास रोड, चतरा, चतरहाट, चेंगैल, छतना, चौरीगाचा, चुचुरा, कोंटाई रोड। (बेल्दा), कूचबिहार, दैनहाट, दक्षिणेश्वर, दलकोल्हा, दानकुनी, दंतन, दार्जिलिंग, दासनगर, देबग्राम, देउला, देउल्टी, ढकुरिया, धनियाखली, धपधोपी, धात्रीग्राम, धुबुलिया, धुलबारी, धूपगुड़ी, डायमंड हार्बर रोड, दिनहाटी, डोम्मुर, दुबराजपुर, दमदम कैंट, दमदम जं., डुमुरदाहा, दुर्गाचक, दुर्गानगर, दुर्गापुर, दत्तपुकुर, ईडन गार्डन, एकलाखी, फलकता, फुलेश्वर, गदाधरपुर, गलसी, गंगनापुर, गरबेटा, गरिया, गजोल, गेदे, घोकसडांगा, घोरगता, घुम, घुटियारी शरीफ, घुरगटा गिधनी, गिरिमैदान, गोबरडंगा, गोबरा, गोकुलपुर, गोपालनगर, गौरीनाथधाम, गुमा, गुप्तीपारा, गुरप, गुशकोरा, हबीबपुर, हाबरा, हल्दीबाड़ी, हलीशहर, हरिपाल, हरिश्चंद्रपुर, हरीशदादपुर, हसीमारा, हसनाबाद, हौर, हौरा रोड, हिजली, कलाईकुंडा, कालयिनी, होतार, हृदयपुर, इच्छापुर, जादवपुर, जगद्दल, जलपाईगुड़ी, जलपाईगुड़ी रोड, जमुरिया, जनाई रोड, जांगीपुर रोड, जेसोर रोड, झंटीपहाड़ी, झारग्राम, जियागंज, जिरात, जोयचंडीपहाड़, जोयनगर मोजिलपुर, कैकला, काकद्वीप, कलिकापुर कालीनगर, कलिना रायनपुर जं., कालियागंज, कल्याणी, कल्याणी घोषपारा, कल्याणी सिलपंचल, कल्याणपुर, कामाख्यागुरी, कमरकुंडु, कांचरापाड़ा, कांकिनारा, कांठी, काशीनगर, कटवा, खगराघाट रोड, खल्तीपुर, खाना, खरदाह, खेमासुली, खिदिरपुर, किरनाहर, कोलाघाट, कोनहार कोटशिला, कृष्णानगर सिटी जं., कुलगछिया, कुलपी, कुल्टी, लबपुर, लेक गार्डन, लक्ष्मी कांटापुर, लालगोला, लिलुआ, लोहापुर, लोकनाथ, मदनपुर, मदारीहाट, मधुसूदनपुर, मध्यमग्राम, मगरहाट, महिसदल, मझदिया, माझेर ग्राम, मालतीपुर, मालदा कोर्ट, मालदा टाउन, मल्लिकपुर, मणिग्राम, मानकुंडु, मासाग्राम, मसलंदापुर, माटीगारा, मेचेडा, मेमारी, मिदनापुर, मोलरपुर, मौरीग्राम, मुरागाचा, मुरराई, मुर्शिदाबाद, नवद्वीप घाट, नबद्वीपधाम, नबाग्राम, नागरकाटा, नैहाटी जं., नलहाटी, नालिकुल, नामखाना, नंदकुमार, नारायणगढ़, नारायण पाकुरिया मुरैल, नरेंद्रपुर, नसीबपुर, नेकुरसेनी, नेत्रा, न्यू अलीपुर, न्यू अलीपुरद्वार, न्यू बराकपुर, न्यू कूचबिहार, न्यू डोमोहानी, न्यू फरक्का, न्यू मैनागुरी, निश्चिंदपुर, ओल्ड मालदा, पगलाचंडी, पलासी, पल्ला रोड, पालपारा, पलसित, पलटा, पानागढ़, पांडवेश्वर, पांडुआ, पंजीपारा, पंसकुरा, पार्क सर्कस, पतिपुकुर, पटुली, फुलिया, पिर्तला, प्रांतिक, प्रिंसपघाट, पूर्वस्थली, पुरुलिया, राधामोहनपुर, रायगंज, राजबंध, राजगोड़ा, रामपुरघाट, राणाघाट, रानीगंज, रिमाउंट रोड, रिशरा, रूपनारायणपुर, रसूलपुर, सागरडीघी, सैंथिया, शक्तिगढ़, सालनपुर, सालार, सालबोनी, समसी (चंचोल), समुद्रगढ़, संग्रामपुर, संकरैल, संतालडीह, संतोषपुर, सरडीहा, शालीमार, शंतिपुर, श्योराफुली, श्यामनगर, सिलीगुड़ी जंक्शन, शिमलागढ़, सिमुराली, सिंगूर, सीतारामपुर, सिउरी, सिवोक, सोदपुर, सोनाडा, सोनामुखी, सोनारपुर, सोंडालिया, श्रीरामपुर, सुभाषग्राम, सुकना, सूर्यपुर, तकी रोड, ताला, तलड़ी, तलित, तमलुक, तारकेश्वर, तारापीठ रोड, ठाकुरनगर, टिकियापारा, तिलडंगा, टीटागढ़, टॉलीगंगे, ट्रिबेनी, उलुबेरिया, उत्तरपारा, नक्सलबाड़ी और राधिकापुर

इकोनॉमी क्लास कोच आरंभ किया जाना

रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला ने 31 मई, 2021 को 15 एसी थ्री-टियर इकोनॉमी श्रेणी के सवारी डिब्बों का पहला रेक तैयार किया है। मुख्य विशेषताएं और मुहैया कराई गई बेहतर सुविधाएं निम्नानुसार हैं:-

- एसी थ्री-टियर सवारी डिब्बों के 72 बर्थों की तुलना में 83 बर्थों की क्षमता।
- दिव्यांगजन अनुकूल टॉयलेट की व्यवस्था।
- प्रत्येक बर्थ के लिए अलग-अलग एसी वेंट मुहैया कराने के लिए एसी डकटिंग का नया डिजाइन।
- सीटों और बर्थों का बेहतर तथा मॉड्यूलर डिजाइन, फोल्डेबल स्नैक टेबल एवं वॉटर होल्डर।
- अलग रीडिंग लाइट, यूएसबी पोर्टों के साथ मोबाइल चार्जिंग प्वाइंट।
- ईएन45545-2 एचएल 3 मानकों के अनुसार बेहतर फायर सेफ्टी फर्निशिंग।



परिचालनिक व्यवहार्यता, यातायात पैटर्न एवं चल स्टॉक की उपलब्धता के अध्यधीन भारतीय रेल पर किफायती श्रेणी के सवारी डिब्बों को शुरू किया जा रहा है। 15 मार्च, 2022 को भारतीय रेल पर ऐसे 65 सवारी डिब्बों को शामिल किया गया है।

- सरकार ने जापान सरकार से वित्तीय और तकनीकी सहायता के साथ मुंबई और अहमदाबाद के बीच उच्च गति रेल गलियारे को स्वीकृत किया है, जिसमें अत्याधुनिक चल स्टॉक होगा।
- वंदे भारत गाड़ी के 02 रेक चल रहे हैं तथा 44 रेक निर्माणाधीन हैं। ये गाड़ियां ऑनबोर्ड इंफोटेनमेंट एवं जीपीएस आधारित यात्री सूचना प्रणाली, सीसीटीवी, रिट्रैक्टबल कोच फुटस्टेप के साथ ऑटोमैटिक स्लाइडिंग डोर और जीरो डिस्चार्ज वैक्यूम आधारित बॉयो-टॉयलेट जैसी यात्री सुविधाओं के साथ पूर्ण वातानुकूलित उच्च गति वाली गाड़ियां हैं।

मालगाड़ियों का परीक्षण

भारत से बांग्लादेश और नेपाल तक मालगाड़ियां पहले ही चल रही हैं। ऐसी गाड़ियों का परिचालन व्यापार की मांग और इन देशों में मालगाड़ियों को प्राप्त करने और संभालने की क्षमता पर निर्भर करता है। यद्यपि रेल के जरिए व्यापार की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए कोई निर्धारित लक्ष्य नहीं है, तथापि बांग्लादेश और नेपाल के लिए मालगाड़ियां बढ़ाने के लिए कई उपाय किए गए हैं, जैसे मालगाड़ियों को चलाने के लिए इंटरचेंज प्वाइंट में वृद्धि करना कार्गो की विविधता तथा विभिन्न प्रकार के मालडिब्बों का उपयोग करना; इन देशों में रेल अवसंरचना के विकास में सहायता करना तथा मालगाड़ियों के परिचालन के लिए रेल सेवा करारों में आशोधन करना आदि। ऐसी गाड़ियों का ब्यौरा निम्नानुसार हैं:-

वर्ष	मालगाड़ियों की संख्या	
	बांग्लादेश	नेपाल
2019-20		1128
2020-21	1335	1015
2021-22 (फरवरी, 2022 तक)	1395	98

मिशन 25 टन

तीन नए मालडिब्बे (बीएलसीएस, बीओएक्सएनएस और बीओबीएसएनएस) को 25 टन धुरा भार के साथ डिजाइन किया गया है, जिनकी 22/22.9 टन धुरा भार वाले मालडिब्बों की तुलना में वहन क्षमता लगभग 12% से 17% अधिक है। इसके अतिरिक्त, चार मालडिब्बों (बीओबीएसएनएम1, बीओएक्सएनएचएल 25 टन, बीओवाईईएल व बीओएक्सएनईएल) में धुरा भार में 25 टन तक वृद्धि की गई है, जिसके परिणामस्वरूप पूर्ववर्ती कम धुरा भार (22.82/22.9 टन) मालडिब्बों की तुलना में वहन क्षमता में लगभग 12% से 14% की वृद्धि हुई है।

भारतीय रेल राज्यवार आधार पर गाड़ी सेवाएं परिचालित नहीं करती है क्योंकि रेलवे नेटवर्क राज्य की सीमाओं के आर-पार फैला हुआ है। बहरहाल, 'मिशन रफ्तार' के भाग के रूप में, 414 यात्री गाड़ी सेवाओं को तेज गति से चलने वाले मेमू रेकों के साथ बदला गया है।

रेल कार्गो की सम्हलाई के लिए अतिरिक्त टर्मिनलों के विकास में उद्योग से निवेश बढ़ाने के उद्देश्य से, एक नई 'गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल्स (जीसीटी)' नीति 15.12.2021 को शुरू की गई है और अगले तीन वित्त वर्षों में 100 गति शक्ति कार्गो टर्मिनलों (जीसीटी) को शुरू करने का लक्ष्य है। इन टर्मिनलों को गैर-रेलवे भूमि के साथ-साथ आंशिक और पूर्णतया रेलवे भूमि पर निर्मित किया जाएगा। उद्योग की मांग और कार्गो यातायात की संभाव्यता के आधार पर जीसीटी के स्थान पर निर्णय लिया जा रहा है। अभी तक जीसीटी को विकास के लिए लगभग 71 स्थानों की अनंतिम रूप से पहचान की गई है और कुछ स्थानों को संबंधित पार्टियों की प्रतिक्रिया के अनुसार बाद में जोड़ा/हटाया जा सकता है। इन टर्मिनलों के ले-आउट पर संबंधित पार्टियों द्वारा निर्णय लिया जाएगा जो यातायात की संभावित मात्रा, परेषण के प्रकार और स्थान की उपलब्धता आदि पर निर्भर करेगा।



भारत की तकनीकी
शक्ति का एक प्रमाण

रेलवे को अधिक सुरक्षित और अधिक कुशल बनाने की दिशा में मील का पत्थर

गौरव कृष्ण बंसल
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

लगभग 169 साल पहले बोरीबंदर और ठाणे के बीच महज 34 किलोमीटर की यात्रा के रूप में जो सफर शुरू हुआ था, वह अब दुनिया के चौथे सबसे बड़े रेल नेटवर्क के रूप में विकसित हो गया है, जो दुनिया के कुछ सबसे कठिन इलाकों, मीलों-मील खुली जमीनों और इस क्षेत्र के कुछ सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में भी होकर गुजरता है।

लाखों यात्रियों और लाखों टन माल ढुलाई करती हजारों द्रुत गतिमान ट्रेनें भारत के विविध और अक्सर दूर-दराज के क्षेत्रों को जोड़ती हैं। देश भर में अपनी यात्रा में ये ट्रेनें अक्सर क्रॉसिंग और जंक्शनों पर एक-दूसरे के करीब आती हैं और प्रतिकूल मौसम की स्थिति का सामना करती हैं जो अक्सर कम दृश्यता जैसी चुनौतियों के रूप में सामने आती हैं। ये सभी कारक पूरी सुरक्षा के साथ ट्रेन संचालन को बेहद चुनौतीपूर्ण बनाते हैं।

रेल सुरक्षा प्रणालियों का विकास

रेलवे सिग्नलिंग ट्रेनों की आवाजाही को नियंत्रित करने के लिए उपयोग की जाने वाली बुनियादी सुरक्षा प्रणाली है। ट्रेन सुरक्षा प्रणाली के दो प्रमुख भाग होते हैं। ट्रेन का पता लगाना एवं आवाजाही प्राधिकार। जहां ट्रेन का पता लगाना यह जानने के लिए है कि ट्रेन कहां है। आवाजाही प्राधिकार ट्रेन को यह बताने के बारे में है कि वह कब चल सकती है और कितनी दूर जा सकती है। ट्रेन के संचालन की सुरक्षा के लिए ट्रेन सुरक्षा प्रणालियाँ इन दो भागों का उपयोग करती हैं।

परंपरागत रूप से सिग्नलिंग सिस्टम ट्रेन चालकों पर निर्भर होते हैं जो ट्रैक के किनारे लगे सिग्नलों के माध्यम से उन्हें दिए गए निर्देशों पर प्रतिक्रिया करते हैं और इन निर्देशों के अनुरूप ट्रेनों की गति को नियंत्रित करते हैं। हालांकि, तथ्य यह है कि लोको-पायलट ही एक बिंदु है जहां एक मानवीय त्रुटि संभावित रूप से दुर्घटना का कारण बन सकती है। इसने यह आवश्यक बना दिया कि एक ऐसी प्रणाली विकसित की जाए जो इस कारक के कारण दुर्घटना की संभावना को कम या पूरी तरह से समाप्त कर दे।

सिग्नलों द्वारा दिए गए संकेतों पर प्रतिक्रिया करने में, गति सीमाओं का पालन करने में त्रुटि से संभावित रूप से दुर्घटनाएं हो सकती हैं। हालांकि सिग्नलिंग और रूटिंग गियर की मजबूत इंटरलॉकिंग प्रणाली ट्रेनों को गलत ट्रैक पर जाने से बचाती है, लेकिन इन प्रणालियों के खराब होने की दुर्लभ स्थिति में ट्रेनें एक ही ट्रैक पर आमने-सामने आ सकती हैं जोकि एक बार फिर असुरक्षित स्थिति पैदा कर रहा है। इस प्रकार जोखिमों को कम करने की निरंतर आवश्यकता के जवाब में ड्राइवर चेतावनी उपकरणों और सिग्नल कमांड प्रवर्तन प्रणालियों के विभिन्न रूपों को विकसित किया गया है। इन्हें सामूहिक रूप से 'ट्रेन सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली' के रूप में जाना जाता है।

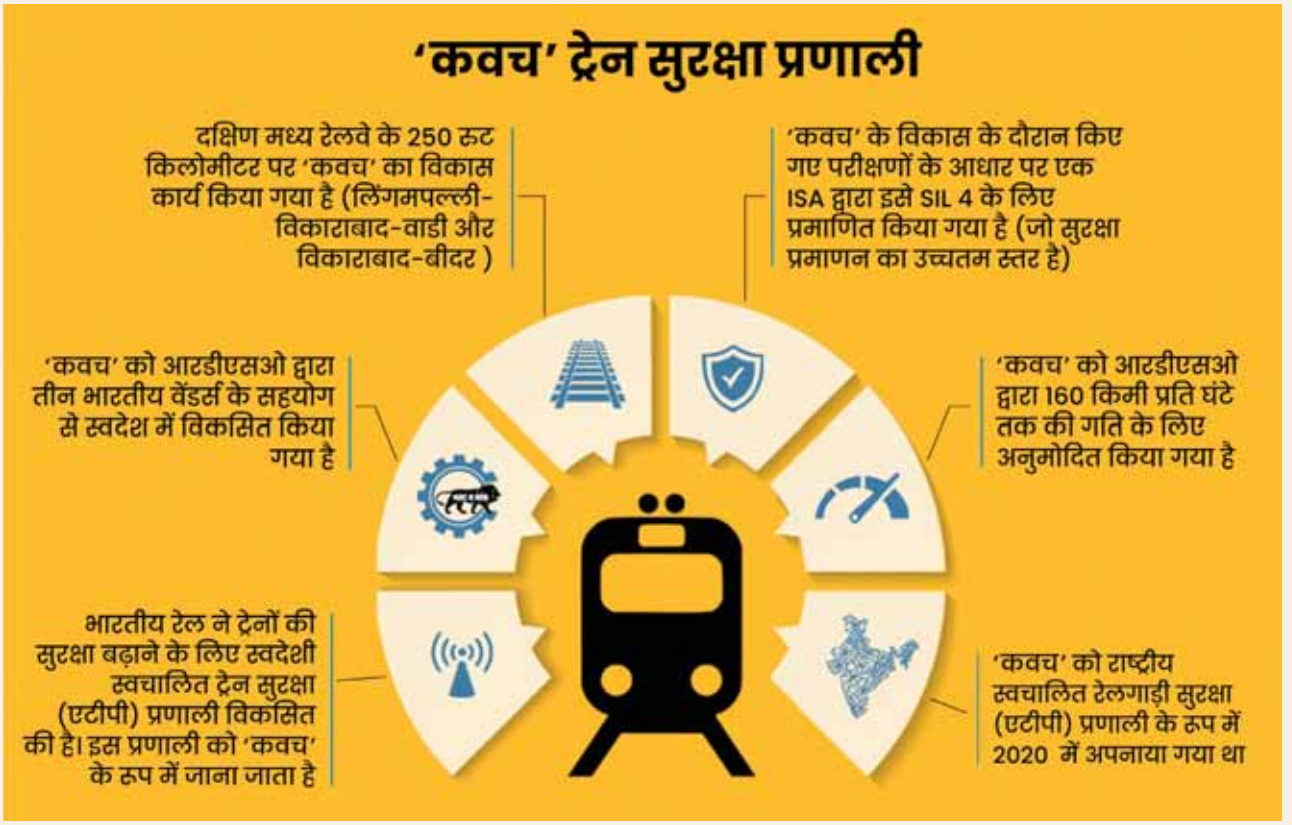
भारतीय रेल अपनी ट्रेन सुरक्षा प्रणालियों को विकसित करने का प्रयास कर रही है। मुंबई उपनगरीय इलाके के लिए वर्ष 1986 में सहायक चेतावनी प्रणाली (ए.डब्ल्यू. एस.) को अपनाया गया था, जिसे 413 आरकेएम पर लागू किया गया था।

दूसरी कार्यात्मक प्रणाली ट्रेन सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली (टी.पी.डब्ल्यू.एस.), लेवल-1 की एक यूरोपीय ट्रेन नियंत्रण प्रणाली है, जिसे 350 आरकेएम पर लागू किया गया था। यह प्रणाली वर्ष 2008 से 2015 तक बनी रही। 'कवच' इस प्रयास में तकनीकी प्रगति का अगला स्तर है।

एक भारतीय तकनीकी चमत्कार

भारतीय रेल द्वारा प्रवीणता से विकसित 'कवच' एक उन्नत ट्रेन स्वचालित सुरक्षा प्रणाली है जिसे अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन (आरडीएसओ) द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है।

'कवच' के विकास की परियोजना वर्ष 2013-14 में दक्षिण मध्य रेलवे के 250 आरकेएम खंड पर शुरू की गई थी। प्रारंभिक विकास के बाद यात्री ट्रेनों पर फील्ड परीक्षण किए गए। चरणबद्ध तरीके से कठोर परीक्षण पूरे किए गए और वर्ष 2018-19 में एक स्वतंत्र सुरक्षा मूल्यांकनकर्ता द्वारा सुरक्षा मूल्यांकन किया गया। सुरक्षा मूल्यांकन के बाद ही एब्सोल्यूट ब्लॉक सिस्टम में 110 किमी/घंटा की रफ्तार को मंजूरी दी गई थी।



इस प्रणाली को निरंतर और विकसित किया गया और वर्ष 2020-21 में, कवच को आरडीएसओ द्वारा 160 किमी / घंटा के लिए और स्वचालित ब्लॉक सिस्टम में उपयोग के लिए मंजूरी दी गई।

ब्लॉक सिग्नलिंग तकनीक में बार-बार सफल परीक्षणों से प्राप्त विश्वास, और आईईसी 61508 मानक या एसआईएल के आधार पर कार्यात्मक सुरक्षा मानकों का मूल्यांकन करने के बाद उच्चतम सुरक्षा अखंडता स्तर प्रमाणपत्र एसआईएल-4 के साथ फरवरी 2021 में कवच को उच्च घनत्व नेटवर्क और अत्यधिक उपयोग नेटवर्क (एचडीएन और एचयूएन) पर शुरू किया गया था।

यहां यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि एसआईएल प्रमाणीकरण एक सुरक्षा उपकरण कार्य द्वारा प्रदान किए गए जोखिम में कमी की मात्रा को मापने का एक साधन है। चार एसआईएल को परिभाषित किया गया है, जिसमें एसआईएल 4 सबसे भरोसेमंद है।

नवाचार में निहित उत्कृष्टता

कवच एक दोतरफा तंत्र है जो पटरी के किनारे लगे उपकरणों और ट्रेन में लगे उपकरणों से प्राप्त जानकारी को एकीकृत करता है।

पटरी के किनारे लगे उपकरणों में अनिवार्य रूप से एक स्टेशन कवच यूनिट, ऑन-ट्रैक आरएफआईडी टैग और यूएचएफ रेडियो सिस्टम सहित कई स्थिर इकाइयां हैं।

ट्रेन में लगे उपकरणों में लोको कवच, ड्राइवर मशीन इंटरफेज़ (डीएमआई) और आरएफआईडी रीडर शामिल हैं।

स्टेशन कवच, सिग्नलिंग और लोकोमोटिव इनपुट एकत्र करता है और लोकोमोटिव पर ऑन-बोर्ड उपकरण में स्थापित लोको कवच को आवाजाही की जानकारी पहुंचाता है।

रेडियो इकाइयां लोकोमोटिव और स्टेशन कवच के बीच संचार बनाए रखती हैं। ऑन-ट्रैक आरएफआईडी टैग ट्रेन के स्थान के लिए ऑन-ट्रैक जानकारी प्रदान करते हैं।

'कवच' के कुछ अतिरिक्त लाभ

- यदि लोको पायलट इसे लगाने में विफल रहता है या तकनीकी विफलता होती है तो कवच के लिए निर्मित एकीकृत संचार प्रणाली स्वचालित ब्रेक द्वारा ट्रेन की गति को नियंत्रित किया जाता है।
- लोकोमोटिव में एक लाइन-साइड सिग्नल प्रावधान उच्च गति और धुंध वाले मौसम की स्थिति के दौरान फायदेमंद होता है क्योंकि यह 'आवाजाही प्राधिकार के निरंतर अद्यतन' सिद्धांत पर कार्य करता है।
- लेवल क्रॉसिंग फाटकों पर स्वचालित सीटी बजने की व्यवस्था की गई है। जब कोई ट्रेन आबादी वाले क्षेत्रों से गुजर रही हो तो स्वचालित सीटी बजने से दुर्घटनाओं से बचने में मदद मिलती है।
- टकराव से बचाव प्रणाली भी लोकोमोटिव से लोकोमोटिव संचार के लिए निर्देशित करती है। यह सुविधा किसी भी दुर्घटना की स्थिति में एसओएस की मदद करती है।

ड्राइवर मशीन इंटरफेस (डीएमआई) सिग्नल पहलुओं, आवाजाही प्राधिकार और स्वीकृत गति के इन-कैब डिस्प्ले के लिए कार्यात्मक है।

लोको कवच रेडियो संचार के माध्यम से आरएफआईडी टैग, स्पीड सेंसर और लाइन-साइड सिग्नल इनपुट से जानकारी एकत्र करता है।

यह सब मानवीय हस्तक्षेप के बिना होता है और इस प्रकार ट्रेन का पता लगाना और आवाजाही प्राधिकार दोनों में सटीकता सुनिश्चित करता है।

जहां 1098 आरकेएम पर कवच लगा दिया गया है, वहीं 325 आरकेएम पर काम प्रगति पर है।

भारतीय रेल ने 'कवच' कार्य निष्पादन को सुव्यवस्थित करने के लिए कई कदम उठाए हैं, जिसमें स्थान और टॉवरों की संख्या के लिए रेडियो सर्वेक्षण के लिए मानक प्रारूप और प्रक्रियाएं अपनाना शामिल है।

इस दिशा में एक और महत्त्वपूर्ण कदम में इंजनों में कवच फिटमेंट का मानकीकरण और कवच कार्यों के लिए मानक ईपीसी दस्तावेज़ निर्माण शामिल है।

आगे की राह

भारतीय रेल ने दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा कॉरिडोर पर 3009 आरकेएम के लिए बोलियां आमंत्रित की हैं।

स्वर्णिम चतुर्भुज (जीक्यू) और स्वर्ण विकर्ण (जीडी) के शेष 6000 आरकेएम के लिए अध्ययन, सर्वेक्षण और तैयारी कार्य किया जा रहा है।

कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारतीय रेल कवच से संबंधित अपने तकनीकी फोकस को विकसित करने का प्रयास कर रही है। ये कवच सुरक्षा जाल पर इंटरलॉकिंग सिस्टम के साथ सीधा इंटरफेस हैं। रेलवे ने संचार प्रणाली के अस्थायी गति प्रतिबंध (टीएसआर) और दीर्घकालिक विकास (एलटीई) पर अपनी कार्यक्षमता पर ध्यान केंद्रित किया है।

वर्ष 2022 के बजट में यह घोषणा की गई थी कि सुरक्षा और क्षमता वृद्धि के लिए कवच प्रौद्योगिकी को 2,000 किमी रेल नेटवर्क तक बढ़ाया जाएगा। हाल के अनुमानों के अनुसार, इसके पूरा होने पर कवच 13,169 यात्री ट्रेनों और 8,479 मालगाड़ियों की सुरक्षा में वृद्धि करेगा, जो 7,349 स्टेशनों से प्रतिदिन लगभग 23 मिलियन यात्रियों और 3 मिलियन टन (एमटी) माल ढुलाई करती हैं।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतीय रेल निकट भविष्य में दुनिया भर में रेल नेटवर्क की सुरक्षा, उपयोगिता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए तकनीकी नवाचार में अग्रणी हो।

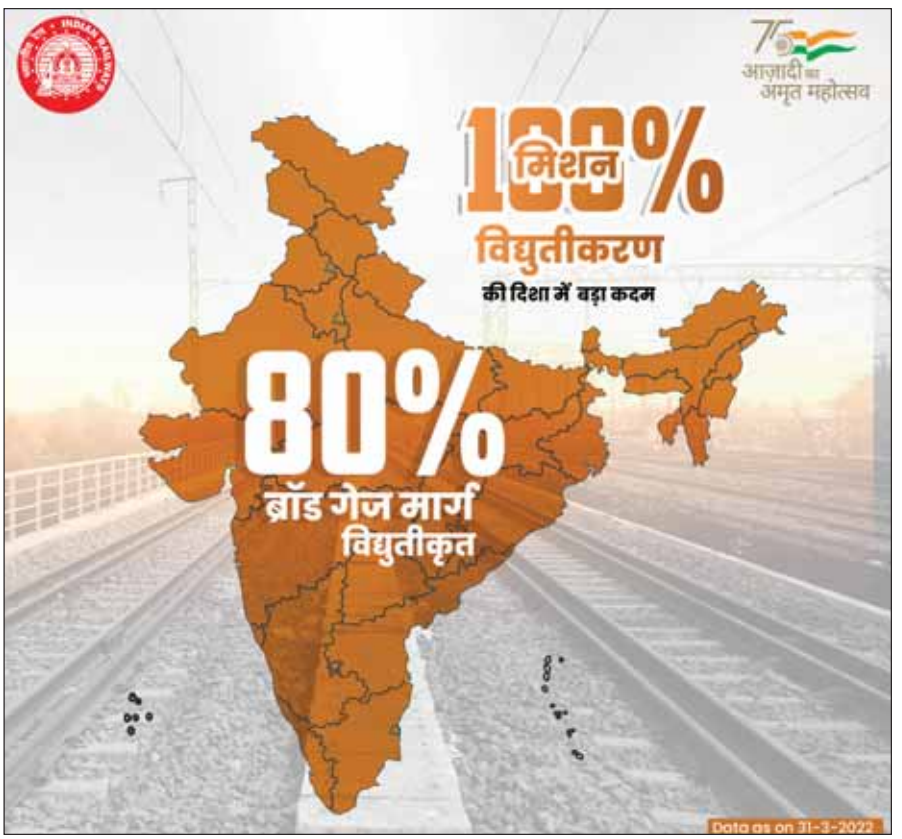
वित्त वर्ष 2021-22 की कुछ उपलब्धियां



भारतीय रेल शत प्रतिशत विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल करने के लिए तेजी से आगे बढ़ रही है। वित्त वर्ष 2021–22 में रिकार्ड 6,366 रूट किलोमीटर विद्युतीकरण किया गया है।

शत प्रतिशत विद्युतीकरण अभियान की दिशा में ऐतिहासिक छलांग

वित्त वर्ष 2021–22 में बड़ी लाइन मार्गों पर 80 प्रतिशत विद्युतीकरण का कार्य पूरा। 65414 रूट किलोमीटर में से 52247 रूट किलोमीटर का विद्युतीकरण पूरा हुआ जो कार्बन उत्सर्जन की दर को कम करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।



नई रेल लाइनों के विस्तार की दिशा में भारतीय रेल तीव्रता के साथ अग्रसर है। वित्त वर्ष 2021-22 में कुल 2,904 किलोमीटर रेल मार्ग का निर्माण/दोहरीकरण/ आमान परिवर्तन किया गया।





भारतीय रेल ने माल ढुलाई में रचा नया कीर्तिमान

भारतीय रेल माल ढुलाई का सबसे विश्वसनीय माध्यम बन कर उभरी है। वित्त वर्ष 2021-22 में माल ढुलाई का आंकड़ा 15% की बढ़ोतरी के साथ पहली बार 1418.10 मिलियन टन पहुंचा, वहीं आय में भी 21% की वृद्धि दर्ज की गई।



भारतीय रेल ने यात्रियों की सुरक्षित, सुगम और आरामदायक यात्रा के लिए वित्त वर्ष 2021–22 में किया है अब तक के सबसे अधिक 6,291 अत्याधुनिक एलएचबी कोचेज का निर्माण किया गया।



चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना ने वित्त वर्ष 2021–22 में 486 विद्युत रेल इंजनों का उत्पादन करके मील का पत्थर स्थापित किया है।

जबलपुर स्टेशन में 'रेल कोच रेस्टोरेंट' का प्रारंभ



पश्चिम मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता ने जबलपुर स्टेशन के सर्कुलेटिंग एरिया में पुराने कोच को नए रूप देकर स्थापित किए गए रेल कोच रेस्टोरेंट का निरीक्षण किया। नीले रंग के इस रेस्टोरेंट के सामने ग्रीन एरिया बनाकर पर्यावरण अनुकूल बनाया गया है। इसके साथ ही कोच के सामने दोनों ओर फूड स्टॉल एवं आउटडोर टेक-अवे काउंटर भी खोला गया है। रेस्टोरेंट के अंदर डाइनिंग एरिया में 50 व्यक्तियों की भोजन करने की सुविधा उपलब्ध है। किचन और रेस्टोरेंट में सीसीटीवी कैमरा लगाया गया है। इस रेस्टोरेंट में विभिन्न प्रकार के व्यंजनों की सुविधा उपलब्ध है। यह कोच रेलवे की संपत्ति रहेगा। यह रेस्टोरेंट 24X7 घंटे भोजन सेवा प्रदान कर पर्यटकों को काफी आकर्षित कर रहा है।

पश्चिम मध्य रेलवे ने फ़िल्मों की शूटिंग से 28 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया

भारतीय रेल स्टेशन पर फ़िल्म शूटिंग के लिए रेल मंत्रालय ने सरल नीति तैयार की है। शूटिंग की अनुमति प्राप्त करने के लिए विभिन्न दस्तावेजों के साथ-साथ क्षतिपूर्ति बाउंड, बैंक गारंटी, बीमा, फ़िल्म स्क्रिप्ट के साथ-साथ आवेदन के साथ परियोजना के बारे में जानकारी देनी होती है।

पश्चिम मध्य रेल पर भी फ़िल्म शूटिंग को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्ष 2021-22 में अब तक पाँच फिल्मों की शूटिंग से 27 लाख 78 हजार 993 रुपये का राजस्व अर्जित किया गया है।



गढ़ा-नैनपुर खंड के सभी स्टेशनों पर फुट ओवर ब्रिज उपलब्ध



दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर मंडल द्वारा गढ़ा-नैनपुर खंड के सभी 10 रेलवे स्टेशनों-गढ़ा, ग्वारिघाट, बरगी, सुकरीमंगेला, शिकारा, बिनैकी, घन्सौर, निधानी, पिंडराई तथा नैनपुर पर फुटओवर ब्रिज, दिव्यांगजनों के लिए टॉयलेट तथा सीएसआर के तहत आम जनता के उपयोग के लिए प्रसाधन की व्यवस्था की गई है।

रेल सुरक्षा आयुक्त ने नागपुर मंडल के छिंदवाड़ा-चौरई खंड के मध्य विद्युतीकृत रेल लाइन का निरीक्षण किया

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर मंडल द्वारा नैनपुर से छिंदवाड़ा के मध्य वर्ष 2015 से 130 किमी के मार्ग पर छोटी रेल लाइन का संचालन बंद करके ब्राडगेज में परिवर्तन कार्य हो रहा है।

25 फरवरी, 2022 को श्री एस. मित्रा, रेल सुरक्षा आयुक्त, दक्षिण पूर्व सर्किल के द्वारा छिंदवाड़ा-चौरई के मध्य विद्युतीकृत रेल लाइन का सफलता पूर्वक निरीक्षण किया गया। इस सेक्शन में 33 किमी लाइन पर



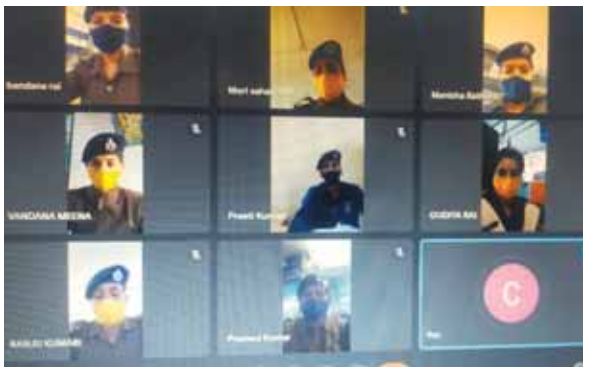
इलेक्ट्रिक इंजन की ट्रेन को 90 किमी प्रति घंटा की गति से चलाया गया। उन्होंने इलेक्ट्रिक विभाग कार्यालय का भी निरीक्षण किया गया। जल्द ही इस ट्रैक में ट्रेनों का संचालन शुरू होगा। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक सहित निर्माण विभाग के तकनीकी अधिकारी उपस्थित थे।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने वर्तमान वित्तीय वर्ष की समाप्ति के 38 दिन पहले ही पिछले वर्षों की कुल लदान आय को पार किया

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने वर्तमान वित्तीय वर्ष 2021-22 के 01 अप्रैल' 2021 से 21 फरवरी' 2022 तक वर्तमान वित्तीय वर्ष की समाप्ति के 38 दिन पहले ही 186.52 मिलियन टन माल लदान कर पिछले सभी वित्तीय वर्षों में किए गए कुल लदान आय को पार कर लिया है। 16% वृद्धि के साथ किसी भी वित्तीय वर्ष में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा यह अब तक का सर्वाधिक लदान है। महाप्रबंधक ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए समस्त रेलकर्मियों के प्रयासों की सराहना की है।



दक्षिण पूर्व रेलवे के उपनगरीय खंड में महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए नई पहल



दक्षिण पूर्व रेलवे के हावड़ा-खड़गपुर-मिदनापुर उपनगरीय खंड में रात के समय महिला यात्रियों की बेहतर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आरपीएफ टीम, श्री डीबी कसार, आईजी-सह-प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त के मार्गदर्शन में एक नई सुरक्षा पहल (कॉन्वॉय नाइट फाल्कन) तैयार की है। इसकी प्रक्रिया निम्नलिखित है:

- तत्काल सहायता हेतु महिलाएं मोबाइल नंबर 9002081727 पर कॉल कर सकती हैं। महिला आरपीएफ कर्मी उन्हें एक गूगल लिंक प्रदान करेगी, जिसके माध्यम से उक्त महिला यात्री, हावड़ा, संतरागाछी, उलुबेरिया, मेचेदा, पांसकुड़ा, बालीचक, खड़गपुर और मिदनापुर में तैनात लगभग 12-14 महिला आरपीएफ कर्मचारियों के संपर्क में आ जाएंगी। वे सभी एक-दूसरे को दिखाई देंगी एवं यात्री के कोच के अंदर की स्थिति को भी देखा जा सकता है।
- आवश्यकता पड़ने पर आरपीएफ के कर्मचारी कोच में संपर्क करेंगे। महिला यात्री से वे तब तक संपर्क में रहेंगी जब तक वह सुरक्षित महसूस नहीं करती या वह अपने गंतव्य स्टेशन तक सुरक्षित नहीं पहुंच जाती।

पूरे उपनगरीय क्षेत्राधिकार में 12-14 महिला कर्मचारियों के आरपीएफ काफिले के साथ महिला यात्रियों के शामिल होने से उनकी यात्रा सुरक्षित होगी। सुरक्षा सहायता की ऑनलाइन उपलब्धता और आरपीएफ की तत्काल उपस्थिति से अपराधी विचारधारा वाले व्यक्तियों के लिए यह निवारक के रूप में कार्य करेगी।

दक्षिण पूर्व रेलवे शत-प्रतिशत विद्युतीकरण वाली द्वितीय क्षेत्रीय रेलवे बनी

दक्षिण पूर्व रेलवे 9 फरवरी, 2022 को खड़गपुर मंडल के रूपसा-बांगरीपोसी खंड के विद्युतीकरण के साथ, अपने कुल रूट किमी के शत-प्रतिशत विद्युतीकरण के लक्ष्य को हासिल करने वाली पश्चिम मध्य रेलवे के बाद दूसरा क्षेत्रीय रेलवे बन गई है, जिससे पर्यावरण में कार्बन फुटप्रिंट में कमी आएगी। इससे



दक्षिण पूर्व रेलवे के क्षेत्राधिकार में निर्बाध रूप से ट्रेन संचालित करने में भी मदद मिलेगी। 9 फरवरी, 2022 को श्री एस. मित्रा, रेलवे सुरक्षा आयुक्त, दक्षिण पूर्व सर्किल, श्री इसहाक खान, प्रधान मुख्य विद्युत अभियंता, दक्षिण पूर्व रेलवे, श्री एम. प्रधान, मंडल रेल प्रबंधक, खड़गपुर के साथ भंजपुर-बांगरीपोसी खंड का निरीक्षण किया।

दिल्ली मंडल में शत-प्रतिशत विद्युतीकरण कार्य पूर्ण

नॉर्दन सर्कल के मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त श्री शैलेश कुमार पाठक ने 25 फरवरी, 2022 को नए विद्युतीकृत शामली-टपरी सेक्शन (63 आरकेएम और 72 टीकेएम) का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान दिल्ली मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री डिम्पी गर्ग के साथ उत्तर रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। करंट कलेक्शन ट्रायल के पश्चात् इसका निरीक्षण किया गया और किए गए कार्यों से पूरी तरह संतुष्ट होने के पश्चात् मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त ने उक्त कार्य के लिए अनुमति दे दी। इस कार्य के साथ दिल्ली मंडल का शाहदरा-शामली-टपरी रेल सेक्शन पूरी तरह से विद्युतीकृत हो गया है और अब इस रेल सेक्शन पर विद्युत कर्षण से रेल परिचालन संभव हो सकेगा। इस कार्य के पूरा हो जाने के पश्चात् तथा 26 फरवरी, 2022 को सोनीपत-गोहाना रेल सेक्शन का भी निरीक्षण हो जाने के फलस्वरूप, दिल्ली मंडल उत्तर रेलवे का पहला ऐसा मंडल बन गया है जो शत-प्रतिशत विद्युतीकृत है।

भारतीय रेल पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यता

STEP 1

ऑनलाइन सदस्यता हेतु **www.irctc.co.in** पर जाएं।

इस पेज के **विज्ञापन** (Promotions) पर जाएं।

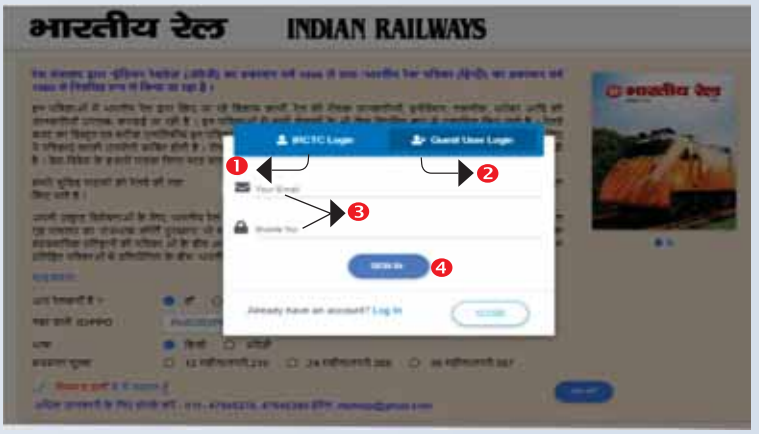
आप सीधे www.irctctourism.com/ IRBRmag/#/home/hn पर भी जा सकते हैं।



❸ **'भारतीय रेल पत्रिका'** पर क्लिक करें।

STEP 3

❶ इस बॉक्स में यदि आप के पास आईआरसीटीसी का लॉग-इन, पासवर्ड है तो उसका उपयोग करें।

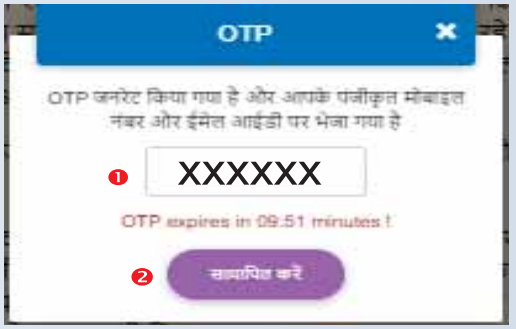


❷ लॉग-इन आईडी नहीं है तो गेस्ट लॉग-इन पर क्लिक करें।

❸ उसमें अपना ई-मेल तथा मोबाइल नंबर दर्ज करें।

❹ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 5



❶ आपके पंजीकृत मोबाइल एवं ई-मेल पर आए ओटीपी को बॉक्स में दर्ज करें एवं

❷ सत्यापित करें

STEP 6



❶ पेमेंट मोड (कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट, इंटरनेशनल कार्ड तथा आईपे) एवं

❷ पेमेंट गेट-वे का ऑप्शन पसंद करें

❸ मेक पेमेंट का बटन दबाएं

ीय रेल
ता प्राप्त करने की सरल प्रक्रिया

STEP 2

1. यदि आप रेलकर्मी हैं तो 'हां' पर या रेलकर्मी नहीं हैं तो 'नहीं' पर क्लिक करें।
2. यदी 'हां' तो बॉक्स में अपना आरयूआईडी/ आईडी/पीपीओ नंबर तथा एक आधिकारिक आईडी की स्कैन कॉपी अपलोड करें।
3. 'भारतीय रेल' पत्रिका के लिए 'हिंदी' को और 'इंडियन रेलवेज' पत्रिका के लिए 'अंग्रेजी' में क्लिक करें।
4. एक, दो या तीन यानि जितने साल की सदस्यता चाहते हैं, उस बिन्दु पर क्लिक करें।



सबमिट (जमा) का बटन दबाएं।

5. नियम व शर्तों पर क्लिक करें तथा उसे ध्यान से पढ़ लें। यदि सहमत हों तो बॉक्स में टिक मार्क करें।

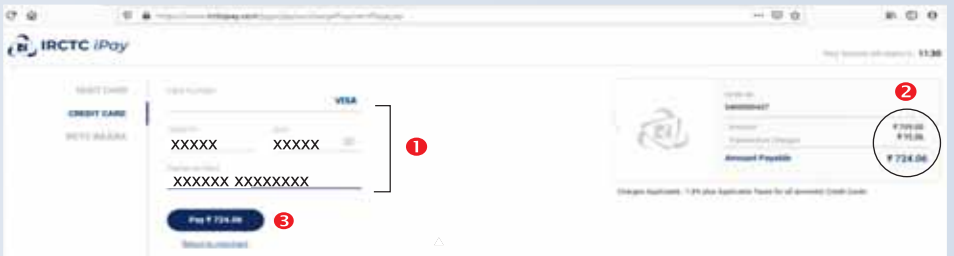
STEP 4

1. अपना पूरा पता पिन कोड के साथ दर्ज करें



2. सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 7



1. पेमेंट मोड की डीटेल भरें
2. पेमेंट एमाउंट की जानकारी देखें।
3. संतुष्ट होने पर ही 'पे' बटन को दबाएं।
4. बैंक ओटीपी की प्रक्रिया पूर्ण होने पर पेमेंट सक्सेस फुल का मैसेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

कृपया ध्यान दें

- पेमेंट के समय नियमानुसार ट्रांजेक्शन शुल्क लगते हैं, कृपया पेमेंट करते समय देख लें।
- पेमेंट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आपको सदस्यता संबंधित जानकारी का एस.एम.एस. तथा मेल प्राप्त होगा।
- पेमेंट प्राप्त होते ही निर्धारित माह से आपको पत्रिका प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 011- 47845378, 47845380 ईमेल: irbrhelp@gmail.com

पूर्व तट रेलवे ने हासिल की 200 मिलियन टन माल लदान की उपलब्धि

पूर्व तट रेलवे ने 1 अप्रैल, 2021 से 14 फरवरी, 2022 की अवधि के दौरान 200 मिलियन टन माल लदान कर एक नया कीर्तिमान रचा है। गत वर्ष की इसी अवधि के दौरान 173.82 मिलियन टन माल लदान किया गया था। इस दौरान 113.5 एमटी कोयला, 7.06 एमटी स्टील प्लांट के लिए कच्चा माल, 18.46 एमटी लौह और इस्पात, 27.22 एमटी लौह अयस्क, 1.13 एमटी सीमेंट,



2.56 एमटी खाद्यान्न, 5 एमटी उर्वरक, 2.34 एमटी पीओएल और 23.37 एमटी कंटेनर एवं कार्गो का लदान किया गया।

मंडलों के अनुसार, खोरधा रोड मंडल ने 132.54, वाल्टेयर मंडल ने 57.21 एवं सम्बलपुर मंडल ने 10.73 एमटी माल का लदान किया। इससे 19,884.3 करोड़ रुपये की आमदनी हुई, जो कि गत वर्ष से 20% अधिक है। इस दौरान 44 ऑक्सीजन एक्सप्रेस का भी संचालन किया गया।

पहाड़ी अनुभाग में मालगाड़ियों की आवाजाही में सुधार लाने के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेल का अभिनव उपाय

पूर्वोत्तर सीमा रेल (पू.सी. रेल) ने हाल ही में लामडिंग-बदरपुर पहाड़ी अनुभाग में सिलचर के निकट सालचापरा, असम तक शक्तिशाली रेल इंजनों द्वारा पूर्ण लंबाई वाली मालगाड़ी को चलाने का सफल परीक्षण किया। आगे एक डब्ल्यूडीजी6 रेल इंजन तथा पीछे एक डब्ल्यूडीजी4 रेल इंजन द्वारा इस मालगाड़ी को चलाया गया। इससे लामडिंग-बदरपुर अनुभाग में एकाधिक लोको यूनिटों के उपयोग की आवश्यकता



समाप्त हो जाएगी, जो वर्तमान में इस खंड में माल गाड़ियों के परिचालन में अवरोध तथा धीमी गति का मुख्य कारण है।

डब्ल्यूडीजी6जी लोकोमोटिव इस अनुभाग में ट्रेनों की आवाजाही के लिए अत्यंत लाभकारी साबित हो रही है। इस नई प्रणाली के एक बार नियमित हो जाने पर रेल द्वारा असम की बराक घाटी के अलावा त्रिपुरा, मणिपुर तथा मिजोरम राज्यों तक अनाज तथा अन्य आवश्यक सामग्रियों की तेज एवं निर्बाध डिलीवरी संभव हो जाएगी, जिससे इस क्षेत्र के लोग लाभान्वित होंगे।

बच्चों में साफ-सफाई के प्रति जागरुकता के लिए भारतीय रेल चला रही है 'अच्छी आदत' कैंपेन



रेल मंत्रालय द्वारा जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेशन एजेंसी के सहयोग से भारतीय रेल के 94 स्कूलों में 'अच्छी आदत' कैंपेन चलाया जा रहा है। इसमें पश्चिम मध्य रेलवे के 5 स्कूलों को शामिल किया गया है। पश्चिम मध्य रेलवे के तीनों मंडलों पर महाप्रबंधक के नेतृत्व एवं प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी के मार्गदर्शन में इटारसी, कोटा, जबलपुर, न्यू कटनी जंक्शन एवं गंगापुर सिटी स्थित रेलवे स्कूलों में 22 से 25 फरवरी, 2022 तक 'अच्छी आदत' कैंपेन चलाया गया। कक्षा पहली से सातवीं तक के विद्यार्थियों को अच्छी आदतों के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान विद्यार्थियों को मास्क एवं नेल कटर का भी वितरण किया गया। साथ ही कोविड-19 प्रोटोकॉल के बारे में भी जानकारी साझा करते हुए बताया गया कि आपस में सामाजिक दूरी बनाए रखें, हाथों को समय-समय पर सेनिटाइज करते रहें, हमेशा मास्क पहनकर रखें एवं भीड़-भाड़ से दूरी बनाए रखें।

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक द्वारा पनियहवा-गोरखपुर छावनी खंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण

महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे श्री अनुपम शर्मा ने 03 फरवरी, 2022 को वाराणसी मंडल के पनियहवा–गोरखपुर छावनी रेल खंड का विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री रामाश्रय पाण्डेय, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री राहुल श्रीवास्तव सहित मंडल के वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे।



महाप्रबंधक श्री शर्मा ने रेल परिचालन में संरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पनियहवा रेलवे स्टेशन से निरीक्षण विशेष गाड़ी से विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुए इस खंड की रेलपथ जड़ाई, बैलास्ट प्रोफाइल, ओवर हेड ट्रैक्शन, कलर लाइट सिग्नल, सूचना/चेतावनी बोर्ड एवं कॉशन ऑर्डर आदि का गहन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने इस रेल खंड के स्टेशनों से जारी सतर्कता आदेशों का संज्ञान लिया

महाप्रबंधक द्वारा छपरा-फेफना-इन्दारा-भटनी-गोरखपुर खंड का निरीक्षण

महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे श्री अनुपम शर्मा ने 19 फरवरी, 2021 को वाराणसी मंडल के छपरा– फेफना–इंदारा–भटनी–गोरखपुर खण्ड में चल रहे दोहरीकरण एवं विद्युतीकरण कार्यों का विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। इस दौरान उनके साथ मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री रामाश्रय पाण्डेय, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री राहुल श्रीवास्तव, मुख्य परियोजना प्रबंधक, रेल विकास निगम लिमिटेड श्री वी.के. शुक्ल तथा मंडलीय अधिकारी उपस्थित रहे।

महाप्रबंधक ने विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुये इस रेल खण्ड पर चल रहे दोहरीकरण एवं विद्युतीकरण कार्यों के अन्तर्गत मिट्टी के कार्य, रेलपथ, बैलास्ट–प्रोफाइल, ट्रैक एलाइनमेंट, ओवरहेड ट्रैक्शन, ट्रैक्शन पोल एवं कलर लाइट सिग्नल के संस्थापन, सूचना एवं चेतावनी बोर्ड, प्लेटफॉर्मों के उन्नयन एवं विस्तार, ब्लाक सेक्शन में दोहरीकरण के अनुरूप बदलाव कार्य, समपार फाटकों में बदलाव तथा यात्री सुविधाओं का अवलोकन किया। महाप्रबंधक ने इंदारा स्टेशन यार्ड का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने दोहरीकरण एवं विद्युतीकरण कार्यों को निर्धारित समय–सीमा के अन्दर पूरी गुणवत्ता के साथ पूरा करने का निर्देश दिया।



महाप्रबंधक द्वारा निर्माण परियोजनाओं की समीक्षा

महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे श्री अनुपम शर्मा ने 03 फरवरी, 2022 को मुख्यालय, गोरखपुर में आयोजित बैठक में अधिकारियों के नियमित निरीक्षण, रेल संरक्षा के विभिन्न पहलुओं तथा पूर्वोत्तर रेलवे पर चल रही निर्माण परियोजनाओं की समीक्षा की। बैठक में अपर महाप्रबंधक श्री अमित कुमार अग्रवाल, प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री सतीश कुमार पाण्डेय, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण श्री राजीव कुमार, प्रमुख मुख्य सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर श्री ए.के. मिश्रा, प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री संजय त्रिपाठी, मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री रामाश्रय पाण्डेय एवं रेल विकास निगम लिमिटेड के मुख्य परियोजना निदेशक तथा वीडियो लिंक के माध्यम से मंडल रेल प्रबंधक, लखनऊ एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक, लखनऊ उपस्थित थे।

बैठक को सम्बोधित करते हुए महाप्रबंधक श्री शर्मा ने अवर प्रशासनिक एवं प्रवर प्रशासनिक स्तर के अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से गाड़ियों, स्टेशनों, समपारों एवं गेटों के निरीक्षण पर बल दिया। उन्होंने इस दौरान रेल राजस्व में वृद्धि के लिए नियमित रूप से टिकट जांच अभियान चलाने तथा स्टेशनों पर साईकिल स्टैण्ड एवं पार्किंग के लाइसेंस का कार्य समय से पूरा करने का निर्देश दिया।

श्री शर्मा ने कहा कि परियोजनाओं की ड्राइंग समय से तैयार की जाए और परियोजनाओं को निर्धारित समय में पूरा किया जाए ताकि समय से इनका लाभ रेल उपभोक्ताओं को मिल सके और रेल संचलन निर्बाध रूप से चलता रहे।

स्क्रैप निस्तारण से मध्य रेल को 443.35 करोड़ रुपये की आय

मध्य रेल ने यह सुनिश्चित किया है कि प्रत्येक मंडल, कारखाना, शेड और डिपो स्क्रैप सामग्री से मुक्त हो। इसके लिए 'शून्य स्क्रैप मिशन' शुरू किया है। गया मध्य रेल ने वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए फरवरी-2022 तक स्क्रैप निस्तारण से 443.35 करोड़ रुपये की आय दर्ज की है। यह पिछले वर्ष की इसी अवधि की आय से 106.57 करोड़ रुपये अधिक है। श्री अनिल कुमार लाहोटी, महाप्रबंधक, मध्य रेल ने कहा कि स्क्रैप की बिक्री से न केवल राजस्व अर्जित करने में मदद मिल रही है बल्कि परिसर का रख-रखाव



भी बेहतर हो रहा है उन्होंने कहा कि मध्य रेल विभिन्न स्थानों पर सभी चिन्हित स्क्रैप सामग्री को बेचने के लिए मिशन मोड में काम करेगा।

मध्य रेल के सभी 5 मंडलों और विभिन्न डिपो पर 'जीरो स्क्रैप मिशन' के तहत स्क्रैप बिक्री की गतिविधि की जा रही है।

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला में विशेष मेडिकल शिविर आयोजित

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला के लाला लाजपत राय अस्पताल में 5 मार्च, 2022 को आरसीएफ के कर्मचारियों और उनके पारिवारिक सदस्यों के लिए एक विशेष मेडिकल शिविर आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन आरसीएफ के महाप्रबंधक श्री अशेष अग्रवाल ने किया। इस शिविर में हड्डियों और यूरोलॉजी संबंधित रोगों के लिए पटेल हॉस्पिटल जालंधर और आरसीएफ अस्पताल के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने संयुक्त रूप से रोगियों की जांच की। शिविर में कुल



216 रोगियों की जांच की गई। इसके लिए उनके पीएसए टेस्ट और बीएमडी टेस्ट भी किए गए, जिसके जरिए प्रॉस्ट्रेट और हड्डियों में मिनरल्स की घनता चेक की गई। जांच के बाद सभी रोगियों को निःशुल्क दवाइयां प्रदान की गई। कैंप के आयोजन के लिए आरसीएफ के कर्मचारियों ने आरसीएफ के मेडिकल डिपार्टमेंट की सराहना की जिसने जागरूकता के लिए इस विशेष शिविर का आयोजन किया।

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला में फ्लॉवर शो 2022 का आयोजन

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला में बसंत ऋतु के आगमन पर 12 मार्च, 2020 को फ्लॉवर शो 2022 का आयोजन किया गया। इस के अधीन आरसीएफ कॉलोनी वासियों के क्वार्टरों के गार्डन/लॉन प्रतियोगिता और फ्लॉवर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह आयोजन देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ को समर्पित 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत किया गया। गार्डन/लॉन प्रतियोगिता में शामिल क्वार्टरों के गार्डन/लॉन की खूबसूरती तथा बेहतर रख-रखाव को परखा गया। फ्लॉवर प्रतियोगिता में सिंगल पॉट, थ्री पॉट, मिक्स्ड

मौसमी फूल, फ्लॉवर अरेंजमेंट, कट फ्लॉवर, बोन्साई, बारहमासी और सजावटी पौधों के अलावा घरेलू गार्डन में उगाई गई फल-सब्जियों की प्रतियोगिता करवाई गई। इसके अलावा फलों- सब्जियों से बनाए गए अचार, मुरब्बा, जैम/स्क्वॉश प्रतियोगिता भी करवाई गई। फूलों और रंगों से बनाई गई रंगोली बनाने का भी प्रतियोगिता हुआ।



मेट्रो कर्मी ने एक नेत्रहीन महिला यात्री की जान बचाई

दिनांक 28 फरवरी, 2022 को लगभग 10.05 बजे एक नेत्रहीन महिला यात्री कवि नजरूल मेट्रो स्टेशन पर उतरकर अचानक रेलवे ट्रैक पर फिसल गई। इस घटना को देखते ही प्लेटफॉर्म पर मौजूद मेट्रो कर्मचारी उसे रेलवे ट्रैक से बाहर निकालने के लिए दौड़ पड़े। उसे रेलवे ट्रैक से निकालकर स्टेशन मास्टर कार्यालय लाया गया और तुरंत उसका प्राथमिक उपचार किया गया। उसे कुछ समय के लिए स्टेशन मास्टर के कार्यालय में निगरानी में रखा गया था। करीब 10.40 बजे बेहतर महसूस करने पर वह स्टेशन मास्टर के कार्यालय से चली गई। उन्होंने अपनी जान बचाने के लिए मेट्रो रेलवे का दिल से आभार व्यक्त किया।

टॉलीगंज में एक व्यायामशाला का उद्घाटन

महाप्रबंधक, मेट्रो रेलवे, श्री मनोज जोशी ने 22 फरवरी, 2022 को मेट्रो रेलवे ऑफिसर्स क्लब में एक व्यायामशाला का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में मेट्रो रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन के वरिष्ठ अधिकारी और सदस्य मौजूद थे। श्री जोशी ने जिम का उद्घाटन करते हुए कहा कि इससे मेट्रो कर्मचारियों को स्वस्थ और तंदुरुस्त रहने में मदद मिलेगी। स्वास्थ्य ईश्वर द्वारा प्रदत्त सबसे महानतम उपहारों में से एक है। यह मानव जीवन की सबसे बहुमूल्य संपदा है। स्वास्थ्य न केवल धन है बल्कि यह सफलता, आनंद और समृद्धि भी है।



यह विशाल व्यायामशाला मेट्रो अधिकारियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने में मदद करेगी और उनकी आंतरिक बल को भी बढ़ाएगी। यह व्यायामशाला नवीनतम एवं अत्याधुनिक व्यायाम उपकरणों से सुसज्जित है।



मेट्रो के मोटरमैन और आरपीएफ ने एक बहुमूल्य जिंदगी बचाई

दिनांक 07 मार्च, 2022 को 09.15 बजे नेताजी स्टेशन के डाउन प्लेटफॉर्म पर मेट्रो पकड़ने का इंतजार कर रहा एक यात्री (आयु 29 वर्ष) अचानक फिसल कर ट्रैक तल पर गिर गया। यह देखकर आरपीएफ कर्मचारी तुरंत उसे ट्रैक तल से निकालने के लिए दौड़ पड़े और उसे स्टेशन अधीक्षक के कार्यालय में ले गए। उस समय एक मेट्रो रेलगाड़ी स्टेशन में प्रवेश कर रही थी। ट्रैक तल पर यात्री को देखकर मोटरमैन ने रेलगाड़ी रोक दी। ट्रैक तल पर गिरने से उसे मामूली चोटें आई थीं।

उनके द्वारा बताए गए फोन नंबर पर उनके परिवार वालों से संपर्क किया गया। उनके परिजन स्टेशन अधीक्षक कार्यालय पहुंचे और उनकी पहचान की। उन्होंने मेट्रो के अधिकारियों को बताया कि उन्हें दृष्टिबाधिता की समस्या है।

सभी आधिकारिक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद बचाए गए यात्री को उनके परिवार के सदस्यों को सौंप दिया गया। उन्होंने अपनी जान बचाने के लिए मेट्रो रेल का दिल से आभार व्यक्त किया।

मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री अरुण अरोरा ने यात्री की जान बचाने के लिए मेट्रो रेलगाड़ी को रोकने में सतर्कता और बुद्धिमत्ता दिखाने के लिए चालक मोटरमैन को पुरस्कार देने की घोषणा की।

उत्तर पश्चिम रेलवे पर मेगा चिकित्सा शिविर का आयोजन



उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय तथा मंडलों में 15 मार्च, 2022 को मेगा चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें रेलवे अधिकारियों/कर्मचारियों ने स्वास्थ्य जांच करवाई। शिविर में मुख्यालय में कार्यरत 698 से अधिक रेलकर्मियों ने स्वास्थ्य जाँच करवाई। शिविर में रक्त परीक्षण, ईसीजी, शूगर, वजन, लम्बाई तथा हड्डियों की जांच की गई तथा रेलकर्मियों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिए परामर्श भी दिया गया। इसके अतिरिक्त अजमेर मंडल पर 1296, जोधपुर मंडल पर 850, बीकानेर मंडल पर 1023 तथा जयपुर मंडल पर 1122 रेलकर्मियों की स्वास्थ्य जांच की गई। डॉ. पी.के. सामंतराय, प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक, डॉ. लक्ष्मी मीना, अपर मुख्य चिकित्सा निदेशक एवं डॉ. के.बी छोलक चिकित्सा निदेशक, केन्द्रीय चिकित्सालय ने सभी रेलकर्मियों का आभार व्यक्त किया।

उत्तर पश्चिम रेलवे ने स्क्रैप बेचकर अर्जित किए 237 करोड़ रुपये

श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे के दिशा-निर्देशों तथा प्रयासों से उत्तर पश्चिम रेलवे ने वित्तीय वर्ष 2021-22 में अनुपयोगी तथा व्यर्थ पड़े स्क्रैप को बेचकर 237 करोड़ रुपये (फरवरी 2022 तक) का अर्जन किया है। उल्लेखनीय है कि उत्तर पश्चिम रेलवे ने गत वर्ष के फरवरी माह तक स्क्रैप निस्तारण से 76 करोड़ रुपये से अधिक आय अर्जित की है। भण्डार विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष में फरवरी माह तक अजमेर मंडल एवं अजमेर डिपो पर 106.18 करोड़, बीकानेर मंडल एवं बीकानेर डिपो पर 18.83 करोड़, जोधपुर मंडल एवं जोधपुर डिपो पर 57.85 करोड़ तथा जयपुर मंडल पर 53.82 करोड़ सहित उत्तर पश्चिम रेलवे पर 237 करोड़ रुपये के स्क्रैप का निस्तारण किया जोकि गत वर्ष की इसी अवधि से 76 करोड़ अधिक है। उत्तर पश्चिम रेलवे को इस वर्ष स्क्रैप निस्तारण से 230 करोड़ रुपये अर्जित करने का लक्ष्य प्रदान किया गया था, जिसे 1 माह शेष रहते ही पार कर लिया गया है। उत्तर पश्चिम रेलवे के सभी मंडलों पर वर्ष 2021-22 के अंत तक जीरो स्क्रैप का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

उत्तर पश्चिम रेलवे में खाद्य सुरक्षा मॉड्यूल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय में रेलवे पर खाद्य सुपरवाइजरों को स्वच्छता, पोषण स्तर एवं खाद्य पदार्थों के संरक्षण एवं रख-रखाव खाद्य सुरक्षा मॉड्यूल के अनुसार किए जाने पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ.पी.के. सामंतराय द्वारा किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में सुश्री कीर्ति गौतम, महाप्रबंधक प्रशिक्षण ग्रीन फूड कंसलटेंट एवं दशमीत कौर सचदेवा, असेस्सर (मैनेजर ट्रेनिंग एवं कंसलटेंट) द्वारा स्वच्छता मापदंड व आवश्यक पोषण स्तर एवं फ्रोजन फूड के समुचित संरक्षण तकनीक तथा उचित तापमान पर रख-रखाव आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। उक्त कार्यक्रम काफी सूचनाप्रद एवं लाभकारी था, जिसका जयपुर स्टेशन के लगभग 25 खाद्य सुपरवाइजरों ने लाभ उठाया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपर मुख्य चिकित्सा निदेशक एवं अभिहित अधिकारी डॉ. लक्ष्मी मीना, मुख्य स्वास्थ्य निदेशक डॉ. के.बी. छोलक, एवं डॉ.के.सत्य बाबू, सी. एस. एस, उत्तर पश्चिम रेलवे भी उपस्थित रहे।



उत्तर पश्चिम रेलवे ने 7.127 MWp क्षमता के सोलर पैनल स्थापित कर प्रतिवर्ष की 5 करोड़ रुपये के राजस्व की बचत

श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे के दिशा-निर्देशों से उत्तर पश्चिम रेलवे प्रदूषण रहित तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति दायित्व के प्रयासों को गति प्रदान कर पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को बढ़ाने के साथ-साथ राजस्व की भी बचत कर रहा है। उत्तर पश्चिम रेलवे परिक्षेत्र सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए समृद्ध है। इस रेलवे पर विगत समय में सौर ऊर्जा पर काफी कार्य किए गए हैं। इस रेलवे पर अभी तक कुल 7.127 kWP क्षमता के सोलर पैनल स्थापित किए गए हैं। इन सोलर पैनल के स्थापित होने से इस रेलवे पर प्रतिवर्ष 79 लाख से अधिक यूनिट की ऊर्जा की बचत की जा रही है तथा 5 करोड़ रुपये के राजस्व की बचत की जा रही है।

हरित ऊर्जा की पहल के अन्तर्गत जयपुर स्टेशन पर 1050 kWP क्षमता, अजमेर स्टेशन पर 540 kWP क्षमता, जोधपुर स्टेशन पर 870 kWP क्षमता तथा आबूरोड स्टेशन पर 300 kWP क्षमता के उच्च सोलर पैनल स्थापित कर ऊर्जा प्राप्त की जा रही है। उत्तर पश्चिम रेलवे के क्षेत्राधिकार में जोधपुर वर्कशॉप में 440 kWP, अजमेर कार्यशाला में 192 kWP



मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, जोधपुर में 200 kWP क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर में 210 kWP भगत की कोठी पर 140 kWP मारवाड़ जंक्शन पर 120 kWP सहित अन्य स्टेशनों पर भी सोलर पैनल स्थापित कर विद्युत उत्पादन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष उत्तर पश्चिम रेलवे में 8.68 मेगावॉट क्षमता के सोलर सिस्टम लगाने का कार्य आगामी वित्त वर्ष में किया जायेगा। उत्तर पश्चिम रेलवे के विभिन्न स्थानों पर सोलर प्लांट की स्थापना के लिए 533 हेक्टेयर क्षेत्रफल के 33 खाली भूखण्डों की पहचान कर स्वीकृत किए गए हैं।

एलइडी फिटिंग्स उत्सर्जित प्रकाश की प्रति यूनिट बिजली खपत कम करते हैं। यह बिजली संयत्रों से ग्रीन हाउस उत्सर्जन को कम करता है। उत्तर पश्चिम रेलवे के सभी 570 स्टेशनों तथा 961 सर्विस बिल्डिंग्स में 100 एलइडी फिटिंग्स लगाई गई हैं। उत्तर पश्चिम रेलवे पर लगभग 2,36,452 एलइडी लाइट फिटिंग्स लगाई गई हैं, जिसके परिणामस्वरूप 103 लाख यूनिट बिजली की बचत होती है। इसके अतिरिक्त उत्तर पश्चिम रेलवे के 28 स्टेशनों पर बेहतर प्रकाश व्यवस्था के लिए एयरपोर्ट के मानक स्तर पर प्रकाश व्यवस्था उपलब्ध करवाई गई है।

महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे द्वारा सालाना निरीक्षण

दिनांक 03 मार्च, 22 को महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे श्री प्रमोद कुमार द्वारा आगरा मंडल के वार्षिक निरीक्षण के उपरांत मण्डल रेल प्रबंधक झाँसी श्री आशुतोष के साथ आगरा से ग्वालियर के मध्य विण्डो ट्रेलिंग किया गया, जिसमें श्री प्रमोद कुमार ने तीसरी लाइन की प्रगति का जायजा लिया। इसके उपरांत श्री कुमार ने ग्वालियर यार्ड का निरीक्षण किया। इसके पश्चात् महाप्रबंधक ने अपने सिथौली स्प्रिंग कारखाने का निरीक्षण किया। इस दौरान मण्डल रेल प्रबंधक श्री आशुतोष व मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री शेख मोहम्मद अनीस अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। इस अवसर पर तथा प्रमुख मुख्य यांत्रिक अभियन्ता सूरज प्रकाश, प्रमुख मुख्य इंजीनियर एस.के. मिश्रा, प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर सतीश कोठारी, प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री कमलेश शुक्ल मुख्य कारखाना प्रबंधक सिथौली श्री शेख मोहम्मद अनीस, आदि उपस्थित रहे।



आरेडिका में हरियाली एवं बागवानी प्रतियोगिता का आयोजन

आरेडिका में 09 फरवरी, 2022 को हरियाली और बागवानी प्रतियोगिता के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन टीटीसी ऑडोटोरियम में किया गया। आरेडिका के महाप्रबंधक श्री विनय मोहन श्रीवास्तव द्वारा सभी प्रकार के आवास धारकों को बागवानी द्वारा आवास सज्जा और सुन्दरता के लिए प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में पुरस्कृत किया गया। महाप्रबंधक ने बताया कि, आवास केवल कंकड़ और पत्थरों से बनी एक भौतिक संरचना ही नहीं बल्कि भावनात्मक रचना भी होती है। हरियाली और बागवानी से आवासों की सुन्दरता में वृद्धि के साथ-साथ वातावरण में सुधार भी होता है।



चिरेका उत्पादित रिकॉर्ड 432वें रेलइंजन को महाप्रबंधक ने किया देश सेवा को समर्पित

विश्व में सबसे अधिक विद्युत रेलइंजन निर्माण का कीर्तिमान रचने वाला चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) ने रेलइंजन निर्माण में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जारी रखते हुए किसी भी वित्तीय वर्ष 2021-22 में अपने 431 रेलइंजन उत्पादन के रिकॉर्ड को पार करते हुए चालू वित्तीय वर्ष में रिकॉर्ड 432वें रेलइंजन (डब्लूएजी 9एचसी 33466) का उत्पादन कर एक और इतिहास रचा है। इस रेलइंजन को लोको साइडिंग से 28 फरवरी 2022 को श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक/चिरेका ने हरी झंडी दिखाकर देश सेवा को समर्पित किया। यह प्रदर्शन वित्तीय वर्ष 2019-20 की तुलना में 34 कार्य दिवस कम है। वहीं किसी भी फरवरी माह की तुलना में चिरेका द्वारा वित्तीय वर्ष 2021-22 में फरवरी माह में 50 रेलइंजन उत्पादन की सफलता भी एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। इन उपलब्धि के लिए श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक ने चिरेका टीम को उनके समर्पण, प्रतिबद्धता और उत्पादन प्रगति के लिए बधाई दी है।

ज्ञातव्य हो कि उत्पादन की रफ्तार को बनाए रखने के पीछे महाप्रबंधक की कार्य योजना, प्रेरणा शक्ति एवं कुशल नेतृत्व का बहुमूल्य योगदान है। मौजूदा वित्तीय वर्ष 2021-22 में यह सफलता भारतीय रेल के



विद्युत रेलइंजन के निर्माण के मानचित्र पर चिरेका को सफलता के शिखर पर स्थापित करने में सफल होगा।

आरडीएसओ ने किया एनसीआरटीसी स्टेशन कंट्रोलर/ट्रेन ऑपरेटर के पद हेतु साइकोमेट्रिक टेस्ट

स्टेशन मास्टर, लोको पायलट, मोटरमैन और स्टेशन कंट्रोलर, मेट्रो रेलवे में ट्रेन ऑपरेटर और ग्राहक संबंध सहायक जैसे सुरक्षा श्रेणी के कर्मचारी, जो सीधे ट्रेन संचालन से जुड़े हैं, सुरक्षित ट्रेन संचालन के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से फिट होने चाहिए। निर्णय से उत्पन्न होने वाली त्रुटियों की संभावना को समाप्त करने के लिए उचित मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य आवश्यक है, और इसे सुनिश्चित करने के लिए इन कर्मियों को समय-समय पर मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से गुजरना पड़ता है। आरडीएसओ का मनो-तकनीकी निदेशालय इन कर्मचारियों हेतु वर्षों से मनोवैज्ञानिक परीक्षण कर रहा है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने आरडीएसओ से स्टेशन कंट्रोलर/ट्रेन ऑपरेटर के पद के लिए साइकोमेट्रिक टेस्ट आयोजित करने का अनुरोध किया जिससे कि दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ कॉरिडोर में उनके संभावित ट्रेन संचालन की योजना समय पर पूरी की जा सके। आरडीएसओ, विभिन्न मेट्रो रेलवे और रेल सार्वजनिक उपक्रमों के स्टेशन कंट्रोलर एवं ट्रैन ऑपरेटरों के लिए नियमित तौर पर साइकोमेट्रिक टेस्ट आयोजित करता रहता है, परन्तु एनसीआरटीसी आवास और शहरी विकास मंत्रालय के अधीन है। अत: इसके लिए आरडीएसओ ने रेलवे बोर्ड से विशेष अनुमति प्राप्त की और फिर इस परीक्षा का आयोजन किया।

इस परीक्षण का आयोजन कोविड प्रोटोकॉल के साथ 18 जनवरी, 2022 को नई दिल्ली में सी.बी.टी. माध्यम में किया गया। अगले चरण के रूप में हर अभ्यर्थी का 'रिएक्शन टाइम' का परीक्षण कम्प्यूटर द्वारा 24-28 जनवरी के बीच आरडीएसओ कार्यालय में पूरा किया गया।

एनसीआरटीसी का उद्देश्य राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) को लागू करना है। वर्तमान में (आरआरटीएस) का चरण-1, जो दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ को जोड़ता है, की स्थापना और परीक्षण के उन्नत चरण में है। आशा है, इसका संचालन सितंबर 2022 तक शुरू हो जाएगा।

आरडीएसओ ने महामारी और अपने मनोवैज्ञानिकों की सीमित संख्या होने के बावजूद मात्र चार दिनों के अंदर 423 उम्मीदवारों का सफलतापूर्वक परीक्षण किया, जिससे कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम का काम द्रुत गति से आगे बढ़ सके। इसमें सफल अभ्यर्थियों के कार्य संचालन प्रारम्भ करते ही आरआरटीएस जल्द ही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में यात्रा का सबसे तेज, सबसे आरामदायक और सबसे सुरक्षित तरीका होगा।

विक्रेता अनुमोदन में प्रमुख नीतिगत परिवर्तन और परीक्षण शुल्कों को समाप्त करना

आरडीएसओ ने सरकार की 'मेक इन इंडिया' एवं 'आत्मनिर्भर भारत' के अंतर्गत भावी विक्रेताओं को भारतीय रेल आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बनने एवं व्यापार करने में आसानी के लिए अपनी विक्रेता अनुमोदन नीति में प्रमुख नीतिगत परिवर्तन किए हैं। सामान्य विक्रेताओं के लिए विक्रेता पंजीकरण शुल्क अब रु 2.5 लाख रुपये से घटाकर 15 हजार रुपये कर दिया गया है। इसी तरह, एमएसएमई विक्रेताओं की अधिक भागीदारी को सक्षम करने के लिए एमएसएमई के लिए पंजीकरण शुल्क रु. 1.5 लाख रुपये से घटाकर रु. 10 हजार रुपये कर दिया गया है। विदेशी फर्मों के लिए पंजीकरण शुल्क +12,000 डॉलर से घटाकर +500 डॉलर कर दिया गया है।

आरडीएसओ ने एक अन्य प्रमुख नीतिगत पहल के रूप में नमूना/प्रोटोटाइप परीक्षण शुल्क को अब पूरी तरह समाप्त कर दिया है और आरडीएसओ में नमूना परीक्षण के लिए यह प्रक्रिया मुफ्त कर दी गई है। आरडीएसओ ने विक्रेता अनुमोदन प्रक्रिया में तेजी लाने हेतु रेलवे को आपूर्ति सुनिश्चित करने से पहले सफल नमूना/प्रोटोटाइप परीक्षण की सफलता शर्त के साथ क्षमता मूल्यांकन के पूरा होने के तुरंत बाद आवेदक के रूप में विक्रेता को विकासात्मक विक्रेता के रूप में अनुमोदित करने की प्रणाली विकसित की है। इससे आवेदक वेंडर क्षमता मूल्यांकन के तत्काल बाद विकासात्मक विक्रेता के रूप में रेलवे निविदाओं में भाग लेने के पात्र हो गए हैं। इससे अब रेल मदों की आपूर्ति हेतु निकाली गई निविदाओं में अधिक संख्या में वेंडर भाग ले सकेंगे।

विक्रेता पंजीकरण प्रक्रिया में तेजी लाने एवं उसे पारदर्शी लाने हेतु आरडीएसओ ने आईआरईपीएस वेबसाइट पर यूनिफाइड वेंडर अप्रूवल मॉड्यूल (यूवीएएम) लांच किया है और वेंडर अप्रूवल प्रक्रिया को पूरी तरह से सरल कर दिया गया है। इस पोर्टल पर सभी इच्छुक वेंडर अनुमोदन हेतु आवेदन कर सकते हैं और अपने आवेदन के प्रगति के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आरडीएसओ द्वारा वेंडर अप्रूवल हेतु किए जा रहे प्रोत्साहन के कारण वर्ष 2021 में 600 नए विक्रेताओं को पंजीकृत किया गया जो कि पिछले वर्ष इसी अवधि में पंजीकृत किए गए नए 340 विक्रेताओं के अपेक्षा 76.5% अधिक है।

उपरोक्त परिवर्तनों से अधिक एमएसएमई विक्रेताओं सहित वेंडर भारतीय रेल से जुड़ेंगे और इसके परिणामस्वरूप भारतीय रेल और उद्योग को दूरगामी लाभ होंगे।

भारतीय रेल में मनाया गया
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

भारतीय रेल पर प्रतिवर्ष की भांति 8 मार्च, 2022 को 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' धूमधाम से मनाया गया। उल्लेखनीय है कि भारतीय रेल पर 'केन्द्रीय रेल महिला कल्याण संगठन' के नेतृत्व में क्षेत्रीय रेलों, मंडल एवं कारखानों में महिला कल्याण संगठन रेलकर्मियों एवं उनके सर्वांगीण हित के लिए कार्य कर रहे हैं। यहां विभिन्न क्षेत्रीय रेलों, उत्पादन इकाइयों में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मनाये गए समारोह की झलकियां प्रस्तुत की जा रही हैं:

रेल पहिया कारखाना

'रेल पहिया कारखाना महिला कल्याण संगठन' की अध्यक्षा श्रीमती ममता दुबे के नेतृत्व में रेल पहिया कारखाना में 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर कारखाना के महाप्रबंधक श्री अजय कुमार दूबे ने भी समारोह को संबोधित किया।

इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं, जिनके विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।



दक्षिण रेलवे



दक्षिण रेलवे के मुख्यालय में 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर एक विशेष स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 75 महिला रेलकर्मियों ने भाग लिया।

शिविर में पेरम्बूर रेलवे अस्पताल की मुख्य स्त्री रोग विशेषज्ञा डॉ. कल्याणी ने ब्रेस्ट कैंसर पर विशेष जानकारी दी।

दक्षिण पूर्व रेलवे

'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर दक्षिण पूर्व रेलवे मुख्यालय में आयोजित समारोह में सम्मानित रेलवे सुरक्षा बल की महिला रेलकर्मियों के साथ महाप्रबंधक सुश्री अर्चना जोशी।



डीएफसीसीआईएल

'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर डीएफसीसीआईएल के प्रबंध निदेशक ने महिला रेल कर्मियों को संबोधित करते हुए उन्हें बेहतर लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।



मध्य रेल



श्रीमती मीनू लाहोटी, अध्यक्ष 'मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन' की अध्यक्षता में 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' हर्षोउल्लास से मनाया गया।

इस अवसर पर रेलकर्मियों एवं उनके परिजनों के लिए विभिन्न रेलवे कॉलोनियों में स्वास्थ्य शिविर का भी आयोजन किया गया।

रेल कोच कारखाना

श्रीमती सुरभि अग्रवाल, अध्यक्ष रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षता में 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' हर्षोउल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया । कार्यक्रम में फरवरी 2023 तक सेवानिवृत्त होने वाली आरसीएफ की महिला कर्मचारियों को स्मृति चिन्ह दिया गया। इसके अलावा आरसीएफ में कार्यरत सभी महिला डॉक्टरों और कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया।



पश्चिम मध्य रेलवे



'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर पश्चिम मध्य रेल की महिलाओं ने रेलवे की कमान संभाली और चुनौतीपूर्ण कार्यों को आगे बढ़कर संचालित किया। इस दौरान महिला लोकों पायलटों ने ट्रेनों का संचालन किया तो पिट लाइन, सिक लाइन के कार्य भी महिलाओं ने अपने दम पर संभाले।

पूर्वोत्तर रेलवे

'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' 2022 के अवसर पर पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय महिला सशक्तीकरण समिति द्वारा 08 मार्च, 2022 को महिला सुरक्षा पर सेमिनार का आयोजन किया गया एवं पूर्वोत्तर रेलवे कला समिति की महिला कलाकारों द्वारा मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि एवं पूर्वोत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन की उपाध्यक्ष श्रीमती विधि अग्रवाल ने किया।





उत्तर मध्य रेलवे



उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर 28 चतुर्थ श्रेणी महिला रेलकर्मियों को संगठन की अध्यक्षा श्रीमती पूनम कुमार द्वारा प्रमाण-पत्र एवं व्यक्तिगत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सचिव श्रीमती वन्दना मिश्रा, श्रीमती गीतांजलि वर्मा, श्रीमती नूपुर अग्रवाल, श्रीमती दीप्ति माथुर, श्रीमती ममता वर्मा, श्रीमती अर्चना कुमार, श्रीमती उषा सिंह, श्रीमती सुषमा सिन्हा, श्रीमती पूर्णिमा सिंह, श्रीमती श्रीवल्ली शर्मा, डॉ. रूपा कपिल, श्रीमती मंजुलिका मिश्रा उपस्थित थीं।

मेट्रो रेलवे

'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर मेट्रो रेलवे की महिला कर्मचारियों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया



पश्चिम रेलवे



'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2022' के अवसर पर पश्चिम रेलवे की एक लेडीज स्पेशल ट्रेन में यात्रा करने वाली महिलाओं ने यात्रा के दौरान योगाभ्यास किया और लोगों को सीमित समय के सदुपयोग का अनोखा संदेश दिया।

दक्षिण मध्य रेलवे

गुंडसा पोचमपल्ली स्टेशन, तेलंगाना, दक्षिण मध्य रेलवे को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'अखिल महिला स्टेशन' घोषित किया गया।





भारतीय रेल ने ओबैदुल्ला खान हॉकी कप टूर्नामेंट जीता

भारतीय रेल की पुरुष हॉकी टीम ने 21 से 27 मार्च, 2022 तक भोपाल (मध्य प्रदेश) में आयोजित प्रतिष्ठित ओबैदुल्ला खान हेरिटेज हॉकी कप टूर्नामेंट जीत लिया है। फाइनल मुकाबले में रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड (आरएसपीबी) की टीम ने आर्मी इलेवन को 2 गोल से पराजित किया। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने इस प्रतियोगिता का उद्घाटन किया था। रेलवे टीम के अर्जुन



को 'मैन ऑफ द टूर्नामेंट' चुना गया। 'मैन ऑफ द फाइनल मैच' रेलवे की तरफ से जोगिंदर, सर्वश्रेष्ठ डिफेंडर जसजीत और सर्वश्रेष्ठ मिड फील्डर नियाज रहीम थे।

ऑल इंडिया रेलवे पुरुष और महिला वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप संपन्न





रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला में 24 फरवरी से करवाई जा रही 68वीं ऑल इंडिया रेलवे पुरुष वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप और 7वीं ऑल इंडिया रेलवे महिला वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप संपन्न हो गई। पुरुष वर्ग में दक्षिण पश्चिम रेलवे, हुबली की टीम ने चैंपियनशिप विजेता का खिताब हासिल किया जबकि पश्चिम रेलवे मुंबई की टीम ने महिला वर्ग में चैंपियनशिप विजेता का खिताब जीता। पुरुष वर्ग में पश्चिम रेलवे मुंबई की टीम को दूसरा और दक्षिण मध्य रेलवे, सिकन्दराबाद की टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। महिला वर्ग में मध्य रेलवे मुंबई की टीम को दूसरा और उत्तर मध्य रेलवे प्रयाग की टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। चैंपियनशिप की समाप्ति पर पुरस्कार वितरण हुआ, जिसकी अध्यक्षता आरसीएफ के महाप्रबंधक श्री अशेष अग्रवाल ने की। इस अवसर पर आरसीएफ के सभी प्रमुख अधिकारी, आरसीएफ खेल संघ के अध्यक्ष श्री नितिन चौधरी, ऑनरेरी जनरल सेक्रेटरी श्री दावा छेरिंग सहित सभी पदाधिकारी और खेलप्रेमी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय रेल तीरंदाजी चैंपियनशिप का आयोजन

चितरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) के तीरंदाजी प्रशिक्षण अकादमी में 11वीं अखिल भारतीय रेल (महिला एवं पुरुष) तीरंदाजी चैंपियनशिप प्रतियोगिता का शुभारंभ 25 फरवरी को किया गया। जिसमें चिरेका सहित 9 अन्य रेलवे क्षेत्र के महिला पुरुष प्रतिभावान तीरंदाजों ने हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता का समापन 27 फरवरी को श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक/चिरेका के द्वारा विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण के साथ किया गया।



79वीं अखिल भारतीय रेल हॉकी पुरुष प्रतियोगिता संपन्न

रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड एवं पश्चिम मध्य रेलवे (पमरे) खेल-कूद संघ के तत्वावधान में व पमरे के महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन में एस्ट्रोटर्फ हॉकी ग्राउंड, दामोह में खेली जा रही 79वीं अखिल भारतीय हॉकी पुरुष प्रतियोगिता का 14 मार्च, 2022 को सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता का फाइनल उत्तर रेलवे ने दक्षिण मध्य रेलवे को हराकर जीता। रेल कोच फैक्ट्री ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर इस वर्ष सेवानिवृत्त होने वाले तीन टेक्निकल ऑफिशियल सुश्री विधु यादव, श्री राजेश बिहारी एवं श्री बी.वी. रत्नाकर को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. आशुतोष गर्ग, महासचिव, पमरे खेलकूद संघ, श्री रविन्दर, डिप्टी डायरेक्टर, आर.एस.पी.बी., श्री परवीन, समन्वयक, आर.एस.पी.बी. उपस्थित थे।



अखिल भारतीय रेल भारोत्तोलन प्रतियोगिता में उत्तर मध्य रेलवे ने जीते 7 पदक



कपूरथला में आयोजित 68वीं पुरुष और 7वीं महिला अखिल भारतीय रेल भारोत्तोलन प्रतियोगिता में उत्तर मध्य रेलवे ने 3 स्वर्ण, 3 रजत और 1 कांस्य पदक हासिल किया। एन. सुमनबाला ने 64 किग्रा में, शशि यादव ने 87 किग्रा में और प्रभाकरण ने 81 किग्रा में स्वर्ण पदक हासिल किया। जबकि बी. उषा ने 64 किग्रा में मुन्नी ने 87 किग्रा वर्ग में और विशाल सोलंकी ने 109 किग्रा वर्ग में रजत पदक हासिल किया। प्रीति रानी ने 71 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक जीता।

महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, श्री प्रमोद कुमार ने भारोत्तोलन टीम द्वारा हासिल की गई शानदार उपलब्धि की सराहना की।

पश्चिम मध्य रेलवे के खिलाड़ियों ने भारोत्तोलन में पदक जीते

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला में अखिल भारतीय रेल भारोत्तलन प्रतियोगिता 2021-22 आयोजित की गई, जिसमें सभी क्षेत्रीय रेलवे के भारोत्तलन खिलाड़ियों ने भाग लिया। इस भारोत्तलन प्रतियोगिता में 109 किलोग्राम की श्रेणी में पश्चिम मध्य रेल के नवीन (जूनियर लिपिक, कार्मिक सीएंडडब्ल्यू विभाग जबलपुर मंडल) ने स्वर्ण पदक एवं बी.एस.डी. विष्णु वर्धन (जूनियर लिपिक, इलेक्ट्रिकल विभाग जबलपुर मंडल) ने कांस्य पदक जीतकर पश्चिम मध्य रेलवे का गौरव बढ़ाया है।



माल ढुलाई कारोबार में डिजिटल पहल

श्री अतुल कुमार
उप. निदेशक/ दर-I, रेलवे बोर्ड

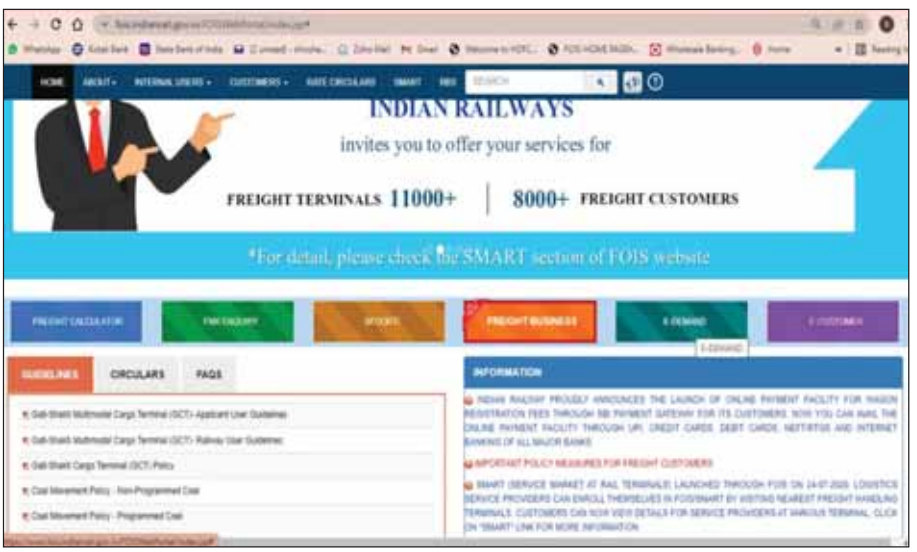
रेल परिवहन आर्थिक प्रगति का प्रवर्तक है, जिसका उपयोग माल और लोगों की आवाजाही के लिए किया जाता है। भारत में परिवहन का प्रमुख साधन रेलवे है। भारतीय रेल को अक्सर 'राष्ट्र की जीवन रेखा' कहा जाता है। यह न केवल यात्रियों और सामान का परिवहन करती है, बल्कि पूरे देश को एक सामान्य सूत्र में बांधती है। अर्थव्यवस्था के संदर्भ मे भारतीय रेल (IR) बाजारों को एकीकृत करने और व्यापार बढ़ाने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। यह हर साल 1.2 बिलियन टन से अधिक माल की ढुलाई करती है।



अपने कारोबार को आसान बनाने के लिए भारतीय रेल के माल ढुलाई कारोबार में डिजिटलीकरण की दिशा में कई उपाय शुरू किए गए हैं। शुरू से अंत तक की सभी गतिविधियों, जैसेकि वैगनों के लिए मांगपत्र देना, रेलवे रसीद तैयार करना, भुगतान का तरीका, ग्राहक को रेलवे रसीद का प्रेषण, ग्राहक द्वारा मालगाड़ी की ट्रैकिंग और रेलवे रसीद जमा करने पर माल की डिलीवरी को डिजिटल बना दिया गया है। सहायक प्रभारों (विलंब शुल्क/ घाटा शुल्क आदि) के लिए बिल तैयार करने और धन रसीद जारी करने में भी डिजिटलीकरण की शुरुआत की गई है। रेलवे कार्यालयों की विभागीय गतिविधियों जैसेकि, रेलवे रसीद का लेखा कार्यालय में प्रसारण, माल की बैलेंस शीट तैयार करना और नकद प्रेषण आदि को भी ऑनलाइन कर दिया गया है।

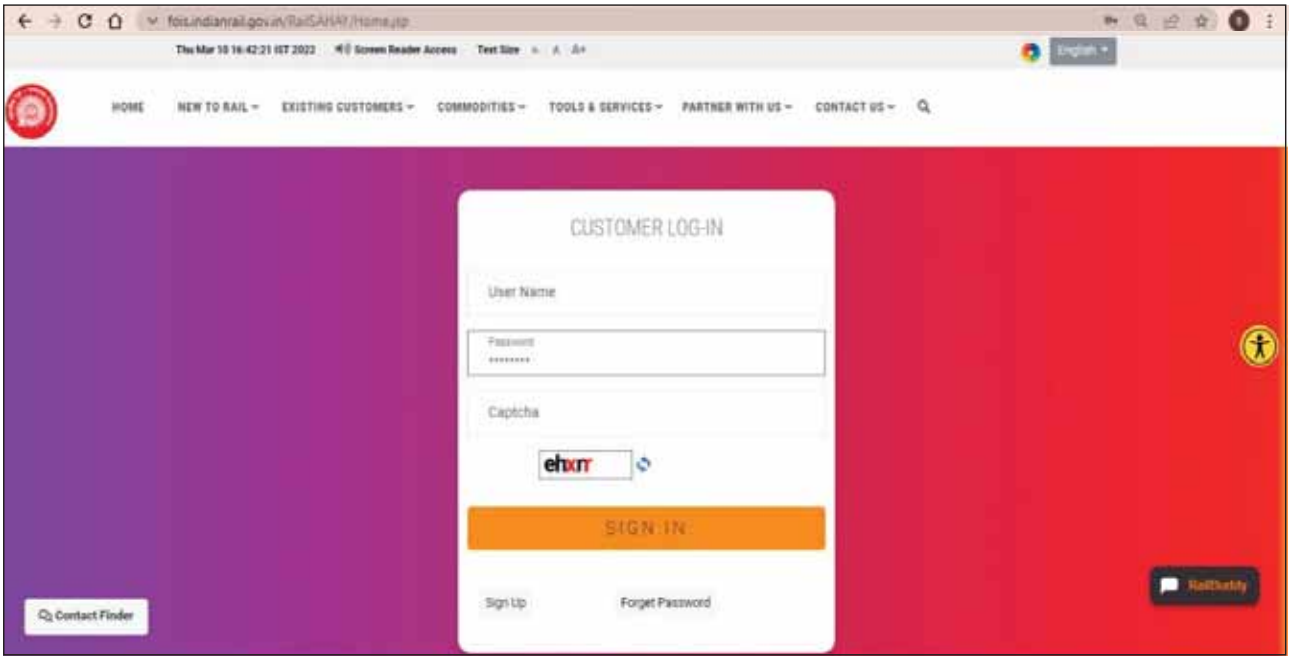
फ्रेट टर्मिनलों पर टर्मिनल प्रबंधन प्रणाली

सभी सामान बुकिंग पॉइंट्स पर टर्मिनल प्रबंधन प्रणाली प्रदान की जाती है। इस प्रणाली के माध्यम से रेलवे रसीद तैयार करने की सुविधा प्रदान करती है। हाल के दिनों में फील्ड स्तर पर डिजिटल कामकाज को बढ़ावा देने के लिए कुछ विशेषताओं को शामिल किया गया है (क) ऑनलाइन माल बैलेंस शीट तैयार करना और जमा करना (ख) सिस्टम आधारित विलंब शुल्क/ घाट शुल्क बिल (ग) सिस्टम के माध्यम से धन प्राप्ति की रसीद जनित करना (घ) ई-नकद प्रेषण नोट और (ङ) माल ढुलाई ग्राहक के हैंडलिंग एजेंट के नाम पर धन रसीद जारी करने की अनुमति।



फ्रेट ग्राहकों के लिए ऑनलाइन इंटरफेस

फ्रेट ग्राहकों को फ्रेट ऑपरेशन इंफॉर्मेशन सिस्टम (FOIS) के माध्यम से ऑनलाइन इंटरफेस प्रदान किया गया है, जिसमें वे सभी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सभी वस्तुओं के लिए माल ढुलाई वर्ग और दर/ रेट (प्रत्येक स्टेशन के लिए इंडेंट/ मांग की स्थिति (बकाया मांगपत्र, सबसे छोटा/ लोकप्रिय मार्ग, टर्मिनल हैंडलिंग



सुविधाएं और माल ढुलाई कैल्कुलेटर। ग्राहक FOIS में अपने खातों को लॉग इन करते समय अपने रैक्स को ट्रैक और ट्रेस कर सकते हैं।

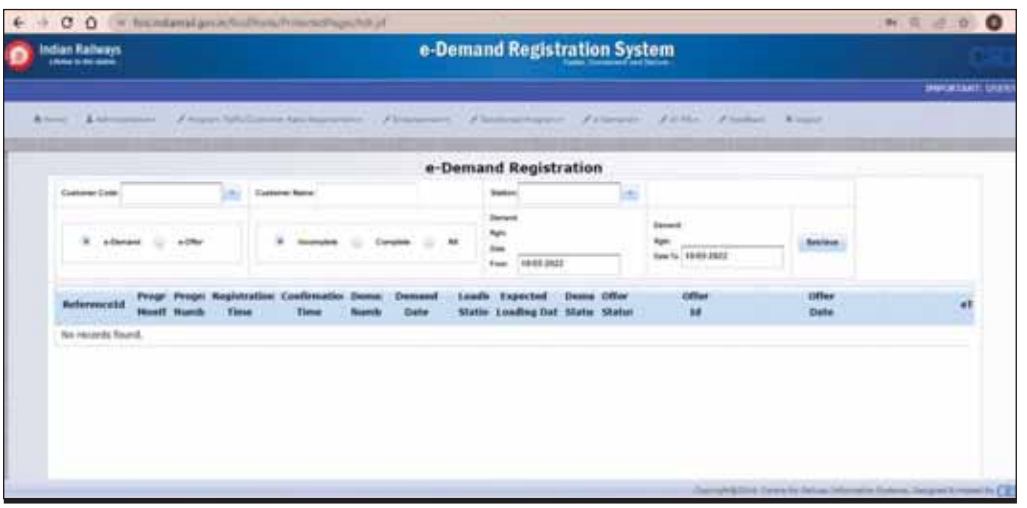
वैगनों की मांग के लिए इलेक्ट्रॉनिक पंजीकरण (e-RD)

इससे पहले भारतीय रेल द्वारा अपने माल का परिवहन करने के इच्छुक ग्राहकों के लिए आवश्यक विवरण मैन्युअल रूप से भरकर माल क्लर्क को भौतिक रूप में अग्रेषण नोट जमा करना आवश्यक था। माल क्लर्क इस बात से संतुष्ट हो जाने पर कि, मांग को पंजीकृत किया जा सकता है, जहां भी लागू हो, वैगन पंजीकरण शुल्क (WRF) एकत्र करता और स्टेशन या माल शेड में बनाए गए वैगन मांग/ प्राथमिकता रजिस्टर में विवरण दर्ज कर लेता। इसके लिए ग्राहक को भौतिक रूप से माल शेड का दौरा करने की आवश्यकता होती थी जो एक थकाऊ और काफी समय लेने वाला काम था।

वर्ष 2014 से इलेक्ट्रॉनिक रूप से वैगनों की मांग का पंजीकरण (e-RD) लागू किया गया है। e-RD रेल उपयोगकर्ताओं को FOIS वेब पोर्टल के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से वैगनों की मांग दर्ज करने की सुविधा प्रदान करता है। इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए, संभावित ग्राहक को ई-डिमांड मॉड्यूल पर खुद को पंजीकृत और सत्यापित करना होगा। पंजीकरण के बाद ग्राहक मॉड्यूल में लॉग-इन करके वैगनों की मांग कर सकता है। वैगन पंजीकरण शुल्क भी इलेक्ट्रॉनिक रूप से एकत्र किया जाता है। इसने वैगनों की मांग दर्ज करने की प्रक्रिया को सरल, सुविधाजनक, तेज और पारदर्शी बना दिया है।

रेलवे रसीद का इलेक्ट्रॉनिक प्रसारण (eT-RR)

कुछ समय पूर्व तक, TMS के माध्यम से लदान के पूरा होने के बाद रेलवे रसीद (RR) फारवर्डिंग स्टेशन पर तैयार की जाती थी। रसीद (RR), ट्रांजिट इनवॉइस, अकाउंट्स फ़ॉयल और रिकॉर्ड फ़ॉयल नाम से चार फ़ॉयल्स पेपर मुद्रित होते थे। RR पर गुड्स शेड स्टाफ के हस्ताक्षर होते हैं। RR प्री-प्रिंटेड स्टेशनरी पर रेल ग्राहक (अर्थात कंसाइनर) को दिया जाता था, जो इसे आगे डाक या कूरियर के माध्यम से कंसाइनी को ट्रांसफर करता है। RR का अनुमोदन मैन्युअल रूप से किया जाता था। गंतव्य स्टेशन पर, ग्राहक द्वारा मूल RR के



समर्पण पर डिलीवरी रजिस्टर पर बीजक या पृष्ठांकित प्रेषिती/ओं के विधिवत् हस्ताक्षर लेकर खेप की सुपुर्दगी दी जाती थी।



अगस्त, 2019 में अखिल भारतीय आधार पर रेलवे रसीद (eT-RR) का इलेक्ट्रॉनिक संचरण/ट्रांसमिशन शुरू किया गया है। eT-RR एक उपयोगकर्ता के अनुकूल और कागज रहित लेनदेन प्रणाली की परिकल्पना है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक रूप से रेल ग्राहकों को रेलवे रसीद प्रेषित की जाती है इस सुविधा का लाभ उठाने के इच्छुक ग्राहक (प्रेषक और प्रेषिती, दोनों) को FOIS के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से (e-RD) वैगनों की मांग के पंजीकरण के लिए निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार अपना पूर्व-पंजीकरण करना होगा। बुकिंग के समय ग्राहक eT-RR का विकल्प चुन सकता है। लोडिंग पूरी होने के बाद, सिस्टम में eT-RR जेनरेट होगा, जिसे ग्राहक FOIS पर एक्सेस कर सकता है। कंसाइनर अपने संगठन के पंजीकृत उपयोगकर्ता को या FOIS के माध्यम से कंसाइनी को eT-RR हस्तांतरित कर सकता है। कंसाइनर द्वारा eT-RR के ई-सरेंडर पर कंसाइनमेंट की डिलीवरी दी जाती है। ई-सरेंडर की प्रक्रिया रीबुकिंग और डाइवर्जन के मामले में भी लागू होती है। eT-RR लिए इलेक्ट्रॉनिक रूप से गंतव्य स्टेशन और भारतीय रेल के लेखा कार्यालयों/एकाउंट्स ऑफिसेस को प्रेषित किया जाता है।

माल ढुलाई शुल्क के लिए डिजिटल भुगतान प्रणाली

पहले, ग्राहक पारंपरिक मोड जैसे डिमांड ड्राफ्ट, पोस्टल ऑर्डर, चेक और नकद के माध्यम से माल ढुलाई शुल्क का भुगतान करते थे। इस मोड में रेलवे कार्यालयों में सुलह के मुद्दों के अलावा, बहुत सारी मैनुअल प्रक्रिया, समय की खपत, देरी और ग्राहक को बहुत सारी असुविधायें शामिल हैं।

एक ग्राहक हितैषी कदम के रूप में, माल ढुलाई व्यवसाय में डिजिटल भुगतान मोड लागू किया गया है। डिजिटल भुगतान माल ढुलाई शुल्क के भुगतान का तेज़, सुरक्षित, कुशल और पारदर्शी तरीका प्रदान करता है, जो आमतौर पर बड़े मूल्य के लेन-देन होते हैं। डिजिटल भुगतान प्रणाली दो प्रकार की होती है, अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक भुगतान (माल ढुलाई के लिए ई-भुगतान प्रणाली और भाड़ा एवं सहायक शुल्क के लिए ऑनलाइन भुगतान प्रणाली)। ई-भुगतान ग्राहक के बैंक खाते से सीधे माल ढुलाई प्रभारों के संग्रह को सक्षम बनाता है। ई-भुगतान प्रणाली को साख पत्र/बैंक गारंटी और ग्राहक, बैंक और क्षेत्रीय रेलवे के बीच समझौतों का निष्पादन करने की आवश्यकता होती है। सभी प्रमुख और नियमित माल ढुलाई ग्राहकों ने इस योजना का विकल्प चुना है। हालांकि, अनियमित ग्राहक, जो समझौते में शामिल होना नहीं चाहते थे, पारंपरिक माध्यम से भुगतान करना जारी रखते हैं। सभी माल ढुलाई ग्राहकों को डिजिटल मोड के तहत लाने के लिए, ऑनलाइन भुगतान प्रणाली 02 जून, 2021 को शुरू की गई है। यह प्रणाली SBI के भुगतान गेटवे के माध्यम से, फ्रेट बिजनेस डेवलपमेंट (FBD) पोर्टल पर उपलब्ध है। यह माल और सभी प्रकार के सहायक शुल्क जैसेकि, प्रीमियम शुल्क (प्रीमियम मांगपत्र के मामले में), वैगन पंजीकरण शुल्क, विलंब शुल्क, घाटा शुल्क, साइडिंग शुल्क, शंटिंग चार्ज, रीबुकिंग चार्ज, डाइवर्जन चार्ज इत्यादि के संग्रह की सुविधा प्रदान करती है। यह भुगतान प्रणाली सप्ताह के सभी सात दिनों में चौबीसों घंटे उपलब्ध है। इस सुविधा का लाभ उठाने के इच्छुक ग्राहकों को FOIS के FBD/eRD पोर्टल पर अपना पंजीकरण कराना आवश्यक है। ग्राहक अपने एंडोर्सी/ हैंडलिंग एजेंट को द्वितीयक ग्राहक के रूप में भी पंजीकृत कर सकता है और उन शुल्कों का नाम बता सकता है जिनका भुगतान ग्राहक की ओर से ऐसे द्वितीयक ग्राहक द्वारा किया जाएगा। यह भुगतान प्रणाली TMS स्थान पर ग्राहक के डैश बोर्ड के माध्यम से नेट बैंकिंग/ आरटीजीएस/ एनईएफटी, क्रेडिट कार्ड/ डेबिट कार्ड/ यूपीआई जैसे सभी माध्यमों से उपलब्ध है।

माल ढुलाई संबंधी विषयों के आवेदनों की अपलोडिंग

रेल ग्राहक माल ढुलाई संबंधी विभिन्न गतिविधियों, जैसे स्टैकिंग अनुमति, डाइवर्जन, रीबुकिंग, गंतव्य वितरण की कमी, विलंब शुल्क/घाटा शुल्क की छूट, स्टेशन-से-स्टेशन दरों आदि के लिए मैन्युअल आवेदन जमा करते थे। दिसंबर, 2021 से FOIS के फ्रेट बिजनेस विकास पोर्टल में डिजिटल सुविधा प्रदान की गई है, जहां माल ढुलाई ग्राहक अपने हस्ताक्षरित आवेदन को अपलोड कर सकता है और सिस्टम ऐसे आवेदन को आगे की प्रक्रिया के लिए संबंधित रेलवे प्राधिकरण को अग्रेषित करेगा। इससे ग्राहक को बहुत सुविधा मिली है और व्यापार प्रक्रिया को इसने परेशानी मुक्त बना दिया है।

डिजिटलीकरण के लाभ

डिजिटलीकरण ने सभी हितधारकों को सरल, पारदर्शी, सुविधाजनक और तेज माल ढुलाई सेवा प्रदान की है। इन पहलों को

माल ढुलाई ग्राहकों और उनके हैंडलिंग एजेंटों द्वारा अच्छी तरह से अपनाया गया है। इसने न केवल रेलवे के माल ढुलाई कारोबार में डिजिटलीकरण को बढ़ावा दिया है बल्कि माल ढुलाई ग्राहकों को अपने क्षेत्र में डिजिटल कामकाज को अपनाने के लिए भी प्रेरित किया है। इसने दस्तावेज लागत और मानव शक्ति की बचत करके माल ढुलाई ग्राहकों को अतिरिक्त लाभ भी प्रदान किया है। क्षेत्रीय रेलवे इन डिजिटल पहलों के दायरे को व्यापक बनाने के लिए ग्राहक सहभागिता के माध्यम से ठोस प्रयास कर रही हैं। समय-समय पर किए जाने वाले प्रक्रिया-सरलीकरण ने इसका दायरा बढ़ा दिया है, जो नीचे दी गई तालिका से स्पष्ट है-

डिजिटल पहल ने वस्तु एवं सेवा कर प्रावधानों के अनुपालन में सहायक है और ग्राहकों को सेनवैट क्रेडिट प्राप्त करने में काफी सुविधा प्रदान की है। कोविड महामारी के दौरान कॉन्टैक्टलेस फ्रेट बुकिंग सेवा प्रदान करके, यह एक वरदान साबित हुआ है। इसने देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में आवश्यक वस्तुओं (जैसे खाद्यान्न, फल, सब्जियां, डेयरी उत्पाद) की आपूर्ति सुनिश्चित की। डिजिटल सुविधाओं के अभाव में जहां मैनुअल प्रणाली प्रचलित होती, माल ढुलाई कारोबार का संचालन महामारी प्रतिबंधों के दौरान सफल नहीं हो सकता था।

भौतिक दस्तावेजों को हटाने से बहुत सारे कागज की बचत हुई है। इसने भारतीय रेल की प्रिंटिंग प्रेस पर बोझ को कम किया है। पेपरलेस होने से कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को कम करने में मदद मिलती है। कागज का जीवन-चक्र शुरू से अंत तक पर्यावरण के लिए हानिकारक है। इसकी शुरुआत एक पेड़ के कटने से होती है और यह जलकर अपना जीवन समाप्त कर लेता है - वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करता है। जब कागज सड़ता है, तो यह एक ग्रीनहाउस गैस, मीथेन का उत्सर्जन करता है। इस प्रकार, डिजिटल पहलों ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी योगदान दिया है।

माल ढुलाई कारोबार का डिजिटलीकरण

भारतीय रेल के नए उपक्रमों में फायदेमंद है जैसेकि निजी पार्टियों द्वारा मालगाड़ियों की आवाजाही, समर्पित फ्रेट कॉरिडोर और समय सारिणी माल एक्सप्रेस ट्रेनों की योजना। यह भारतीय रेल के माल ढुलाई कारोबार को बढ़ावा देना जारी रखेगा और रेलवे और इसके सम्मानित ग्राहकों के बीच गठबंधन को मजबूत करेगा।

भारतीय रेल पर माल ढुलाई का नेटवर्क बहुत बड़ा है। इसमें 17 क्षेत्रीय रेलवे और 70 मंडल शामिल है जिसमें 1,860 माल बुकिंग टर्मिनल, 1,102 निजी साइडिंग और 76 निजी फ्रेट टर्मिनल्स हैं। माननीय प्रधानमंत्री के 'डिजिटल इंडिया' के सपने को पूरा करने की दिशा में इन डिजिटल पहलों का कार्यान्वयन एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

	e-RD की प्रगति			eT-RR की प्रगति	
	पंजीकृत ग्राहकों की संख्या	e-RD के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक इंडेंट की संख्या	कुल मांग/ इंडेंट में e-RD का प्रतिशत	eT-RR की संख्या	कुल रेलवे रसीदों में
2019-20	3375	214518	53.7%	220847	38.4%
2020-21	5475	310056	72.5%	489184	80.9%
2021-22 (जनवरी तक)	7718	351336	82.8%	545452	97.3%

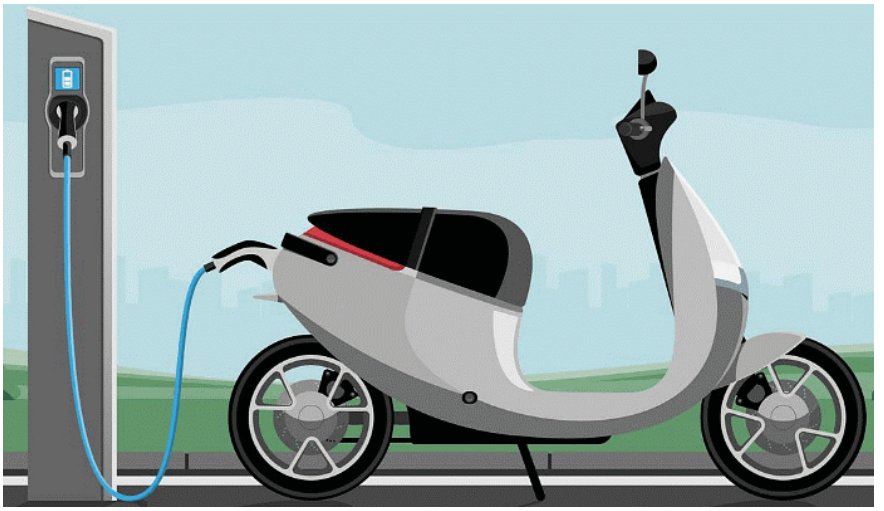
	इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली की प्रगति		ऑनलाइन भुगतान प्रणाली की प्रगति		कुल भुगतान में डिजिटल भुगतान का प्रतिशत
	ग्राहकों की संख्या	एकत्रित माल ढुलाई प्रभार राशि (करोड़ रु.)	ग्राहकों की संख्या	एकत्रित माल ढुलाई प्रभार राशि (करोड़ रु.)	
2019-20	887	103012.21	–	–	82.8%
2020-21	923	100040.78	–	–	83.1%
2021-22 (जनवरी तक)	943	98641.09	7718	9662.06	90.95%

	सिस्टम जनित धन प्राप्ति रसीद में प्रगति	FBD पोर्टल के माध्यम से ग्राहक आवेदनों में प्रगति	
	सिस्टम जनित धन प्राप्ति रसीदों की संख्या	इस सुविधा का इस्तेमाल करने वाले ग्राहकों की संख्या	प्राप्त हुए आवेदनों की संख्या
2019-20	1555011	–	–
2020-21	2001212	10	102
2021-22 (जनवरी तक)	1787643	36	1002

इलेक्ट्रिक वाहन - भविष्य का वाहन

श्री जी.वी. वेंकटेशन

इलेक्ट्रिक वाहन या ईवी, जैसाकि इन्हें लोकप्रिय तौर पर कहा जाता है, धीरे-धीरे भारतीय सड़कों पर अधिक संख्या में देखे जाने लगे हैं, और यह प्रवृत्ति केवल महानगरों और बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि तुलनात्मक रूप से छोटे शहरों में भी दिखने लगी है। ये अब पहले से अधिक डिजाइन और रंगों में आने लगे हैं और मुख्य रूप से इनके दो प्रकार अर्थात् दुपहिया और चौपहिया।



बढ़ोत्तरी के कारण

ईवी के प्रति यात्रियों के आकर्षण का मुख्य कारण पेट्रोल और डीजल जैसे जीवाश्म ईंधन की कीमतों में बढ़ोत्तरी है, जिसकी कीमत पिछले एक दशक में भारत में पहले ही काफी अधिक हो चुकी है और अभी भी बढ़ रही है। दूसरा कारण है कि प्रदूषण के बारे में जागरुकता जो आईसीई (आंतरिक दहन इंजन) से चलने वाले वाहनों से पैदा होती है जो न केवल धुआं छोड़ते हैं बल्कि ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ाते हैं। हाल ही में ईवी की बिक्री और सेवा नेटवर्क में वृद्धि के कारण दोपहिया ब्रांडों जैसे टीवीएस, बजाज, और टाटा, हुंडई, महिंद्रा, आदि जैसी चार पहिया कंपनियों सहित प्रमुख ऑटोमोबाइल निर्माताओं ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया है। इसलिए, जहां तक विश्वसनीयता की बात है तो कुछ साल पहले की तुलना में ईवी के प्रति विश्वसनीयता और उससे अपनाने को लेकर लोगों की सोच में काफी बदलाव आया है इस क्षेत्र में पहले बहुत कम भारतीय कंपनियां थीं और अधिकतर माल चीन से आयात करके भारत में रीब्रांड किया जाता था।

इतिहास

ईवी की शुरुआत 1828 की है, जब हंगरी के एनोस जेडलिक ने मोटर का उपयोग करके एक छोटी इलेक्ट्रिक कार बनाई थी। 1832 और 1839 के बीच स्कॉटिश आविष्कारक रॉबर्ट एंडरसन ने एक क्रूड इलेक्ट्रिक कैरिज विकसित किया। हमें यह जानकर काफी गर्व हो सकता है कि भारत में विद्युत क्रांति वर्ष 1996 में शुरू हुई, जब स्कूटर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने भारत के पहले इलेक्ट्रिक थ्री व्हीलर 'विक्रम साफा' का आविष्कार किया। लगभग 400 ऐसे वाहनों को स्कूटर्स इंडिया ने तैयार किया था। 2000 में भेल लिमिटेड ने आठ सीटों वाली इलेक्ट्रिक बस विकसित की। दिल्ली की सड़कों पर 200 ऐसी बसें दिखीं। हालांकि उस समय मुख्य बाधाएं बैटरी की उच्च लागत और ऐसे ईवी का कम समय तक चलना था। वर्ष 2007 में हीरो साइकिल्स ने यूके स्थित कंपनी अल्ट्रा मोटर्स के साथ साझेदारी में भारत में इलेक्ट्रिक बाइक का निर्माण शुरू किया। जैसा कि ऊपर कहा गया है, अब ऑटोमोटिव क्षेत्र के सभी प्रमुख खिलाड़ी ईवी क्षेत्र में अपनी बढ़त पर नजर गड़ाए





हुए हैं और नए वाहन और मॉडल लॉन्च कर रहे हैं जो चलने के लिए विद्युत शक्ति का उपयोग करते हैं।

शक्ति का स्रोत

वर्तमान में, इलेक्ट्रिक वाहनों में चार मुख्य प्रकार की बैटरी का उपयोग किया जाता है अर्थात् लीथियम-आयन, निकल-मेटल हाइड्राइड, लेड-एसिड और अल्ट्रा-कैपेसिटर। इलेक्ट्रिक कारों में उपयोग की जाने वाली सबसे आम प्रकार की बैटरी लीथियम-आयन बैटरी है। इस प्रकार की बैटरी जानी-पहचानी लग सकती है क्योंकि इन बैटरियों का उपयोग सेल फोन और कंप्यूटर सहित अधिकांश पोर्टेबल इलेक्ट्रॉनिक्स में भी किया जाता है। लीथियम-आयन बैटरी में भार की तुलना में उच्च शक्ति होती है, ये बेहतर उर्जा दक्ष होती हैं और उच्च तापमान पर भी बेहतर प्रदर्शन करती हैं। व्यावहारिक पक्ष से देखें तो इसका मतलब है कि बैटरी अपने वजन के लिए बहुत अधिक ऊर्जा रखती है, जो इलेक्ट्रिक कारों के लिए महत्वपूर्ण है - कम वजन का मतलब है कि कार एक बार चार्ज करने पर काफी दूर तक चल सकती हैं।

इसके बाद लेड-एसिड बैटरी द्वारा संचालित इलेक्ट्रिक वाहन आते हैं। हालांकि लेड-एसिड बैटरियों का उपयोग वर्तमान में केवल इलेक्ट्रिक वाहनों में अन्य बैटरी लोड के पूरक के लिए किया जा रहा है। ये बैटरियां उच्चशक्ति वाली, सस्ती, सुरक्षित और विश्वसनीय हैं, लेकिन उनके कम अवधि के जीवन और ठंडे तापमान में खराब प्रदर्शन के कारण इन्हें इलेक्ट्रिक वाहनों में उपयोग करना मुश्किल हो जाता है। उच्चशक्ति वाली लेड-एसिड बैटरियां विकसित की जा रही हैं, लेकिन अभी इन बैटरियों का उपयोग केवल वाणिज्यिक वाहनों में द्वितीयक भंडारण के रूप में किया जाता है।

अन्य दो का उपयोग कुछ निर्माताओं द्वारा छिटपुट रूप से किया जाता है। वर्तमान में कुछ वाहनों में लीथियम आयरन फॉस्फेट ($LiFePO_4$) बैटरियों का उपयोग किया जा रहा है, जो कम खराबी, लंबे जीवन, कॉम्पैक्ट आकार, हल्के वजन, उच्च सुरक्षा और दक्षता के कारण कठिन मौसम की स्थिति का सामना करते हैं। हालांकि उनके बहुत कम या नाममात्र के वोल्टेज के कारण इन बैटरियों में ऊर्जा भंडारण कम होता है और वे अन्य प्रकार की बैटरियों की तुलना में तेजी से खराब होती हैं। इसलिए, हम सुरक्षित रूप से कह सकते हैं कि ($LiFePO_4$) बैटरी बहुत शुरुआती चरण में हैं और अधिक ईवी में प्रसार से पहले इसे लंबा सफर तय करना होगा।

भारत में वर्तमान परिदृश्य

जनवरी, 2022 तक सभी श्रेणियों में भारत में पंजीकृत इलेक्ट्रिक वाहनों की कुल संख्या 9.13 लाख तक पहुंच गई है, जिसमें से दोपहिया वाहन 49 प्रतिशत हैं, जो अब तक का सबसे अधिक है, इसके बाद कारों/अन्य वाहनों को छोड़कर तिपहिया वाहन 45 प्रतिशत हैं। कम शक्ति वाले ईवी जिन्हें पंजीकरण की आवश्यकता नहीं है, यहां सूचीबद्ध नहीं हैं। 2020 के मध्य तक, भारत में कुल 934 सार्वजनिक ईवी चार्जिंग स्टेशन थे, अर्थात 22 ईवी के लिए एक सार्वजनिक चार्जर स्टेशन जबकि आदर्श आंकड़ा प्रति 8 ईवी पर एक सार्वजनिक चार्जर स्टेशन का है। यहीं पर अब सरकार की ओर से ध्यान दिया जा रहा है।



रेलवे में ईवीएस

वर्ष 1853 में मुंबई और ठाणे के बीच कोयले से चलने वाले इंजनों के चलने के बाद से रेलवे ने एक लंबा सफर तय किया

है। ये ज्यादा और फिर ज्यादा हॉर्स पावर के डीजल इंजनों में विकसित हुए और अब भारतीय रेल पूर्ण विद्युतीकरण के कगार पर है और इस प्रकार शून्य उत्सर्जन की दिशा में लक्ष्य को पूरी होने वाली है। भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयों में विद्युत इंजनों की उत्पादन संख्या बढ़ रही है और अंततः यह उम्मीद है कि एक बार 100% विद्युतीकरण प्राप्त हो जाने के बाद, भारत में केवल विद्युत इंजनों का उत्पादन किया जाएगा।

जमीनी स्तर पर बिजली संचालित इंजनों के प्रसार का एक और बेहतरीन उदाहरण दक्षिणी रेलवे द्वारा 'पसुमाई' ('हरा' के लिए तमिल शब्द) नामक बैटरी-सह-एसी संचालित शंटिंग लोकोमोटिव की शुरुआत है। इसका उपयोग डॉ. एमजीआर चेन्नई सेंट्रल रेलवे स्टेशन और बेसिन ब्रिज यार्ड के बीच खाली कोच/रेक की शंटिंग करने के लिए किया जा रहा है। ऐसे शंटिंग ग्रीन इंजन, जो बैटरी मोड में 3.5 से 4 घंटे तक चलने में सक्षम हैं और 24 कोच खाली रेक को खींचने की क्षमता रखते हैं, धीरे-धीरे वर्तमान डीजल शंटिंग इंजनों की जगह ले लेंगे।

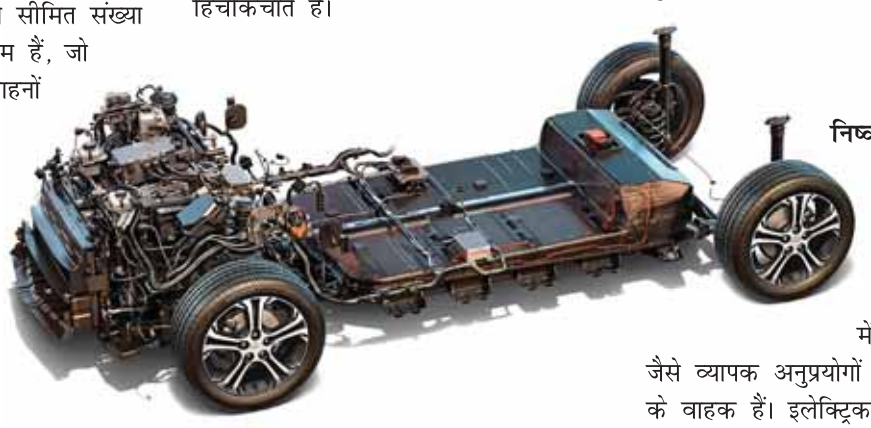
वर्तमान चुनौती

ईवी को चार्ज करने के लिए बुनियादी ढांचा और इन ईवी द्वारा प्रदान की जाने वाली रेंज बड़ी चुनौती है। इलेक्ट्रिक वाहनों को लंबी दूरी तक नहीं चलाया जा सकता क्योंकि महानगरों और बड़े शहरों में भी रिचार्जिंग सुविधाएं बहुत सीमित संख्या में उपलब्ध हैं। वे बहुत कम हैं, जो बड़ी संख्या में इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री को हतोत्साहित करते हैं, लेकिन केंद्र सरकार द्वारा बैटरी स्वैपिंग सुविधाओं और चार्जिंग स्टेशनों के लिए सब्सिडी के माध्यम से प्रोत्साहन एक बहुत ही उज्ज्वल संकेत है। हालांकि जहां तक बैटरियों की अदला-बदली का संबंध है, ईवी बैटरियों के आकार और डिजाइन का गैर-मानकीकरण ईवी बैटरियों की अदला-बदली की दिशा में एक बहुत बड़ी बाधा



है। वे विभिन्न क्षमताओं और विभिन्न आकारों में आती हैं। मोबाइल फोन के लिए विभिन्न प्रकार के यूएसबी चार्जिंग पिन की तरह, किसी खास कंपनी की बैटरी केवल संकट में इजाफा कर रही है। इसलिए भारत सरकार को नियम बनाकर और उन्हें लागू करके बैटरी की एकरूपता सुनिश्चित करनी चाहिए।

इसके अलावा सरकार हाईब्रिड वाहनों के निर्माण को प्रोत्साहित करने पर भी विचार कर सकती है जो जीवाश्म ईंधन और बिजली, दोनों पर चलेंगे। इससे आईसीई वाहनों से इलेक्ट्रिक वाहनों में आना सुगम होगा और उन खरीदारों को प्रोत्साहित करेगा जो रिचार्जिंग/स्वैपिंग सुविधाओं के कम विकास के कारण हिचकिचाते हैं।



भविष्य

वर्तमान सरकार द्वारा इलेक्ट्रिक वाहनों पर अधिक ध्यान देने और मजबूत स्वैपिंग/चार्जिंग बुनियादी ढांचे के निर्माण के साथ, निकट भविष्य में इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री की संख्या में वृद्धि निश्चित है। इससे विदेशों से जीवाश्म ईंधन के आयात में भी कमी आएगी, जिससे काफी मात्रा में अमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत होगी। इसके अलावा, इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए बड़ी मात्रा में बैटरी अभी भी विदेशों से आयात की जा रही है। इसलिए सरकार को ईवी बैटरी और अन्य पुर्जों के स्थानीय निर्माण के लिए अधिक छूट प्रदान करके बैटरी उद्योग को प्रोत्साहित करना चाहिए, जैसा कि हाल ही में घोषित सेमी- कंडक्टर के मामले में किया गया है। इससे लागत में काफी हद तक कमी सुनिश्चित होगी और सस्ते पुर्जों की उपलब्धता भी सुनिश्चित होगी।

निष्कर्ष

इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईवी न केवल सड़कों पर बल्कि पटरियों में इलेक्ट्रिक शंटर्स जैसे व्यापक अनुप्रयोगों के तौर पर भविष्य के वाहक हैं। इलेक्ट्रिक वाहन भारतीयों की आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, हरित और स्वच्छ भविष्य सुनिश्चित करेंगे।

सीनियर पीआरओ/आईसीएफ

रेशम की डोर

सुश्री उर्मिला शुक्ल

कस्बे की एक सर्द सुबह, कुहरे में लिपटा सूरज, तनिक बाहर झाँकता, फिर अपने लिहाफ में जा छुपता। ऐसे में भला मेरी क्या बिसात थी कि मैं...। सो उठने का मेरा संकल्प बार-बार भहरा रहा था। दिन चढ़ आया था, मगर ठंड कह रही थी कि बस मैं ही हूँ। रविवार था, सो चिंता की कोई बात भी नहीं थी। ''क्यों न एक नींद मार ली जाए।'' सोचा और लिहाफ ताना ही था कि कॉलबेल घनघनाई।

''कौन आ गया इतनी ठंड में?'' लिहाफ से जरा-सा मुँह निकाला था कि ठंड भीतर तक उतरती चली गई। ''होगा कोई। अपने आप लौट जाएगा।'' सोचा, और लिहाफ कस लिया, मगर अब कॉलबेल लगातार घनघना रही थी।

''कौन?'' स्वर में झुंझलाहट उतर आई। बेमन से चप्पल घसीटे और दरवाजा खोला... ''कुछु सुनेव आपमन? मास्टर साहब बीत गए।'' पड़ोसी थे।

...

''रात को जो सुते तो उठे ही नहीं।''

अब मैं कुछ सुन नहीं पा रही थी। भीतर कुछ हो रहा था, जिसमें उनकी आवाज ही नहीं, सब कुछ गुम हो चला था।

''बहुत परेमी मनखे रहिन।'' उनके होंठ हिल रहे थे। आवाज भी कानों तक पहुँची थी, पर वह कोई अर्थ न दे सकी। वे जा चुके थे। अब भीतर मेरे अतीत फैलाव ले रहा...

मास्टर साहब! सारा कस्बा उन्हें इसी नाम से जानता था। उनके इस नाम ने इतनी ख्याति पाई थी कि उनका असली नाम ही खो गया था और वे सबके मास्टर साहब बन गए थे। 'जीवन प्रकाश' उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया था। दूसरों का अँधेरा समेटने में अपना कितना कुछ पीछे छूटता चला गया था। गाँव-रिश्ते सब। वे लोगों में इस कदर डूबे कि सब भूल गए। उन्हें कभी लगा ही नहीं कि उनका कुछ निजी भी है। सिर्फ देना ही तो जाना था उन्होंने। काकी दाई नाराज होतीं-

''बस! एक कमंडल खंगे हे। धर लेव। हममन तो तुम्हारे कुछ लगते ही नहीं।'' वे कहतीं, मगर उनकी सरल सौम्य मुस्कान के सामने उनका ये आक्रोश कहाँ ठहरता था?

''उनका यह आक्रोश भी तो ऊपरी था। भीतर से तो उनकी अनुगामी ही थीं। अब आँखों में वे उभर आईं - गोरा रंग, माथे पे सिंदूरी बिंदी, कोष्टउहन लुगरा (करघे की साड़ी) और चूड़ियों भरी कलाइयाँ। मगर आज?'' सोच कर मैं सिहर उठी।

भाई साहब जा चुके थे। ठंड अभी भी वैसी ही थी, मगर मैं देर तक वहीं खड़ी रही। फिर जैसे-तैसे पैर घिसटते हुए कमरे तक पहुँची। ऐसा लग रहा था, मानो मीलों लंबा सफर तय किया हो। मन स्थिर नहीं हो रहा था। चलचित्र-सा चल रहा था - विद्यालय में मेरा पहला दिन था। दूसरों की तरह मैं भी उनके लिए अजनबी थी, मगर ज्वाइनिंग के बाद मुझे अपने घर ले गए। मुझे डर भी लगा। एक अनजान व्यक्ति के साथ? अखबारों में पढ़ी घटनाएं याद हो आर्यं। सोचा मना कर दूँ। मगर...

''डेरा झन! तेरे जैसी बेटी हे मेरी'' उन्होंने मुझे देखा था।

मैं सन्न! लगा, जैसे मेरी चोरी पकड़ ली गई हो। मन में डर तो था, पर ऊपरी मन से कहा।

''नहीं सर, ऐसी बात नहीं है।'' कह तो दिया, पर मन का भय बरकरार था, मगर घर पहुँचते ही काकी दाई और केतकी ने मुझे ऐसा अपनाया कि लगा ही नहीं कि वह किसी और का घर है। मैं ही नहीं, मेरे जैसे बहुतों की छाया थे वे। आज मुझे वहाँ जाना था, मगर हिम्मत नहीं हो रही थी। फिर भी जाना तो था। सो, दरवाजा बंद किया, मगर ताला था कि बंद ही न हो। बार-बार चाबी घुमाने के बाद भी खुला का खुला। हाथों में जैसे ताकत ही नहीं थी। देर तक चाबी और ताले से जूझने के बाद ताला बंद हुआ।

अब घिसटते कदमों से मैं उस घर की ओर बढ़ तो रही थी, मगर कदम साथ नहीं दे रहे थे। किसी तरह मैं उस द्वार तक पहुँची तो द्वार पर कोई नहीं! मन को धक्का लगा! यह वही द्वार था, जहाँ लोगों की भीड़ लगी रहती थी। मास्टर साहब अपना सब काम छोड़कर सबकी समस्याएं सुलझाते थे। तब लोग उन्हें कितना सम्मान देते थे; मगर पंचायती राज ने सारे समीकरण ही बदल दिए और बची-खुची कसर पूरी की नए राज्य ने। फिर तो जातीयता ऐसी हावी हुई कि सब कुछ बदल गया और मास्टर साहब जैसे लोग बिल्कुल अलग-थलग पड़ गए। अब यह कस्बा पहले जैसा नहीं रहा। यह तो मालूम था, मगर ये इस कदर बदल गया है कि? मैं भीतर गई। वहाँ भी बस काकी दाई और केतकी ही थीं।

मुझे देखते ही केतकी मुझसे आ लिपटी और बुक्का फाड़कर रो पड़ी। लगा कि अब तक बरबस रुका बांध फूट पड़ा हो। उसके हाथ लगातार मुझे कसते जा रहे थे और मैं उसके आँसुओं में भीग रही थी, पर उसे सँभालने की असफल कोशिश कर रही थी। उसके काँधे पर रखे मेरे हाथों में वह शक्ति ही नहीं थी कि मैं उसे सँभालती और शब्द? शब्द तो जैसे खो ही गए थे। बड़ी देर बाद वह कुछ सँभली थी, मगर काकी दाई? वे तो जैसे काठवा गई थीं। वे दीवार देखती वैसी ही बैठी रहीं, चुपचाप।

जिन आँखों में ममता की हिलोरें उठा करती थीं, उनमें आज असीम सूनापन था। दीवार बेधती नजरें जाने क्या ढूंढ़ रही थीं। शायद उसे जो कल तक तो उनके साथ थे, पर आज? उनके चेहरे पर अजीब-सी कठोरता थी। दिन कुछ और चढ़ आया, मगर द्वार अभी भी सूना था। बाहर निकल कर देखा, तो घरों के दरवाजे अभी भी बंद

थे। किसी-किसी घर से आवाजों के कुछ टुकड़े उछल कर बाहर आ रहे थे ''वो मारा! मैं कहता था न छक्का ही मारेगा।''

''तो आज भारत पाकिस्तान का मैच है! तभी गलियों में कर्फ्यू पसरा है, पर पूरा कस्बा मैच देखने में इतना तल्लीन है कि... क्या यह वही कस्बा है जिसे अपनाने के लिए मास्टर साहब ने अपना सब कुछ त्याग दिया? सोचकर मन कसैला हो उठा, मगर लोगों को बुलाना भी जरूरी था। सोचा, पड़ोसियों और स्कूल के साथियों को बुलाया जाए। पड़ोसियों को खबर की। कहीं क्रिक्रेट देखा जा रहा था, तो कहीं सास-बहू वाले सीरियल। सो ''चच... कब हुआ! अभी आते हैं।'' इन वाक्यों के साथ मैं सड़क पर थी। दिन चढ़ता जा रहा था और काठी-माटी का कोई इंतजाम न था। परेशान-सी मैं लौट रही थी कि शर्माजी नजर आए।

गणित अध्यापक। इस कठिन घड़ी में मुझे देवदूत से लगे और वास्तव में वे देवदूत ही साबित हुए। दाह-कर्म के लिए लकड़ी खरीदना और उसे श्मशान तक पहुँचाना, कफन की व्यवस्था करना। उन्होंने अपने दो दोस्तों को बुलाया और सब इंतजाम कर दिया। मास्टर साहब से उनका बहुत परिचय भी नहीं था। अभी पिछले माह ही तो उनकी नियुक्ति हुई थी। वे सब शिक्षाकर्मी थे और वे? जो मास्टर साहब के साथी होने दम भरा करते थे? क्या सब इतना बदल गया है कि अब उन्हें कुछ भी याद नहीं? इतना स्वार्थ? सोचकर वितृष्णा-सी हुई, मगर एक आश्वस्ति भी थी कि दुनिया अच्छे लोगों से खाली नहीं हुई है।

अब द्वार पर दो-चार लोग आ गए। फिर कुछ और लोग आए। उनमें कुछ महिलाएं भी थीं। सामने वाली गुप्ताइन ने तो आते ही शिकायत ठोंकी कि इतनी बड़ी बात हुई, और उन्हें अब खबर मिली? मन ने कहा- ''क्या सच में इस घर के रूदन का एक कतरा भी उन तक नहीं पहुँचा? पड़ोस में रहकर भी ये सचमुच अनजान रहीं! पूरे मोहल्ले में 'आकाशवाणी' के नाम से कुख्यात ये महिला क्या सचमुच ही अनजान है?'' मन तो किया कि करारा-सा दूँ, मगर यह समय इन बातों का नहीं था। सो, फिर तो जो आता, अनभिज्ञ होने का ढोंग ही रचता! यह गाँवनुमा कस्बा था, जहाँ एक घर का बघार तक सभी घरों में खरखराता है, उसी कस्बे में आज किसी को मास्टरजी की मौत की खबर नहीं हुई! सोच कर मन कसैला हो उठा।

पंडितजी आए और उनके निर्देशों पर केतकी कर्मकाण्ड के सामान जुटाने लगी। अब तक द्वार पर बीस-पच्चीस लोग जमा हो चुके थे, मगर विमान बनाने की बात पर सभी मौन। फिर किसी ने सलाह दी कि अब तो शहर में रेडीमेड विमान मिलने लगा है, फिर इतना झंझट क्यों? शर्माजी और उनके साथी विमान के लिए रवाना हुए। बाजारवाद जीवन में गहरे पैठ चुका है, यह तो मुझे मालूम था मगर उसकी गिरफ्त से अब मृत्यु भी नहीं बच पाई, यह मालूम न था।

विमान आया। बाकी सारी तैयारी तो ही हो चुकी थी। तमाम कर्मकांडों के बीच अब शव विमान पर था। मगर कंधा देने की बात पर सब कन्नी काट गए। मशान तक कंधा देने को कोई तैयार न था। यह सब उसी महान देश में हो रहा था, जिसकी संस्कृति की गाथाएं गाई जाती हैं। जहाँ अर्थी को कंधा देना पुण्यकर्म माना जाता था और अब आज उसी देश के एक कस्बे में अर्थी के लिए चार कंधे भी नहीं जुट रहे थे! समस्या उठी तो समाधान भी निकला, लोगों ने सलाह दी - मेटाडोर बुला ली जाए और शव को मेटाडोर से श्मशान तक पहुँचाया जाए। रही बात कंधा देने की, तो चार कदम चल कर कंधा देने की रस्म कर ली जाए। शर्माजी एक बार फिर शहर रवाना हुए। इन सब बातों के बीच काकी दाई एकदम चुप थीं और अभी भी दीवार को ही देख रही थीं।

मेटाडोर आई। शव अपनी यात्रा के लिए तैयार था, मगर अब मुखाग्नि की समस्या और उठ खड़ी हुई। मुखाग्नि कौन देगा? यह एक बड़ा सवाल था। मास्टर साहब का कोई बेटा तो था नहीं और अपने गाँव-घर से उनका कोई संबंध भी नहीं था, सो वहाँ से कोई आया ही नहीं था। ऐसे में मुखाग्नि का सवाल बहुत विकट था। फिर सलाह हुई। लोगों ने तय किया कि मुखाग्नि शर्माजी से दिला दी जाए। वे ब्राह्मण हैं उम्र में भी बेटे जैसे ही हैं। पंडितजी भी सहमत थे। सरमाजी उनके...

पंडितजी की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि ''नहीं!'' अब तक चुप रहीं काकी दाई की आवाज अचानक घर से निकलकर द्वार तक फैल गई थी। अब वे देहरी के बाहर आ गई थीं। उनका वह एक शब्द सबके कानों में गूँज उठा था। मैंने आज तक उन्हें कभी इतनी तेज आवाज में बोलते नहीं सुना था। लोग चकित थे और नाराज भी। यह पुरुषों का क्षेत्र था। यहाँ एक औरत की दखलंदाजी नागवार गुजरी थी।

''केतकी देही आगी। कौन कहता है उनका कोई नहीं है? केतकी हय न। उंखर अंस। उंखर बेटी।'' कहते हुए उनके चेहरे पर दृढ़ता थी।

पंडितजी पहले तो अचकचाए, ''अइसा कइसे होगा?'' और उन्हें समझाने लगे, ''देखो मास्टरिन, ये कोई फिल्म नहीं है, जहाँ नारी स्वतंत्रता की खातिर कहानी बनाई जाती है। ये जिंदगी है, गाँव-गंवई की जिंदगी, जहाँ समाज...''

''कइसन समाज? ये ही जिसमें आज एक आदमी के मउत-माटी बर चार कांधा तक नई जुटा? येही समाज जेमा बेटी के कोई गिनतिच नई है। कोई भी आगी दे सक थे, फेर बेटी नहीं। काहे?''

''क्योंकि बेटी परगोतिया (दूसरे गोत्र) होती है। हाँ, दमाद होता तो चल जाता। इतनी समझदार तो आप भी हैं न!'' पंडितजी ने अपना पक्ष तो रखा।

''ज् एकदन सही। बेटी परगोतिया होती है अउ दमाद? वो? मगर वह चल जाता है। अउ वो भी नई हो एतो कोई भी चलेगा, फेर बेटी? बेटी नई चलेगी! वाह रे तुम्हारा समाज! फेर मेरे को ये मंजूर नई।'' उन्होंने सोचा। कहना भी चाहा; मगर... ''महाराज, मुखाग्नि त केतकी ही देगी। ये इसका फरज है अउ हक भी।'' कहते हुए उनकी आवाज में ठहराव था। पंडित जी कुछ देर तक तो खड़े रहे फिर-

''ठीक है! मैं इस अधर्म में साथ नहीं दूँगा।'' कहा और लोगों की और देखा और फिर अपना थैला उठाकर चले गए।

उनके पीछे-पीछे बाकी लोग भी चले गए। अब हर द्वार, हर गली और हर नुक्कड़ पर बस एक ही बात थी, ''ऐसा अधर्म? सच में कलजुग आ गया है।''

मास्टरजी का द्वार सूना हो गया था। अर्थी सामने पड़ी थी। सब चिंतित थे, मगर काकी दाई वैसी दृढ़। उनके चेहरे पर कोई विचलन नहीं था। क्या ये वही काकी दाई हैं जिनकी दुनिया रसोई घर तक सीमित थी और आज बड़ा फैसला, वह भी इतनी दृढ़ता के साथ! आश्चर्य में डूबी मैं उनके इस रूप को देख रही थी। अब द्वार पर हम लोग ही बचे थे। शर्माजी और उनके साथी अभी भी हमारे साथ थे, ''आप फिक्र मत कीजिए। मैं द्वार पर मेटाडोर ले आता हूँ।'' कहते हुए वे चलने लगे

''नहीं ! मेटाडोर नईं लगेगा।'' काकी दाई की ये बात सुन शर्मा जी ठिठक गए। उन्होंने कुछ कहा तो नहीं, मगर उनकी आँखों में सवाल उभर आए थे। वे कुल तीन लोग ही थे और शव के लिए चार...

''मय हंव न बेटा। ओमन जिनगी भर मेरा बोझा उठाइन। आज मोर पारी हे'', कह कर वे आगे बढ़ीं।

''काकी दाई आप! आपकी ऐसी हालत नहीं है कि... मैं हूँ न। मैं दूँगी कंधा'' कहती मैं अर्थी की और बढ़ी तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया।

''आज मेरे को मेरा फरज निभाने दे''। और वे अर्थी की और बढ़ गई।

मैं देख रही थी उन्हें और उनकी दृढ़ता को। वहाँ कोई वाद नहीं, कोई विमर्श भी नहीं था। शर्माजी और उनके साथी पल भर को भौचक देखते रहे। फिर वे उनके साथ हो लिए। अर्थी उठी, मगर मेटाडोर पर नहीं। चार कंधों पर और उन कंधों में एक कंधा उसका था जिसके संग सात फेरे लिए थे और बंध गए थे एक रेशमी से। उसी डोर बंधी वे बढ़ चली थीं मंजिल की ओर।

सूचना

'भारतीय रेल' पत्रिका में लेखक के नाम के साथ प्रकाशित हुए लेख (फोटोग्राफ के साथ) लेखक द्वारा उपलब्ध करवाए जाते हैं। भविष्य में लेख तथा फोटोग्राफ्स से संबंधित कॉपी राइट्स के उल्लंघन तथा अन्य किसी भी प्रकार के विवाद के लिए लेखक संपूर्ण रूप से जिम्मेदार होगा। रेल मंत्रालय या संपादकीय टीम किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी। – *संपादक*



रेल यात्रा के दौरान किसी भी मदद या सहायता के लिए डायल करें रेल मदद हेल्पलाइन 139

बृज रस से विभोर कर देने वाले रसिका पागल

श्री सुरेन्द्र अग्निहोत्री

''करुणामयी कृपामयी मेरी दयामयी राधे...'' अपनी अलमस्त गायकी से बृज रस से विभोर कर रसिक रस का अमृत पान कराने वाले हरीदासीय सम्प्रदाय के प्रख्यात भजन गायक बाबा रसिका पागल का 55 वर्ष की उम्र में बीते वर्ष वृंदावन के रामकृष्ण मिशन अस्पताल में गोलोकवास हो गया। बाबा रसिका पागल किडनी और शुगर की समस्या से जूझ रहे थे। अर्थ को खोजते हुए शब्दों के गायक रसिका पागल जीवन को लेकर ही नहीं गायकी को लेकर भी दृष्टि बहुत निर्भ्रान्त है। उन्हें जरूरी और गैरजरूरी में फर्क करना और गैरजरूरी से परहेज करना आता है। सूरज-सी आस्था के दिनों में भी वे यह समझते और समझाते थे कि जैसी जीवन की वैसी ही बहुत-सी दिक्कतें विशेषण के पीछे भागते रहने से पैदा होती हैं। महत्त्व विशेष्य का होता है, विशेषण का नहीं। पीला मकान में 'पीला' गौण है। मुख्य तो मकान है। मकान न रहे, सिर्फ पीला ही रह जाए तो उसमें रहना भला कैसे होगा? श्रोता की दरकार नहीं है। दरअसल वह तो भगवान बांके बिहारी के लिए स्वामी हरिदास जी के भजन गाते थे। अनगिनत रंगों से सजा यह जीवन किसी धनक सरीखा है! ऐसा धनक जिसने आसमानी अस्तित्व की गहराई में डूबते-उतरते शब्दों को अपने सुरों से सजा कर ब्रज रस माधुरी को दुनिया भर में फैलाया है। श्री रसिका पागलजी ने शास्त्रीय संगीत की विधिवत् कोई शिक्षा नहीं ली थी अपितु 'करत-करत अभ्यास त जड़मति होत सुजान की' परंपरा के वाहक रसिका पागल ने देश-दुनिया में सुर्खियां बटोरीं। आंख की कोर को गीला कर चिड़िया की मुस्कुराहट की तरह अस्तित्व को विराट् तत्व में समाने से पहले अपनी गायकी की डोर चित्र-विचित्र को सौंप दी थी।

'रसिका पागल' का क्या अर्थ है?

'रसिका पागल' शब्द का मतलब होता है जो बिहारी के प्रेम रस में डूबा रहे और उनके रस को पा ले, वह पागल है।

पागल शब्द का उल्टा होता है- 'लग पा'। मतलब पहले लग, फिर पा।

आसान शब्दों में कहें तो पहले नौकरी पर लग, फिर वेतन पा।

इसी प्रकार पहले भक्ति में लग, फिर भगवान को पा।

यह पूरी दुनिया ही पागलखाना है, क्योंकि हर कोई कुछ न कुछ पाने में लगा हुआ है। कोई धन पाने में लगा हुआ है, कोई इज्जत पाने में लगा हुआ है तो कोई नाम यश पाने में लगा हुआ है। लेकिन सच्चा पागल वही है, जो बिहारीजी के प्रेम रस में डूबा है और उनके रस को पाने में लगा हुआ है।

पागल बाबा कहते हैं कि अगर पागलपन में जरा भी होशियारीपन आ गया, तो ठाकुर जी उससे दूर होते चले जाते हैं, क्योंकि भक्ति का रंग ऐसा ही है, जो भक्तों को बावरा और पागल बना देता है, पर शर्त यह है कि भक्ति सच्ची होनी चाहिए।

बाबा रसिका पागल का जन्म 1 जनवरी, 1967 को वृंदावन में हुआ था। बचपन का नाम 'गुड्डा' था। बचपन से गायन और ढोलक बजाने का शौक था। तीन भाई और दो बहनों में तीसरे नम्बर के बाबा अपनी ही मस्ती में रहते और रिक्शा चलाते थे। शाम को जब बांके बिहारी मंदिर में शयन आरती होती तो वह बिहारीजी को अपने पदों को गाकर रिझाते (आराधना) थे। रिक्शा चलाने वाले बाबा रसिक दास भजनों को सुनाकर बिहारी की भक्ति में रसिका पागल बन गए। ब्रज के रसिक भक्त समाज के लिए बाबा रसिका पागल एक ऐसा नाम था, जिसने भक्ति संगीत को नई दिशा दी। बाबा की अलमस्त गायकी का जादू भक्तों के दिलों पर ऐसा छाया सब दीवाने हो गए। गायकी बाबा के जीवन का हिस्सा बन चुकी थी।

बाबा ने स्वामी हरिदास परम्परा में आचार्य संत गोविंद शरण शास्त्री से दीक्षा ग्रहण की। मंदिर में गायन करते समय ही म्यूजिक कम्पनी 'टी-सीरीज' के एक अधिकारी ने गायन सुना और अपनी कम्पनी के लिए गाने का अनुरोध किया। इसके बाद बाबा की गायकी दुनिया के सामने आई। बाबा रसिका पागल ने भजन गायन की दुनिया में 1996 में कदम रखा। उनकी सबसे पहली अलबम 'कान्हा रे कान्हा' है। इसके बाद बाबा ने हजारों भजन गाए। बाबा का भजन कजरारे तेरे मोटे-मोटे नैन नजर तोहे लग न जाए, बहुत प्रसिद्ध हुआ। बाबा रसिका पागल के भजनों के न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लोग दीवाने हैं। बाबा के भक्त चमन प्रकाश नागर ने बताया कि बाबा जब भजन गायन करने जाते थे तो वह रचनाओं को पहले से तैयार नहीं करते थे। दिन में रिक्शा चलाने के बाद शाम को शयन आरती से पहले ठा. बांकेबिहारी मंदिर में लगी रेलिंग के सहारे खड़े होकर प्रतिदिन शाम को रसखान के सवैया सुनाते थे। जब कुछ श्रद्धालुओं ने बाबा को भजन के एवज में पैसे देना शुरू किया, तो उनका मंदिर में विरोध शुरू हो गया। बस, यहीं से बाबा के जीवन में नया मोड़ आया और उन्होंने पैसे को छूना बंद कर दिया और साधु बन गए। गुरु भक्ति में लीन रहने वाले रसिक दास जब अचानक भजन गाने लग जाते तो उनके गुरु ने उनका नाम रसिक दास से 'रसिका पागल' कर दिया।

रसिका पागल के गाए कुछ प्रसिद्ध भजन-

- करुणामयी कृपामयी मेरी दयामयी राधे...।
- चलो जी चलो जी चलो वृंदावन।
- कान्हा की दीवानी बन जाऊंगी।
- मेरे कान्हा पे टोना कर गई..।
- झूला झूलें श्यामा प्यारी..।
- मीरा दीवानी हो गई, मीरा मस्तानी हो गई...।
- श्यामा प्यारी श्री कुंज बिहारी प्यारी की, जय-जय श्री हरिदास दुलारी..।

मैसूर

मैसूर महल

श्री अनिल सक्सेना



मैसूर कर्नाटक राज्य का दूसरा प्रमुख शहर है और इसे भारत के 476 शहरों में सबसे स्वच्छ शहर के रूप में मान्यता प्राप्त है। 128.42 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है और यह शहर चामुंडी पहाड़ियों की घाटी में स्थित है। मैसूर कर्नाटक राज्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र है। यह जगह भारत के महल शहर के रूप में प्रसिद्ध है और इसे एक विरासत शहर के रूप में घोषित किया गया है। शहर में स्थित अंबा विला पैलेस (जिसे मैसूर पैलेस के नाम से जाना जाता है) भारत में मुख्य रूप से देखे जाने वाले स्मारकों में से एक है। प्रमुख पर्यटन स्थलों में मैसूर पैलेस, चामुंडी पहाड़ियां, मैसूर चिड़ियाघर, सेंट फिलोमेना चर्च, रेल संग्रहालय, मैसूर रेत मूर्तिकला संग्रहालय, जगनमोहन पैलेस, करंजी झील और पार्क, सुका वन, कुकरहल्ली झील, ललिता महल पैलेस, मोम-संग्रहालय-मेलोडी पार्क, रंगनाथिट्टू पक्षी अभयारण्य, वृंदावन उद्यान (केआरएस), नंजनगुड मंदिर, शिवनासमुद्र जलप्रपात आदि शामिल हैं।

मैसूर की स्वच्छ आबोहवा और गतिविधियों के साथ यह जगह हर किसी के लिए छुट्टी या सप्ताहांत में घूमने के लिए एक आदर्श स्थान है। कला, वास्तुकला और इतिहास में समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ मैसूर का भव्य शहर आपको एक अलग तरह का अनुभव प्रदान करता है जो आपकी यात्रा को एक यादगार छुट्टी में बदल देगा। यहां उन प्रमुख जगहों की एक संक्षिप्त सूची दी गई है जो आपको मैसूर यात्रा के दौरान अवश्य देखनी चाहिए।

मैसूर पैलेस

यह शाही निवास देश के सबसे प्रसिद्ध स्थलों में से एक है और इसे 'अंबा विलास पैलेस' के नाम से भी जाना जाता है। अपने भव्य शाही अंदरूनी हिस्सों से लेकर इसकी शानदार इंडो-सरसेनिक वास्तुकला तक, यह भव्य महल जो कुछ भी दिखता है, वह इस बात का एक शानदार उदाहरण है कि मैसूर महलों के शहर के रूप में प्रसिद्ध क्यों है। इस जगह के समृद्ध इतिहास और वास्तुकला से चकित और प्रेरित होने के लिए तैयार रहें।

इंडो-सरसेनिक शैली में निर्मित शानदार मैसूर पैलेस, जिसे 'अंबा विलास' के नाम से भी जाना जाता है, वाडियार राजवंश का आधिकारिक निवास और मैसूर साम्राज्य का आधार है। इसके उत्कृष्ट आंतरिक भाग जो नक्काशीदार महोगनी छत, रंगीन कांच, सोने के पानी चढ़े खंभे और चमकती हुई टाइलों से सजे हुए हैं, राजसी गौरव और भव्यता का प्रतीक हैं। 97,000 रोशनियों से जगमगाता यह महल रविवार और सार्वजनिक छुट्टियों के दिन शाम के समय एक शानदार नजारे में बदल जाता है। यह यकीनन भारत में सबसे अधिक देखा जाने वाला महल है।

इतिहास: मैसूर पैलेस का निर्माण 14वीं शताब्दी की शुरुआत में वाडियार के शाही परिवार द्वारा किया गया था। मैसूर महल मूल रूप से लकड़ी से बनाया गया था और एक बार बिजली गिरने से (1638 ईसवी में), एक बार टीपू सुल्तान के हमले से (1739 ईसवी में) और एक बार फिर 1897 ईसवी में आग से नष्ट हो गया था। वर्तमान मैसूर पैलेस चौथा पुनर्निर्माण है, जिसे 1912 में पूरा किया गया था और

इसे ब्रिटिश वास्तुकार हेनरी इरविन द्वारा डिजाइन किया गया था।

चामुंडेश्वरी मंदिर

मैसूर के मुकुट में एक मूल्यवान रत्न के रूप में यह धार्मिक केंद्र तीर्थयात्रियों और पर्यटकों, दोनों को अपनी कलात्मक वास्तुकला के कारण आकर्षित करता है। श्री चामुंडेश्वरी मंदिर चामुंडी पहाड़ियों के शीर्ष पर स्थित है और विस्मयकारी देवी दुर्गा के एक उग्र रूप को चित्रित करता है।

चामुंडेश्वरी मंदिर चामुंडी पहाड़ी की चोटी पर स्थित है जो समुद्र तल से लगभग 3,489 फीट है और मैसूर से 13 किमी की दूरी पर स्थित है। मंदिर माता श्री चामुंडेश्वरी को समर्पित है, जो मैसूर शाही परिवार की कुल देवी हैं, इन्हें भैंस के सिर वाले राक्षस महिषासुर को मारने के लिए 'महिषासुर मर्दिनी' के रूप में भी वर्णित किया गया है। कृष्णराज वाडियार III ने सोने के कलश के साथ एक गोपुर का निर्माण करवाया और उनकी और उनकी तीन रानियों की मूर्तियां स्थापित कीं। 1827 में कृष्णराज वाडियार III ने त्योहारों और जुलूसों की व्यवस्था की और 1843 में सिंहवाहन को उपहार स्वरूप भेंट दिया।

नारायण स्वामी और महाबलेश्वर को समर्पित दो अन्य मंदिर हैं। श्री महाबलेश्वर मंदिर होयसल शासन की शुरुआत से पहले बनाया गया था। पुरालेखीय साक्ष्य इस क्षेत्र को मभला या मबाला तीर्थ के रूप में दर्शाते हैं कि राजा विष्णुवर्धन ने 1128 ई. में इस मंदिर को दान दिया था।

नंदी : यहां स्थित विशाल नंदी भारत में सबसे बड़े नंदी में से एक है, जो आगे से 16 फीट (4.8 मीटर) और पीछे से 25 फीट (7.5 मीटर) लंबा है। इसके गले में लटकी हुई शानदार घंटी अति सुंदर है। इस विशाल बैल का निर्माण डोड्डादेवराज ने कराया था।

मैसूर रेल संग्रहालय

1976 में स्थापित, मैसूर रेल संग्रहालय भारत का दूसरा रेलवे संग्रहालय है (पहला दिल्ली में है)। रेलवे के विकास को दर्शाने वाले कई प्रदर्शनों के साथ, रेल संग्रहालय युवाओं को रेलवे से परिचित कराने और रेलवे नेटवर्क में उपयोग की जाने वाली प्रणालियों और नियंत्रणों के बारे में अधिक जानने के लिए एक आदर्श स्थान है।

प्रिंसेस रोड (सीएफटीआरआई के मुख्य द्वार के सामने) पर स्थित, इसे 1979 में पीएम जोसेफ के प्रयासों से शुरू किया गया था। इस संग्रहालय में भारतीय रेल के विकास को प्रस्तुत करने वाले ग्राफिक्स, तस्वीरों और चित्रों का प्रदर्शन किया गया है। संग्रहालय के श्रीरंगा मंटपा खंड में शाही ट्रेन के डिब्बे जिसका उपयोग मैसूर के राजाओं और रानियों द्वारा किया जाता था, पुराने श्रीरंगपटना रेलवे स्टेशन से एक स्तंभ और एक तार का बाड़ जोकि पुराने समय में इस्तेमाल किया जाता था, को प्रदर्शित किया गया है। यहां कुछ पुराने भाप इंजन भी प्रदर्शित हैं।

मैसूर स्थित रेलवे संग्रहालय में पुराने इंजनों की एक बाहरी प्रदर्शनी है। यह 1979 में भारतीय रेल द्वारा स्थापित किया गया था और दिल्ली में राष्ट्रीय रेलवे संग्रहालय के बाद यह दूसरा ऐसा संग्रहालय है। संग्रहालय कृष्णराज सागर रोड पर केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी और अनुसंधान संस्थान के सामने स्थित है। लोकोमोटिव के अलावा इसमें भारत में रेलवे के विकास को दर्शाने वाली तस्वीरों और चित्रों की एक गैलरी है। रेलवे सिग्नल और लाइट भी प्रदर्शित किए गए हैं। संग्रहालय में बच्चों के लिए बैटरी से चलने वाली मिनी ट्रेन भी है जो संग्रहालय के मैदान में एक छोटी-सी सवारी कराती है।

प्रमुख प्रदर्शन

- **ऑस्टिन रेल मोटर कार :** 1925 की ऑस्टिन कार में रेल के पहिये लगे हैं और निरीक्षण कार के रूप में उपयोग की जाती है।
- वैगनॉल एंड कंपनी 119 ई स्टीम इंजन
- शिवमोग्गा और तलगुप्पा के बीच चलाई जा रही मीटर गेज बस रेल
    - मैसूर के महाराजा द्वारा उपयोग किए जाने वाले शाही कोच
    - टेल्को द्वारा निर्मित 1963 वाईपी-2511 मीटर गेज स्टीम इंजन



चामुंडेश्वरी मंदिर


मैसूर रेल संग्रहालय

- नैरो गेज और मीटर गेज कोच
- महारानी सैलून-शयन कक्ष, रसोई और डाइनिंग कार के साथ शाही कोच
- 1885 एमजी हैंड क्रेन
- रेलवे से संबंधित सिग्नलिंग सिस्टम, पेंटिंग और अन्य कलाकृतियां

रेल संग्रहालय में बच्चों के लिए बैटरी से चलने वाली टॉय ट्रेन है,

रेल संग्रहालय जाने का समय : रेल संग्रहालय सोमवार को छोड़कर सभी दिनों में सुबह 9.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक खुला रहता है। बंद होने के समय से एक घंटे पहले टिकटों की बिक्री बंद हो जाती है।

रेल संग्रहालय कैसे पहुंचें : मैसूर बेंगलुरू (150 किलोमीटर दूर) से हवाई, सड़क और रेल द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। रेल संग्रहालय मैसूर रेलवे स्टेशन परिसर के अंदर है, कृष्णा राजा सागर रोड के माध्यम से यहां पहुंचा जा सकता है।

सेंट फिलोमेना चर्च

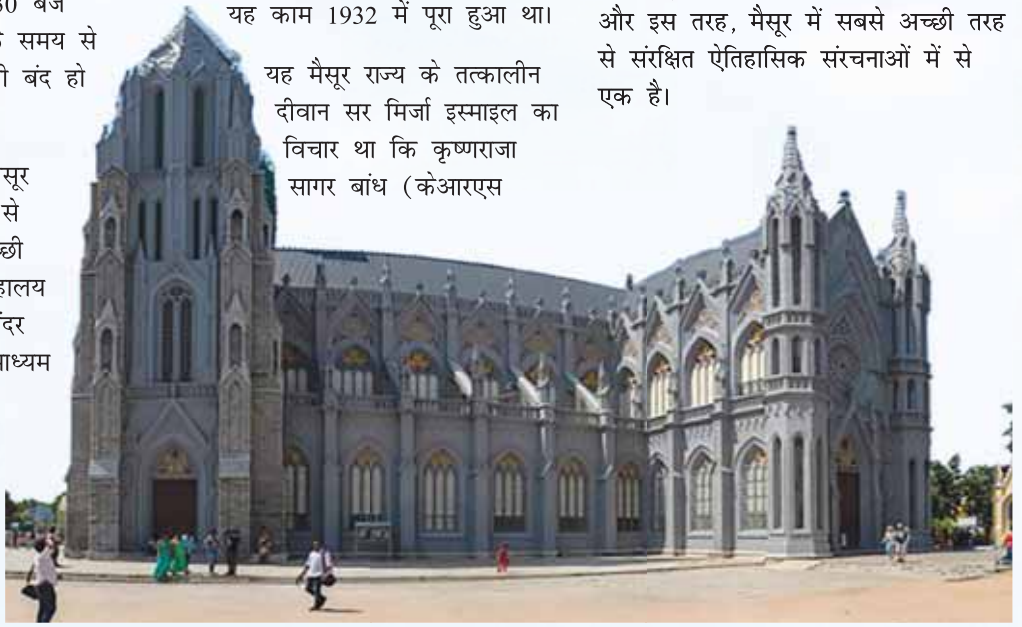
1804 में खास गॉथिक शैली में निर्मित यह चर्च देश के सबसे भव्य चर्चों में से एक है। इसमें सेंट फिलोमेना की एक मूर्ति के साथ एक मुख्य हॉल है और इसकी बाहरी सजावट देखने लायक है। संरचना में 175 फीट (52.50 मीटर) उंची जुड़वां मीनारें, रंगीन कांच की खिड़कियां, कोरिंथियन कॉलम और प्लास्टर की हुई वेदी है, जो अत्यधिक सजावटी हैं।

वृंदावन गार्डन

कृष्ण राजा सागर बांध के परिसर में मुख्य रूप से एक टैरेस गार्डन, वृंदावन गार्डन बनाया गया है। इन उद्यानों का निर्माण वर्ष 1927 में शुरू हुआ, जब बागवानी विभाग ने काम शुरू किया। कहा जाता है कि यह काम 1932 में पूरा हुआ था।

यह मैसूर राज्य के तत्कालीन दीवान सर मिर्जा इस्माइल का विचार था कि कृष्णराजा सागर बांध (केआरएस बांध) के आसपास के क्षेत्र को सजाया जाए, जो मांड्या जिले के श्रीरंगपटना ताल्लुका में स्थित है। कृष्णराजा वाडेयार पट के नाम पर बना यह बांध कावेरी नदी पर बनाया गया है, जो दक्षिण भारत की प्रमुख नदियों में से एक है। वृंदावन गार्डन को कश्मीर के शालीमार गार्डन से प्रेरणा लेकर डिजाइन किया गया है, जिन्हें प्राचीन मुगल शैली में बनाया गया है। इसलिए यह भव्यता और सुंदरता भी बिखेरता है, जिसमें फव्वारे, छतों, जल चैनलों, वाटिका, लॉन और फूलों की एक विस्तृत श्रृंखला आदि शामिल हैं।

सोमनाथपुर मंदिर एक उत्कृष्ट शाही विरासत है, जिसे मैसूर में 1268 में बनाया गया था। भगवान केशव, जो व्यापक रूप से पूजे जाने वाले भगवान कृष्ण के अवतार हैं, के भगत अक्सर यहां प्रार्थना और ध्यान के लिए आते हैं। राजा नरसिंह III के शासनकाल में होयसल सेनापति सोमनाथ ने अपने कार्यकाल के दौरान इस मंदिर और कई अन्य मंदिरों का निर्माण करवाया। सोमनाथपुर मंदिर मूल संग्रह में से मौजूद एक मात्र मंदिर है जो खड़ा है, और इस तरह, मैसूर में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित ऐतिहासिक संरचनाओं में से एक है।


संत फिलोमिना चर्च


सोमनाथपुर मंदिर

जगनमोहन पैलेस

यह 1861 में मुम्मदी कृष्णराजा वाडियार द्वारा पारंपरिक हिंदू स्थापत्य शैली में निर्मित एक महल है। इस महल की सबसे खास विशेषता इसकी बेहतरीन नक्काशी है जो पूरी संरचना को सुशोभित करती है। महल के प्रवेश द्वार पर ही आगंतुक रचनात्मक उत्कृष्टता से मंत्रमुग्ध हो जाएंगे। महल के मुख्य द्वार के दोनों ओर उत्कृष्ट नक्काशी की गई है। नक्काशी भगवान विष्णु के दस अवतारों से संबंधित है।

इसके मेहराब धार्मिक महत्व की उत्कृष्ट नक्काशी जैसे लघु मंदिर और हिंदू धर्म से संबंधित रूपांकनों को प्रदर्शित करते हैं। दूसरी ओर, जगनमोहन पैलेस की दीवारों पर लुभावनी नक्काशी शाही इतिहास, मैसूर शाही परिवार के वंश के साथ-साथ मैसूर दशहरा पर भित्ति चित्रों को प्रदर्शित करती है।

प्रसिद्ध मैसूर डोसा और मैसूर पाक का स्वाद लें

मैसूर मसाला डोसा राज्य के मुख्य व्यंजनों में से एक है। डोसे की फिलिंग पर फैला हुआ विशेष लाल मसाला मिश्रण स्वाद को बढ़ाता है और इसे आपके पारंपरिक डोसे से अलग बनाता है। यह कुरकुरा होने पर सबसे अच्छा लगता है और इसे नारियल की चटनी, सांबर और घी के साथ परोसा जाता है! इसके साथ ही जबरदस्त स्वादिष्ट मैसूर पाक, सबसे प्रसिद्ध और मुंह में पानी लाने वाली मिठाई में से एक है। यह मिठाई चीनी, घी और बेसन का एक अनोखा मिश्रण है और इसे पहली बार राजा वाडियार चतुर्थ के समय मैसूर पैलेस के शाही रसोई में बनाया गया था।

कर्नाटक व्यंजन में एक प्रतिष्ठित व्यंजन के रूप में यह व्यंजन एक प्रमुख पसंदीदा व्यंजन है। इसलिए अगली बार जब आप मैसूर आएं तो मैसूर पाक का स्वाद लेना न भूलें।

मैसूर कैसे पहुंचें

सड़क मार्ग से : बेंगलुरु - 140 किमी। केएसआरटीसी और निजी ऑपरेटरों की राज्य और देश के सभी महत्वपूर्ण हिस्सों में नियमित सेवाएं हैं।

रेल मार्ग से : मैसूर कई यात्री और एक्सप्रेस ट्रेनों के साथ बेंगलुरु, चेन्नई और अन्य शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। शहर बेंगलुरु से केवल 3 घंटे की दूरी पर है।

हवाई मार्ग से : मैसूर हवाई अड्डा - 10 किमी, बेंगलुरु-140 किमी।
केएसआरटीसी बेंगलुरु एयरपोर्ट से मैसूर के लिए 'फ्लाईबस एयरपोर्ट सेवा' चलाता है।


मैसूर जगमोहन पैलेस

फिल्म इत्तेफ़ाक़ के बनने का इत्तेफ़ाक़

श्री रूप कृष्ण आहूजा

हमारे देश में बनने वाली फिल्मों में से कुछेक ऐसी फिल्मों ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है, जिनमें न तो ढेर सारे लोकप्रिय फिल्मी सितारों का हुजूम था और न ही कर्णप्रिय गीत-संगीत। बेहद सीमित बजट और कुछेक दिनों में बन कर तैयार होने वाली ऐसी ही एक फिल्म थी 'इत्तेफ़ाक़', जो बी.आर. फिल्म्स के बैनर तले बनी थी। इसके बनने का अफसाना भी कोई कम दिलचस्प नहीं।



यह वर्ष 1969 की बात है जब निर्माता-निर्देशक बी.आर. चोपड़ा की एक बड़े बजट की फिल्म 'आदमी और इनसान' बन रही थी। अभी यह फिल्म अपने अन्तिम चरण में थी कि फिल्म की नायिका सायरा बानो को उपचार के सिलसिले में अचानक लन्दन जाना पड़ा। फिल्म की पूरी यूनिट के पास उनके लौट आने की प्रतीक्षा करने के अलावा कोई चारा न था। इसी दौरान इस फिल्म बैनर से जुड़े एक व्यक्ति ने बी.आर. तथा उनके भाई यश चोपड़ा को एक गुजराती नाटक 'घुम्मस', जोकि एक फ्रेंच नाटक 'लैम्प पोस्ट टू मर्डर' पर आधारित था, देख आने की सलाह दी। दोनों को यह नाटक बेहद पसन्द आया और उन्होंने इस पर एक ऐसी फिल्म बनाने का निर्णय लिया जिसमें न तो एक भी गीत होगा, न ही मध्यांतर। हालाँकि कुछ वर्ष पूर्व बी.आर. चोपड़ा ऐसी ही गीतविहीन एक फिल्म 'कानून' बना चुके थे।

उन्होंने महज 8 दिन में इसकी कथा-पटकथा व संवाद तैयार करवाए और फिर 28 दिनों के अन्तराल में यह फिल्म बन कर रिलीज भी हो गई। काबिले गौर है कि यह अन्तराल सायरा बानो की प्रतीक्षा में खराब होना तय था। निर्देशक यश चोपड़ा इस फिल्म के नायक की भूमिका के लिए अभिनेता शशि कपूर को लेना चाहते थे, लेकिन शशि कपूर की अति व्यस्तता के कारण बात नहीं बनी। फिर उन्होंने इस रोल के लिए अभिनेता राजेश खन्ना को साइन किया, जो हाल ही में रिलीज अपनी फिल्मों 'आराधना', 'खामोशी' व 'बन्धन' के कारण फिल्मोद्योग में अपनी पहचान स्थापित कर चुके थे। उक्त सभी फिल्में वर्ष 1969 में ही रिलीज हुई थीं।

नायक का चयन हो चुकने के बाद यश चोपड़ा को नायिका की भूमिका के लिए ऐक ऐसी अभिनेत्री की तलाश थी जो फिल्मी पर्दे पर बेहद मासूम नजर आए। हालांकि यह भूमिका एक नकारात्मक शेड लिए हुए एक हत्यारिन की थी। इस सम्बन्ध में उन्होंने फिल्मोद्योग में नई-नई आई अभिनेत्री राखी से बात की, मगर राजश्री प्रोडक्शंस के साथ किए गए अनुबन्ध के कारण वह उनकी फिल्म 'जीवन मृत्यु' पूरी होने से पहले वह किसी अन्य फिल्म में काम नहीं कर सकती थीं। ऐसे में यश को अभिनेत्री नन्दा का नाम सूझा जिनके साथ वह कुछ वर्ष पूर्व फिल्म 'धूल का फूल' बना चुके थे। पूरी फिल्म परेल स्थित राजकमल स्टूडियो में फिल्माई गई। गौरतलब है कि फिल्म में पार्श्व संगीत का का काम फिल्म के पूरा हो चुकने के बाद ही किया जाता है, लेकिन संगीतकार सलिल चौधरी फिल्म निर्माण के साथ-साथ फिल्म का पार्श्व संगीत भी तैयार करते रहे। बताते चलें कि रहस्य-रोमांच वाली किसी भी फिल्म में पार्श्व संगीत का योगदान बेहद महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि कैमरे के अलावा सिर्फ इसके द्वारा ही फिल्म के दृश्यों में जान डाली जाती है व प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।

फिल्म की कहानी एक चित्रकार दिलीप रॉय (राजेश खन्ना) पर केन्द्रित है जो अपनी पत्नी की हत्या करने के जुर्म में पागलखाने से पुलिस की हिरासत से भागा हुआ है। पुलिस उसका पीछा कर रही है। छुपने की जगह ढूँढ़ने के क्रम में वह भागते-भागते रेखा (नन्दा) के घर में घुस

जाता है जो उस समय रेडियो से प्रसारित हो रहे एक कातिल के पुलिस हिरासत से फरार हो जाने का समाचार सुन रही है। दिलीप उसे डरा-धमकाकर उसके घर में छिप जाता है। रेखा इस कदर डरी-सहमी हुई है कि वह इस दौरान घर में आई एक पड़ोसिन और गश्ती पुलिस पर दिलीप की उपस्थिति जाहिर नहीं करती। इसी दौरान दिलीप को घर के बाथरूम में रेखा के पति जगमोहन की लाश दिख जाती है जिसके बारे में रेखा बता चुकी थी कि वह कलकत्ता गया हुआ है। रेखा दिलीप पर अपने पति के खून का इलजाम लगा देती है। कई पेंचोखम के बाद यह सिद्ध हो जाता है कि यह हत्या रेखा ने ही एक पुलिस अधिकारी की मदद से की थी जो उस समय वहां मौजूद है। दूसरी तरफ यह भी जाहिर हो जाता है कि दिलीप रॉय ने अपनी पत्नी की हत्या नहीं की बल्कि उसकी साली (बिन्दु) ने की है।



कुल मिलाकर फिल्म का ताना-बाना इतनी दिलचस्पी से गढ़ा गया है कि दर्शक फिल्म देखते समय हिल भी नहीं सकता। मजे की बात यह भी है कि इस फिल्म से पहले जिन फिल्मों में अभिनेत्री नन्दा ने काम किया था, उनमें उनकी भूमिका पत्नी या बहन-बेटी की और रोने-धोने वाली होती थी। फिल्म के अन्तिम 20-25 मिनटों तक दर्शक पर असली कातिल कौन है, का रहस्य बना रहता है जो इस फिल्म का बेहद मजबूत पक्ष था।

गौरतलब है कि इस फिल्म के साथ-साथ रोजेश खन्ना अभिनीत फिल्म 'दो रास्ते' की शूटिंग भी चल रही थी। चूंकि फिल्म 'इत्तेफ़ाक़' में राजेश खन्ना के चेहरे पर दाढ़ी थी, इसीलिए फिम्म दो रास्ते के कई दृश्यों, विशेषकर गीत 'ये रेशमी जुल्फें' के फिल्मांकन में राजेश खन्ना का दाढ़ीनुमा चेहरा गज़र आता है।

फिल्म का प्रीमियर 10 अक्टूबर, 1969 को बम्बई के मराठा मन्दिर सिनेमा में हुआ जहाँ यह गीतविहीन, बेहद सीमित बजट वाली और केवल 28 दिनों में बनकर रिलीज हुई फिल्म लगातार 15 सप्ताहों तक चली। आज भी इतने वर्षों बाद सिने प्रेमियों में इसका क्रेज जस का तस बरकरार है।



नई भारतीय रेल का प्रतीक

भारतीय रेल में हो रहे परिवर्तन की झलक अब आपको रेल भवन (रेलवे बोर्ड) परिसर में भी दिखाई देगी। वर्तमान में पुराने भाप इंजन के स्थान पर अत्याधुनिक भारत के प्रतीक 'वंदे भारत एक्सप्रेस' का इंजन स्थापित किया गया है। साथ ही आसपास के परिसर को भी काफी मनोरम बना दिया गया है, जो लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है।

आप सबका
भारतीय रेल के साथ अटूट रिश्ता है

आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत,
लेख आदि हिन्दी या अंग्रेजी में हमें भेज सकते हैं।
चयनित रचनाओं को हम
रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

भारतीय रेल

में प्रकाशित करेंगे

लेख ई-मेल करें
editorbhartiyarailrb@gmail.com

- चयनित रचना की जानकारी ईमेल से दी जाएगी,
- प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा
- शर्तें लागू



भारतीय रेल

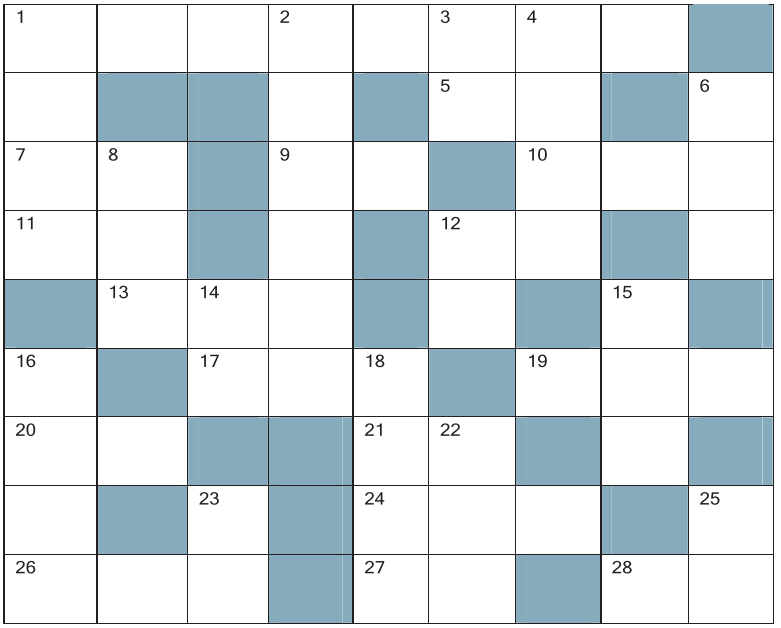
पत्रिका अब

राष्ट्रीय रेल संग्रहालय

चाणक्यपुरी, नई दिल्ली
में भी उपलब्ध है

शब्द पहेली

योगी



ऊपर से नीचे

1. राजा नल की पत्नी (4)
2. उच्च शिक्षा देने वाला कॉलेज (6)
3. लकीर, एक अभिनेत्री (2)
4. कान में पहना जाने वाला एक गहना (4)
6. साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु का उपन्यास मैला ....(3)
8. कारपेट, कालीन (3)
12. तन, देह (2)
14. जंगल (2)
15. कारण, वजह (3)
16. सबसे पहली मेट्रो सेवा इस शहर में शुरू हुई थी (4)
18. नकल करने वाला (4)
22. मुस्लिम साधु (3)
23. एक फिल्म - .... ने बना दी जोड़ी (2)
25. कर्ज, उधार (2)

बाएं से दाएं

1. हाल ही में इस क्षेत्रीय रेलवे में 'कवच' प्रणाली का परीक्षण किया गया (8)
5. चारपाई, खटिया (2)
7. युवा, जवान (इं.) (2)
9. जहर, हलाहल (2)
10. हाल ही में भारतीय रेल ने दस स्वचालित ट्रेन प्रणाली ..... का परीक्षण किया है (3)
11. दियासलाई की तूली (2)
12. श्रवणेन्द्रिय, कर्ण (2)
13. राइस, भात (3)
17. नेत्र, आँख (3)
19. महाराष्ट्र का एक शहर (3)
20. धन की देवी (2)
21. बलगम (2)
24. रेखा, खींची गई लाइन (3)
26. छोटा-सा जलाशय, ताल (3)
27. बौद्ध भिक्षुओं का पहनावा (2)
28. प्रतिज्ञा (2)

शब्द पहेली - मार्च अंक का हल

[1] अ	शि व	[2] नी	वै	ष्ण	[3] व			[4] ए
न		य			स्त्रा		[5] ल	क
[6] रि	श्व	त		[7] प	गा	र		ता
ज			[8] ती	त	र		[9] शा	न
र्ड		[10] क		वा		[11] ध	म	ग
[12] टि	[13] क	ट	घ	र		व		र
[14] क	ल	ह			[15] अ	ल	[16] का	
टिं		[17] ल	[18] ख	प	ति		उं	
[19] ग	ज		न्ना		[20] थि	ए	ट	र

अपना ज्ञान टटोलें

1 **रेलगाड़ी से जर्क फ्री यात्रा सुलभ कराने वाले एलएचबी (LHB) डिब्बों का फुल फॉर्म क्या है?**

(क) लिंके हॉफमैन बुस्क | (ख) लोवर हैवी बोगी | (ग) लो वेट बोगी | (घ) इनमें से कोई नहीं

2 **रेलवे एनएमजी (NMG) वैगनों के माध्यम से ऑटोमोबाइल का परिवहन करती है। यहां एनएमजी (NMG) का फुल फॉर्म क्या है?**

(क) न्यू मैन्डेटरी गुड्स (वैगन) | (ख) न्यू मॉडर्न गुड्स (वैगन) | (ग) न्यू मॉडिफाइड गुड्स (वैगन) | (घ) न्यू मैन्यूफैक्चरिंग गुड्स (वैगन)

3 **भारत का पहला परिवहन संबंधित शिक्षा पर केंद्रित विश्वविद्यालय एनआरटीआई (NRTI) है। इसमें एनआरटीआई (NRTI) का फुल फॉर्म क्या है?**

(क) नेशनल रेलवेज एंड ट्रांसपोर्टेशन इंस्टीट्यूट | (ख) नेशनल रोड एंड ट्रांसपोर्ट इंस्टीट्यूट | (ग) नेशनल रेल एंड ट्रांसफॉर्मेशन इंस्टीट्यूट | (घ) नेशनल रेल एंड ट्रांसपोर्ट इंस्टीट्यूट

4 **एक आरक्षित टिकट में कितने लोगों के लिए टिकट लिया जा सकता है?**

(क) 5 | (ख) 6 | (ग) 4 | (घ) 7

5 **किस तारीख को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा नई दिल्ली से वाराणसी के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई गई?**

(क) 14 फरवरी, 2019 | (ख) 16 फरवरी, 2019 | (ग) 12 फरवरी, 2019 | (घ) इनमें से कोई नहीं

6 **रेल यात्रा के लिए आप कितने दिन पहले आरक्षित टिकट बुक करवा सकते हैं?**

(क) 140 दिन | (ख) 120 दिन | (ग) 90 दिन | (घ) 70 दिन

7 **भारतीय रेल पर यूटीएस (UTS) का फुल फॉर्म क्या है?**

(क) अनरिजर्व्ड टिकटिंग सिस्टम | (ख) यूनिवर्सल ट्रैकिंग सिस्टम | (ग) यूनिवर्सल ट्रैवलिंग सिस्टम | (घ) यूनीलेट्रल ट्रैकिंग सिस्टम

8 **इनमें से किस प्रकार के कोच में हर बर्थ के लिए अलग एसी वेण्ट है?**

(क) 1 एसी कोच | (ख) 3 एसी कोच | (ग) 2 एसी कोच | (घ) 3 एसी इकोनॉमी कोच

9 **किस उत्पादन इकाई ने पहले विस्टाडोम कोच का निर्माण किया है?**

(क) चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना | (ख) इंटीग्रल कोच फैक्ट्री, पेराम्बूर | (ग) इंटीग्रल कोच फैक्ट्री, चेन्नई | (घ) रेल कोच फैक्ट्री (आरसीएफ), कपूरथला

10 **वर्तमान रेल मंत्री का नाम बताइए?**

(क) निर्मला सीतारमण | (ख) पीयूष गोयल | (ग) सुरेश प्रभु | (घ) अश्विनी वैष्णव

1. (ख) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग) 6. (घ) 7. (ख) 8. (ख) 9. (ग) 10. (ख)

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोय

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

विज़िट करें

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

क्यूआर कोड स्कैन करें

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	-
एक प्रति (विशेषांक)		70	-
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263
	दो वर्ष	460	483
	तीन वर्ष	675	709
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210
	दो वर्ष	370	389
	तीन वर्ष	540	567
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625

(वार्षिक सदस्यता शुल्क विशेषांक के साथ)

भुगतान का माध्यम

ऑनलाइन सदस्य www.irctctourism.com/IRBRMag पर सदस्यता शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।

ऑफलाइन डी.डी./चेक/म.ओ./पो.ओ./नगद देय - 'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली'

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला .....

राज्य ..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

रेल कर्मचारी : हाँ / नहीं वर्तमान सदस्यता (यदि हो तो) संख्या ..... तारीख .....

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलीफोन: 011-47845089, 45089 (रेलवे) **bmpr310rb@gmail.com**

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिकाएँ



भारतीय रेल
INDIAN RAILWAYS



की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें





या

विजिट करें : www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

पत्रिका की वार्षिक सदस्यता शुल्क तथा अन्य जानकारियों के लिए देखें

कवर पृष्ठ सं. नं. 74

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2021-22-2023
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

आई.एस.एस.एन. 2457-0001

HYT Engineering serving the railways since 1977
with indigenously manufactured machines

CUSTOMER SATISFACTION ABOVE ALL



Unique Propositions of HYT Services:

- Prompt and agile onsite service support
- Instant online and remote diagnostics
- Comprehensive services and increased machine availability
- Reduced lifecycle costing
- Objectivized and effective trainings for self-reliant machine users

hyt
HYT ENGINEERING CO. PVT. LTD.

Sales Office: 17-18, Ground Floor, Hans Bhawan, Bahadur Shah Zafar Marg,
I.T.O., New Delhi - 110 002, India. Phone: + 91 11 432 02200/01

Work: 29/10, 29/10/1, 29/10/2, D-II Block, MIDC, Chinchwad,
Pune - 411 019, India. Phone: + 91 20 6634 3900

www.hytengineering.com I info@hytwheellathes.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**